उ. प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

स्नातक पाठ्यक्रम

(मानविकी विद्याशाखा)

विश्वविद्यालय परिसर शान्तिपुरम् (सेक्टर–एफ),
फाफामऊ, इलाहाबाद – 211 013, उ.प्र.
www.uprtouallahabad.org.in

पाठ्यक्रम प्रकाशन समिति

डॉ. एच. सी. जायसवाल	(वरिष्ठ परामर्शदाता)	- संयोजक
श्री अच्छेलाल	(प्रवक्ता - संस्कृत)	- सदस्य
डॉ. ज्ञान प्रकाश यादव	(प्रवक्ता - प्रबन्ध शास्त्र)	- सदस्य
डॉ. राम प्रवेश राय	(प्रवक्ता - पत्रकारिता एवं जनसंचार)	- सदस्य
डॉ. दीप शिखा	(परामर्शदाता - राजनीतिशास्त्र)	- सदस्य
डॉ. स्मिता अग्रवाल	(परामर्शदाता - संस्कृत)	- सदस्य
श्री राजित राम यादव	(प्रवक्ता - कम्प्यूटर विज्ञान)	- सदस्य
श्री जितेन्द्र यादव	(परामर्शदाता - दर्शनशास्त्र)	- सदस्य

प्रस्तुति :

डॉ. (श्रीमती) रूचि बाजपेई	(प्रवक्ता - हिन्दी)

स्नातक पाठ्य-क्रम
मानविकी विद्याशाखा

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के मानविकी विद्याशाखा द्वारा निम्नलिखित स्नातक कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

कार्यक्रम

1- यू0जी0एस0टी0

2- यू0जी0ई0सी0

3- यू0जी0ई0एन0

4- बी0ए0 टेक्सटाइल डिजाइनिंग

5- बी0ए0 फैशन डिजाइनिंग

6- यू0जी0पी0एच0

7- यू0जी0एच0आई0

डॉ0 (बी0 एन0 सिंह)
निदेशक
मानविकी विद्याशाखा
उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मु0वि0वि0
इलाहाबाद

विषय सूची

कार्यक्रम		पृष्ठ संख्या
1- यू0जी0एस0टी0 (संस्कृत)	-	1 – 10
2- यू0जी0ई0सी0 (अर्थशास्त्र)	-	11 – 16
4- यू0जी0ई0एन0 (अंग्रेजी)	-	17 – 32
5- बी0ए0 टेक्सटाइल डिजाइनिंग	-	33 – 36
6- बी0ए0 फैशन डिजाइनिंग	-	37 – 55
7- यू0जी0पी0एच0 (दर्शन)	-	56 – 72
8- यू0जी0एच0आई0 (हिन्दी)	-	73 – 104

UGST- (संस्कृत)

UGST-01

अभिज्ञानशाकुन्तलम् – (सामान्य अध्ययन के लिए सम्पूर्ण, संस्कृत व्याख्या तथा हिन्दी अनुवाद के लिए चतुर्थ अङ्क पर्यन्त)

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

महाकवि कालिदास, अभिज्ञानशाकुन्तलम् (नाट्यकरण, नाटकत्व) नाट्य की महत्ता, वैशिष्ट्य तथा अभिज्ञानशाकुन्तल का वैशिष्टय, प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण, प्रथम अङ्क की व्याख्या।

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ अङ्क की व्याख्या।

नीतिशतकम्

भर्तृहरि का जीवन-वृत्त और कृतियाँ, श्लोकों पर टिप्पणियाँ, 1 से 15 श्लोकों तथा 16 से 30 तक श्लोकों की हिन्दी व्याख्या एवं अनुवाद एवं सामान्य प्रश्न।

UGST-02

उत्तररामचरितम् (तृतीय अङ्क पर्यन्त)

नाटक (उपयोगिता एवं स्वरूप, रमणीयता, उत्पत्ति), विशेषताएँ, मूल तत्व, नायक के प्रकार-लक्षण, प्रतिनायक, नायिका, रस तथा भाव, प्रेक्षागृह।

प्रथम अंक की व्याख्या।

द्वितीय अंक की व्याख्या।

तृतीय अंक की व्याख्या, सुभाषित वाक्य।

छन्दोऽलङ्कार

छन्द का सामान्य परिचय, गण-विचार, यति, वर्णिक छन्द, मात्रिक छन्द

प्रमुख छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण - अनुष्टुय या श्लोक, इन्द्रावज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, द्रुवविलम्बित, वंशस्थ, वसन्ततिलका, मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडित, स्नग्धरा, वियोगिनी, पुष्पिताग्रा, आर्या।

अलङ्कार का सामान्य परिचय- अलङ्कार की व्युत्पत्ति, साहित्यदर्पण के अनुसार अलङ्कार की परिभाषा, अलङ्कार का वर्गीकरण तथा भेद, आचार्य विश्वनाथ का परिचय, समय, रचनाएँ, साहित्यदर्पण का प्रतिपाद्य विषय, काव्य शास्त्र के सम्प्रदाय।

प्रमुख अलङ्कारों के लक्षण, उदाहरण और उनमें भेद, अलङ्कारों के लक्षण, उदाहरण- अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिश्योक्ति, सन्देह, भ्रान्तिमान, व्यतिरेक, प्रतिवस्तोपमा, दृष्टान्त, अर्थान्तरन्यास, तुल्योगिता, दीपक, विभावना, विशेषोक्ति, विरोध या विरोधाभास, परिसंख्या, निदर्शना।

UGST-03

कादम्बरी कथामुखम्

संस्कृत गद्य-साहित्य का उद्‌भव और विकास, संस्कृत गद्य-साहित्य का उद्‌भव और विकास, महाकवि बाणभट्ट : जीवन परिचय, स्थितिकाल एवं कर्तृत्व, कादम्बरी : कथानक एवं पात्र-परिचय (चरित्र-चित्रण) कादम्बरी-समीक्षा

कादम्बरी – कथामुखम्
वाचन एवं हिन्दी – अनुवाद, संस्कृत- व्याख्या एवं टिप्पणी।

सिद्धान्त कौमुदी (कारक प्रकरण)

प्रथमा और द्वितीया विभक्ति - कारक का सामान्य परिचय, प्रथमा विभक्ति, कर्मकारक-द्वितीया विभक्ति।

तृतीया तथा चतुर्थी विभक्ति - कर्ता-करण कारक तृतीया विभक्ति, सम्प्रदान कारक चतुर्थी विभक्ति।

पञ्चमी और षष्ठी विभक्ति - अपादान कारक – पञ्चमी विभक्ति, शेष षष्ठी, कारक-शेष षष्ठी विभक्ति।

अधिकरण कारक – सप्तमी विभक्ति - सामान्य अधिकरण कारक परिचय।

UGST-04

वैदिकमन्त्रचयनम्

वेद-चार वेद, चार ऋत्विक्, वेद त्रयी, वेद के विभाग-संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, संहिता ग्रन्थ-ऋग्वेद संहिता, यजुर्वेद संहिता, सामवेद संहिता, अथर्ववेद, ब्राह्मणग्रन्थ-ऋग्वेद, शुक्लयजुर्वेद, कृष्णयजुर्वेद, सामवेदीय, अथर्ववेदीय ब्राह्मण ग्रन्थ। आरण्यक ग्रन्थ ऋग्वेद के, यजुर्वेद के, सामवेद के, अथर्ववेद के। उपनिषद।

वेदाङ्ग

वेदाङ्ग – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष। प्रातिशाख्य-ऋग्वेदप्रातिशाख्य, तैत्तिरीयप्रतिशाख्य, शुक्लयजुर्वेद-प्रातिशाख्य, शौनकीया चतुरध्यापिका, अथर्वप्रातिशाख्य, ऋक्तन्त्र।

देवता-परिचय

अग्नि, इन्द्र, विश्वेदेवा, विष्णु, वाक्, पुरुष, शिवसङ्कल्प सूक्तों में स्थान, उत्पत्ति, स्वरूप, निवास स्थान, कार्य।

वैदिक भाषा की विशेषताएँ और ऋग्वेद के छन्द, वैदिक भाषा की विशेषताएँ, ध्वन्यात्मक विशेषताएँ, सन्धिगत विशेषताएँ, स्वराघात, धातुरुप, शब्दरूप, वाक्यविन्यास, वैदिक स्वरप्रक्रियाएँ, ऋग्वेद के छन्द (गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप, त्रिष्टुप्, बृहती,जगती, पंक्ति, छन्दों के विषय में विशेष)।

वैदिकमन्त्रचयनम्

वैदिक सूक्तों के मन्त्रों का पदपाठ, सायणभाष्य, अन्वय, पदार्थ, अनुवाद तथा व्याकरणात्मक टिप्पणियाँ। अग्निसूक्त, विश्वेदेवाःसूक्त, विष्णुसूक्त, इन्द्रसूक्त, पुरुषसूक्त, वाक्सूक्त, शिवसंङ्कल्प सूक्त।

कठोपनिषद् (प्रथम अध्याय)

वैदिक वाङ्मय में कठोपनिषद्, कठोपनिषद् का सामान्य अध्ययन, श्लोकों की व्याख्या तथा अनुवाद।

UGST-05

संस्कृत-साहित्य का इतिहास

रामायण-संस्करण, प्रक्षिप्त अंश, आदिकवि वाल्मीकि, रचनाकाल, आदिकाव्य रामायण, रामायण और महाभारत की संस्कृतियों का भेद, रामायण का प्रतिपाद्य विषय, रामायण के प्रणेता।

रामायण– रामायण का महत्व, काव्य-सौन्दर्य, प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण, स्त्रीपात्रों का चित्रण, रामायण का उपजीव्यत्व।

महाभारत– रचनाकाल, विकासक्रम, विभाजन, टीकाकार, काव्य सौन्दर्य।

महाभारत का प्रतिपाद्य विषय एवं महत्त्व, महाभारत में विज्ञान, धर्म, राजनीति, समाज, अर्थ।

महाकाव्य, बुद्धचरित, रघुवंश तथा कुमारसंभव महाकाव्यों का उद्भव और विकास, अश्वघोष, महाकवि कालिदास, स्थितिकाल, उपमा कालिदासस्य, रघुवंश-विषयवस्तु, कुमारसम्भव, कथा-योजना।

किरातार्जुनीय, शिशुपालवध नैषधीयचरित महाकवि भारवि, भारवेरर्थगौरवम्, किरातार्जुनीय-कथानक, काव्यगत विशेषताएँ, महाकवि माघ, शिशुपालवध का कथानक, काव्यगत विशेषताएँ, माघ का वैदुष्य, श्री हर्ष, काव्यगत विशेषताएँ, अन्य महाकाव्य।

संस्कृत-साहित्य का इतिहास

नाटक और प्रमुख नाटककार – नाटक-संस्कृत नाटकों का विकास, नाटक का वैशिष्ट्य, भास, परिचय, रचनाएँ, नाटकों का संक्षिप्त परिचय, भास का समय। कालिदास-परिचय, रचनाकाल, नाटक। भवभूति-परिचय, रचनाकाल, नाटकों का संक्षिप्त परिचय, शूद्रक-परिचय, स्थितिकाल, साहित्यिक उल्लेख।

नाटक-मृच्छकटिक, विशाखदत्त-परिचय, रचनाकाल, कथानक, भट्टनारायण-परिचय, रचनाकाल, रचना-वेणी संहार।

गद्यकाव्य – गद्यकाव्य का स्वरूप तथा उत्पत्ति-विकास, वैदिक गद्य, साहित्यिक गद्य, कथा और आख्यायिका, गद्य के अवान्तर भेद।

प्रमुख गद्यकार- सुबन्धु-जीवन वृत्त, कृतित्व, समय, वासवदत्ता की संक्षिप्त कथा, सुबन्धु की शैली और काव्य सौन्दर्य। दण्डी-जीवनवृत्त, कृतियाँ, समय, दशकुमारचरित की संक्षिप्त कथा, दण्डी की शैली, दण्डिनः पदलालित्यम्, दण्डी का काव्य सौष्ठव, नैतिक आदर्श।

चम्पूकाव्य – काव्य का स्वरूप, काव्य के भेद, चम्पूकाव्य का स्वरूप, मिश्र-काव्य के विकास की पृष्ठभूमि, चम्पूकाव्येतर मिश्रशैली का स्वरूप।

प्रमुख चम्पूकार – महाकवि त्रिविक्रमभट्ट-जीवनवृत्त, कृतित्व, नलचम्पू की कथावस्तु, महाराजभोज-जीवनवृत्त-समय, कृतित्व, चम्पूरामायण की कथावस्तु, अनन्तभट्ट-जीवनवृत्त और समय, कृतित्व, चम्पूभारत की कथावस्तु, कविकर्णपूर-जीवनवृत्त, कृतित्व, आनन्दवृन्दावनचम्पू की कथावस्तु, श्रीजीव गोस्वामी, जीवनवृत्त, कृतित्व, श्रीगोपाल चम्पू की कथावस्तु, गोपाल-उत्तरचम्पू।

जन्तु कथाएँ – कथा साहित्य, कथासाहित्य का उद्भव और विकास, नीति-कथाओं की विशेषताएँ, जन्तुकथाएँ (पञ्चतन्त्र, हितोपदेश)

UGST-06

संस्कृत निबन्ध

वर्णनात्मक निबन्ध – गङ्गा, वाराणसी, संस्कृतभाषायाः महत्त्वम् वैशिष्ट्यञ्च, नौका-विहारः, सैनिक शिक्षा, समाचारपत्रम्, पुस्तकालयः दीपावली, वसन्तः, ग्रीष्मः, स्वतंत्रतादिवसोत्सवः, गणतंत्रविशेषोत्सवः।

विचारात्मक-निबन्ध – भगवान श्रीकृष्णः, भगवान बुद्धः, महामना मदनमोहन मालवीयः, महात्मा गान्धिः।

भावात्मक व समीक्षात्मक निबन्ध, महाकविः कालिदासः, सत्सङ्गति, सदाचारः,

परोपकारः।

शास्त्रीय, कवि,सूक्ति एवं सुभाषितगत निबन्ध अनुशासनम्, विद्यार्थिकर्त्तव्यम्, आधुनिक विज्ञानम्, विद्या, सत्यम् (सत्यमेव जयते नानृतम्) उद्योगः, अहिंसा, गुणैर्हि सर्वत्र पदं निधीयते, मातृभक्तिः, देशभक्तिश्च, वैदिकी संस्कृतिः, भारतीय-संस्कृतिः, ऋग्वेदः, वेदाङ्गनां महत्त्वम्, महाकविःदण्डी, महाकविःबाणभट्टः, महाकविः अश्वघोषः, महाकविःभारविः, अस्माकम् देशः।

लघुसिद्धान्तकौमुदी

संज्ञा प्रकरण – इत्संज्ञा, लोपसंज्ञा, प्रत्याहार, ह्रस्वदीर्घप्लुतसंज्ञा, उदात्तानुदात्त-स्वरितसंज्ञा, अनुनासिकसंज्ञा, सवर्णसंज्ञा, संहितासंज्ञा, संयोगसंज्ञा, पदसंज्ञा।

यण्-अयादिचतुष्टय-गुण-वृद्धिसन्धि प्रकरण यण्सन्धि, अयादिचतुष्टयसन्धि, गुणसन्धि, वृद्धिसन्धि।

पररूप-सवर्णदीर्घ सन्धि प्रकरण, पररूप, सवर्णसन्धि, दीर्घसन्धि।

लघुसिद्धान्तकौमुदी

श्चुत्व-ष्टुत्व-शश्छोडटि-अनुस्वारादि-हल्सन्धिप्रकरण।

कुक्-टुक्-घुट्-तुक्-ङमुट्-रुविधान-हल्सन्धिप्रकरण कुक् टूक् विधान, घुट् विधान, तुक् विधान, ङमुट् विधान, रूविधान।

विसर्गसन्धि प्रकरण – सत्वविधान, रुत्वविधान, यत्वविधान, रत्वविधान, र-लोपविधान, अण् दीर्घविधान, सुलोप विधान।

स्त्रीप्रत्ययप्रकरण – टाप्, ङीप्, ङीप्, ऊङ्, ङीन्, ति प्रत्यय विधान।

UGST-07

दर्शन

ईशावास्पयोपनिषद्

ईशावास्योपनिषद् – दर्शनशास्त्र का अर्थ, वेदान्तर्गत उपनिषदों का नाम संकीर्तन।

प्रमुख उपनिषदों का परिचय- ईशावास्योपनिषद्, केनोपनिषद्, कठोपनिषद्,

प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद्, माण्डुक्योपनिषद्, तैत्तिरोयोपनिषद्, ऐतरेयोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्, वृहदरण्यकोपनिषद्, कौषीतकीथ उपनिषद् श्वेताश्वतरोपनिषद्।

उपनिषद् की प्रतिपादन शैली, समय एवं टीकाकार शंकराचार्य।

श्लोक – 1 से 5 तक सन्दर्भ सहित व्याख्या।

श्लोक – 6 से 12 तक सन्दर्भ सहित व्याख्या।

श्लोक 13 से 18 तक सन्दर्भ व्याख्या।

श्रीमद्भगवद्गीता

श्रीमद्भगवद्गीता – भगवद्गीता का कलेवर एवं भाषा शैली, भगवद्गीता का स्रोत एवं काल, प्रतिपाद्य-विषय।

जीवन शैली एवं आचार सहिंता-जीवन शैली एवं आचार संहिता, भगवद्गीता का सन्देश, विषय-प्रतिपादन-शैली, भगवद्गीता पर लिखित संस्कृत टीकाएँ, सांख्ययोग का विषयसार, कर्मयोग का विषय सार।

श्लोक – 1 से 36 तक वाचन, अनुवाद तथा व्याख्या।

श्रीमद्भगवद्गीता

श्लोक 37 से 43 तक – वाचन, अनुवाद तथा व्याख्या।

UGST-08

काव्य एवं काव्य शास्त्र

साहित्य-दर्पण

प्रथम परिच्छेद – मङ्गलाचरण – (आवश्यकता – भेद) प्रयोजन, उपादेयता, काव्यलक्षण, मम्मट का काव्यलक्षण तथा खण्डन।

प्रथम परिच्छेद – वक्रोक्ति-जीवितकार का खण्डन, मम्मट, भोजदेव तथा ध्वन्यालोककार के मत की आलोचना, काव्य का प्रमुख फल रसास्वाद- इसका

उपपादन, पद्य के नीरस अंशों में भी काव्यत्व का उपपादन, वामनमत की आलोचना, आनन्दवर्धन की आलोचना, साहित्यदर्पणकार का काव्यलक्षण, काव्यदोष तथा इनके कार्य, गुण, अलङ्कार तथा रीति और इनके कार्य।

द्वितीय परिच्छेद – वाक्य का लक्षण, आकाङ्क्षा, योग्यता तथा आसक्ति के (स्वरूप-लक्षण), महावाक्य का लक्षण (स्वरूप) पद का लक्षण, अर्थ के तीन भेद और उनके स्वरूप, अभिधा शक्ति का स्वरूप एवं संकेतग्रह के साधन, किस-किस अर्थ में संकेतग्रह, लक्षणा शक्ति का स्वरूप, 'कर्मणिकुशलः' आदि प्रयोगों में रूढ़ि लक्षणा का खण्डन।

द्वितीय परिच्छेद – लक्षणा का भेद – उपादान लक्षणा तथा लक्षण-लक्षणा का स्वरूप, आरोपा तथा अध्यवसाना इन भेदों के कारण लक्षणा के 8 भेद, शुद्धा एवं गौणी के भेद से लक्षणा के 16 भेद, 'गौर्बाहीकः' के शाब्दबोध-सम्बन्धी विभिन्न मत और उनका खण्डन तथा साहित्यदर्पणकार का मत।

द्वितीय परिच्छेद – व्यङ्ग्य के गूढ़ और अगूढ़ होने का कारण प्रयोजनवती लक्षणा के 16 भेद, व्यंग्य-प्रयोजन के धर्मिगत तथा धर्मगत भेदों के कारण 32 भेद, लक्षणा के 40 भेद पुनः 80 भेद, व्यञ्जना विवेचन तथा लक्षण, शाब्दी व्यञ्जना के भेद, स्वरूप, उदाहरण। आर्थीमूला व्यञ्जना का स्वरूप।

द्वितीय परिच्छेद- आर्थी व्यञ्जना का लक्षण, उदाहरण, भेद, शब्द एवं अर्थ शब्द एवं अर्थ, दोनों की ही व्यञ्जकता-व्यञ्जना, शब्द के तीन भेद, मीमांसकाभिमत तात्पर्या वृत्ति का स्वरूप।

तृतीय परिच्छेद – रस का सामान्य एवं विशेष स्वरूप एवं आस्वादन – प्रकार, करुणादि के भी रसत्व का उपपादन, दुख की कारणभूत सामग्री से सुखरूप रसोत्पति कैसे? रसानुभूति क्यों, अश्रुपातादि क्यों, रामादि के रत्यादि के उद्‌बोध के कारणों से सामाजिक की रत्यादि का उद्‌बोध कैसे, साधारणीकरण व्यापार का स्वरूप, सामान्य सामाजिक में उत्साहादिबोध कैसे, विभावादि की भी साधारण्य से ही प्रतीति, विभवादि भी अलौकिक।

तृतीय परिच्छेद – रसबोध में विभावादि, विभावादि में एक रस कैसे, 'रस अनुकार्यगत हैं'- खंडन, 'रस अनुकर्तृगत है- खंडन, रसज्ञाप्य नहीं, रस कार्य

नहीं, रस नित्य नहीं, रस भविष्यत् कालीन नहीं, रस वर्तमान नहीं, रस निर्विकल्पक-सविकल्पक ज्ञान का विषय नहीं, रस परोक्ष या अपरोक्ष नहीं, रस का वास्तविक स्वरूप – अलौकिक, चवर्णा ही रससत्ता में प्रमाण, रस की अवाच्यता आदि का उपपादन, रस स्वप्रकाश एवम् अखण्ड, रत्यादि की रसरूपता का उपादन।

महाकवि भारवि-प्रणीत किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग)

आलोचनात्मक अध्ययन से सम्बन्धित – अलङ्कृत शैली के प्रवर्तक – कवि भारवि, भारवि का स्थितिकाल, जीवन-परिचय, काव्यभेद तथा महाकाव्य का स्वरूप, महाकाव्य का नामकरण, महाकाव्य का नायक, संक्षिप्त इतिवृत्त, महाभारत की कथा से प्राप्त परिवर्तन, भारवि की प्रशस्ति, शैली का वैशिष्ट्य, भारवि का अर्थ गौरव, भारवि का अलङ्कार निरूपण, छन्द, रसाभिव्यञ्जना, प्रथम सर्ग की कथा, प्रथम सर्ग की सूक्तियाँ।

प्रथम सर्ग के सभी श्लोकों (1 – 46) की व्याख्या तथा अनुवाद।

UGST-09

भाषा विज्ञान

भाषा की उत्पत्ति, ध्वनियन्त्र, ध्वनि का वर्गीकरण, ध्वनियों के गुण, ध्वनि परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ, अर्थ परिवर्तन के कारण, अर्थ परिवर्तन या अर्थ विकास की दिशाएँ।

भाषा विज्ञान

विश्व भाषाओं का आकृतिमूलक वर्गीकरण भाषा, भाषा का वर्गीकरण, आकृतिमूलक वर्गीकरण की समीक्षा।

विश्वभाषाओं का पारिवारिक वर्गीकरण–पारिवारिक वर्गीकरण-आधार, विश्व के भाषा-परिवारों का संक्षिप्त परिचय (यूरेशिया, अफ्रीका, प्रशान्त महासागरीय खण्ड) अमेरिका खण्ड।

भारोपीय – भाषा – परिवार – भाषाएँ, भारोपीय परिवार का महत्त्व,

विशेषताएँ, भारोपीय परिवार के केन्तुम् और सतम् वर्ग, भारोपीय परिवार की भाषाओं का परिचय।

भाषा विज्ञान

आर्य भाषा या भारत-ईरानी शाखा – आर्य परिवार, महत्त्व, आर्यशाखा का विभाजन, वैदिक संस्कृत तथा अवेस्ता की तुलना।

भारतीय आर्य भाषा – भारतीय आर्यभाषा का महत्त्व, काल-विभाजन, प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ, प्राचीन प्राकृत या पालि (प्रथम-प्राकृत), पालिशब्द की व्युत्पति, पात्रि की विशेषताएँ, शिलालेखी प्राकृत, मध्यकालीन प्राकृत, शौरसेनी, महाराष्ट्री (महाराष्ट्रीय) मागधी, अर्धमागधी, पैशाची, प्राकृत भाषाओं की सामान्य विशेषताएँ, अपभ्रंश (परकालीन प्राकृत तृतीय प्राकृत) आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का संक्षिप्त परिचय।

वैदिक और लौकिक संस्कृत में अन्तर- वैदिक संस्कृत, वैदिक संस्कृत की ध्वनियाँ, मूल भारोपीय और वैदिक ध्वानियों में अन्तर, वैदिक संस्कृत की प्रमुख विशेषताएँ, लौकिक संस्कृत की प्रमुख विशेषताएँ, लौकिक संस्कृत (संस्कृत भाषा) की ध्वनियाँ, लौकिक संस्कृत (संस्कृत भाषा) की विशेषताएँ, वैदिक और लौकिक संस्कृत की समानताएँ एवं विषमताएँ।

UGEC-01

अर्थशास्त्र का ऐच्छिक पाठ्यक्रम

अर्थशास्त्र और अर्थशास्त्र का परिचय – अर्थशास्त्र का प्रकृति और महत्व। आर्थिक कार्यकलाप में परिवार फर्म और सरकार की भूमिका-आर्थिक कार्यकलाप का चक्रीय प्रवाह।

प्रतियोगिता, आंशिक और सामान्य संतुलन (साम्य)- प्रतियोगिता की संकल्पना पूर्ति और मांग-बाजार, बाजार संतुलन मांग और पूर्ति की लोच कीमत नियंत्र। कारक पूर्ति और कारक मांग तथा संतुलन – फर्म और आय का वितरण, कारक बाजार, मांग पूर्ति संतुलन।

राष्ट्रीय आय की माप और उसका निर्धारण – राष्ट्रीय आय की माप और उसके घटक-राष्ट्रीय सम्पदा पूंजि-वर्गीकरण निवेश। राष्ट्रीय आय निर्धारण की सामान्य क्रिया-विधि, प्रभावी मांग, संतुलन गुणक।

मुद्रा, उत्पादन और सामान्य कीमत स्तर – अर्थव्यवस्था में मुद्रा की भूमिका और मुद्रा की मांग-सिद्धान्त, नकद सौदा, नकद शेष, फ्रीडमैन। मुद्रा पूर्ति, वित्तीय प्रणाली तथा मुद्रा नीति-सिद्धान्त, अल्प रोजगार संतुलन सीमाएं। कीमत स्तर और स्फीति की माप, संकल्पना, सूचकांक, निर्माण सम्बन्धी समस्याएं, उपयोग, स्फीति अवस्फीति।

उपभोक्ता का संतुलन- उपभोक्ता मांग, प्रकट अधिमान सिद्धान्त, समभाव वक्र, मार्शलवादी उपयोगिता संकल्पना, किमतें, आय और उपभोक्ता संतुलन, मांग की मात्रा पर कीमत परिवर्तन का प्रमाण। हिवन्स स्टट्सकी, बाजार संतुलन।

फर्म का संतुलन – उत्पादन फलन और पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत लागत और पूर्ति। बाजार के रूप – एकाधिकार, द्वि-अधिकार, अल्पाधिकार एवं एकाधिकारी प्रतियोगिता।

आय-वितरण – वितरण का सीमान्त उत्पादिता सिद्धान्त और मजदूरी निर्धारण। लगान, ब्याज और लाभ। आय अंशों के सिद्धान्त।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं भुगतान – अन्तर्राष्ट्रीय मुक्त व्यापार सिद्धान्त और उनकी आलोचनाएं। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का मुद्रा पक्षः भुगतान-शेष।

आधुनिक आर्थिक संवृद्धि और अल्प विकास- आधुनिक आर्थिक संवृद्धि, हरैड-डोमर नवक्लासिकल संवृद्धि मॉडल, कालडोर, पार्सनेसति संवृद्धि मॉडल, साइमन

कुजनेट्स कर योगदान, एंजिल का नियम, ल्यूविस मॉडल, विकासशील देशों के लिए संवृद्धि मॉडलों की प्रासंगिकता। विकास और अल्प विकास, मार्क्स का विकास सिद्धान्त, सार्वजनिक क्षेत्र में पूंजि निर्माण।

UGEC-02

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत का आर्थिक विकास

स्वतंत्रता के पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ – औपनिवेशिक विरासत : पराधीनता का ढांचा। कृषि भूमि संरचना : 1850 के 1940। उद्योग परिवहन और प्रबन्ध।

भारतीय अर्थव्यवस्था का ढाँचा : छठे दशक के आरम्भ से नवें दशक के आरम्भ तक- परिसंपत्ति स्वामित्व का स्वरूप और असमानताएं- भारतीय अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण विशेषताएँ। राष्ट्रीय आयः इसकी संरचना तथा अन्तर्क्षेत्रीय स्वरूप।

प्राकृतिक और मानव संसाधन – प्राकृतिक संसाधन : भूमि के ऊपर तथा भूमिगत-कृषि गैर कृषि एवं खनिज। जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियाँ और जनसंख्या नीति-जनसंख्या और आर्थिक विकास में इसका महत्व।

विकास के लिए आयोजन – राज्य तथा आयोजन की कार्यनीतियां- संतुलित और असंतुलित विकास, सार्वजनिक और निजी क्षेत्र भी सापेक्ष भूमिका। योजनाओं की चिह्न व्यवस्था – वित्तीय घाटा और विदेशी संसाधन आदि।

मुद्रा बैंकिंग तथा लोक वित्त – मुद्रानीति, बैकिंग और सहकारी समितिया-बैंकिग और साख पद्धति, रिजर्व बैक की भूमिका, बैंको का विकास एवं राष्ट्रीयकरण। लोक वित्त-राजकोषीय नीति, कर संरचना तथा नीति, लोक ऋण आदि।

भारतीय अर्थव्यवस्था का क्षेत्रकीय अध्ययन : कृषि- कृषि विरासत-पिछड़ापन, उत्पादकता के निर्धारक तत्व। स्वतंत्रता बाद कृषि विकास-कृषि का ढांचा, भूमिसुधार, तकनीक परिवर्तन एवं संवृद्धि का स्वरूप।

स्वतंत्रता के बाद औद्योगिक क्षेत्रक – उद्योग : नीति, विनियमन, लघु उद्योग तथा सार्वजनिक क्षेत्रक। औद्योगिक प्रगति रुग्णता और वित्त व्यवस्था, विदेश व्यापार-

प्रणाली और पूंजि।

विदेशी व्यापार और भुगतान शेष – निर्यात और आयात : संरचना, स्वरूप और व्यापारिक स्थितियाँ भुगतान शेष-भारत की भुगतान शेष नीति, नवीन अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रणाली।

शहरीकरण परिवहन तथा नागरिक सुविधाएँ – भारत में शहरीकरण का स्वरूप एवं समस्याएं, परिवहन प्रणाली, शहरीकरण तथा नागरिक सुविधाएँ।

श्रमिकों की स्थिति और उनकी गुणवत्ता – औद्योगिक श्रमिक, ग्रामीण श्रमिक, रोजगार और कार्यशील महिलाएं, श्रम की गुणवत्ता : शिक्षा और स्वास्थ्य।

UGEC-03

प्रारम्भिक सांख्यिकी विधियाँ और सर्वेक्षण तकनीकें

सांख्यिकी के मूल सिद्धान्त और स्त्रोत – सांख्यिकीय त्रुटियां, उपयोग एवं दुरूपयोग। सांख्यिकी की कुछ संकल्पनाएं तथा स्त्रोत।

गणितीय उपकरण – प्रारम्भिक बीज गणित – द्विघात समीकरण, लघुगणक, श्रेणियाँ आदि। निर्देशांक ज्यामिति तथा फलनिक सम्बन्ध।

सांख्यिकी आंकड़ों की प्रस्तुति – सांख्यिकी आंकड़ों का संवीक्षण, सम्पादन, प्रतिवेदन तथा सारणीयन। आंकड़ों का आलेखी निरुपण।

एक विचार आंकड़ों का संक्षेपण – सांख्यिकी चर तथा अवस्थिति के माप। प्रकीर्णन के माप।

द्विचर आंकड़ो का संक्षेपण – सहसम्बन्ध। समाश्रयण

सूचकांक तथा काल श्रेणी – सूचकांक – सूचकांक रचना में चरण, रचना की विधि, विभिन्न सामुहिक मापों के गुण, सूचकांक के परीक्षण। काल श्रेणी तथा इसके घटक।

प्रायिकता तथा प्रायिकता बंटन – प्रायिकता – प्रायिकता के मूल प्रमेय, पुनरावृत्त अभिप्रयोग गणितीय प्रत्याशा। प्रायिकता बंटन : द्विपद, प्वासों तथा प्रसामान्य।

प्रतिचयन सिद्धान्त तथा सांख्यिकीय आनुमिति – प्रतिचयन तथा प्रतिचयन बंटन की मूल अवधारणाएं, सांख्यिकीय अनुमिति : आंकलन एवं परिकल्पना जांच।

प्रतिदर्श सर्वेक्षण – प्रतिदर्श अभिकल्पनाएं/आंकलन प्रक्रिया।

UGEC-04

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में कृषि विकास

उपनिवेशवाद और भारतीय कृषि का अल्पविकास 1460-1850 – ब्रिटिश शासन का प्रारम्भ और कृषक भारत पर उसका प्रभावः 1760 : 1850, कृषि का अभ्युदय, भारत के अकाल 1760 से 1943-प्रमुख अकाल, अकाल की विशेषताएं और परिणाम, अकाल की राजनीतिक अर्थव्यवस्था।

भू-सम्पत्ति कृषि ढांचा और ग्रामीण ऋण – भारत में भू-सम्पत्ति का विकास, स्वतंत्रता के समय और बाद में कृषिक संरचना – भू जोतो का वितरण भूमि सुधार, जोतों की उच्चतम सीमा, भूमि सुधार कार्यक्रमों के असफल होने के कारण। स्वतंत्रता भारत के ग्रामीण ऋण-ग्रामीण ऋण समस्या के मुख्य तत्व, साख स्रोतों का स्वरूप, कृषि-ऋण हेतु विधि स्रोतः नयी प्रवृत्तियां। ऋणदाताओं की समस्याएं।

भारतीय कृषि विकास : आस्थिरता तथा जल व्यवस्था – खाद्यान्न, नकदी फसलें तथा फसल वृद्धि का क्षेत्रीयकरण। भारतीय कृषि उत्पादन में वार्षिक तथा कृषि जलवायु सम्बन्धी, क्षेत्र-निर्धारण हरित क्रांति तथा अस्थिरता, वर्षा, एवं जल संसाधन, भारत में कृषि पारिस्थिक क्षेत्र निर्धारण।

भारत में वृहद् तथा लघु सिंचाई - भारत में वृहद सिंचाई - बृहद सिंचाई के प्रकार उपयोग लागत। भारत में लघु सिंचाई। वृहद तथा लघु सिंचाई : तुलनात्मक अर्थशास्त्र।

तकनीकी परिवर्तन, हरित क्रांति तथा लाभों का वितरण – हरित क्रांति : स्वरूप और विस्तार। नई औद्योगिकी और उसके लाभों का वितरण।

सूखा बाढ़ राहत तथा सार्वजनिक वितरण कहानी – सूखा बाढ़ तथा राहत। सार्वजनिक वितरण प्रणाली एवं अन्तर्राष्ट्रीय असमानता।

संसाधन संग्रह एवं कृषि संरचना : कीमेटं, कराधान, आर्थिक सहायता, विपणन और भंडारण – कृषि और विनिमय अर्थव्यवस्था। कृषिकर आर्थिक सहायता, विपणन और भण्डारण।

ग्रामीण गरीबी एवं असमानता तथा गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम में- ग्रामीण भारत में गरीबी और असमानता। ग्रामीण स्तर पर गरीबी, गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम।

UGEC-05

अर्थशास्त्र में प्रारम्भिक गणितीय विधियां

कलन की आधारभूत संकल्पनाएं – समुच्चय, फलन और सांतत्य, अवकलन गणित।

चरममान इष्टतमीकरण – उच्चिष्ट और निम्निष्ट, व्यवरुद्ध चरममान प्रश्न।

आर्थिक गतिकी – आर्थिक गतिकी के समाकलन और उनके अनुप्रयोग। अर्थशास्त्र में अंतर समीकरण और उनके अनुप्रयोग।

प्राथमिक रैखिक बीजगणित और आर्थिक विश्लेषण – सदिश और आव्यूह। आगत निर्गत विश्लेषण।

UGEC-06

आर्थिक विकास के प्रारूप : एक तुलनात्मक अध्ययन

यूनाइटेड किंगडम का आर्थिक इतिहास – भाग 1

कृषि ढांचे में परिवर्तन : पराम्परागत कृषि दासता से द्वितीय घेराबंदी (बाड़ा-आन्दोलन) की ओर।

औद्योगिक क्रांति।

इंग्लैण्ड का आर्थिक विकास भाग 2

प्रतिद्वंदी राष्ट्रों का उदय, पूंजी निर्यात तथा प्रथम महायुद्ध (1970-1014) एकाधिकारी पूंजी का स्वरूप, ब्रिटेन का विदेशों में निवेश, महाशक्तियों का भौगोलिक प्रसार आदि।

अंतः महायुद्ध (1929-1939) – प्रथम महायुद्ध के प्रभाव, महामंदी एवं विश्व अर्थव्यवस्था आदि।

जापान की आर्थिक इतिहास -।

मिजि पुनः प्रतिष्ठापन की पूर्व संध्या पर जापान-जापान में सामंतशाही, किसानों पर बोझ तथा किसान असंतोष के चिन्ह, जापान पर पश्चिम का प्रभाव।

जापान पूंजीवादी की राह पर : कृषि एवं उद्योग

जापान का आर्थिक इतिहास-॥

प्रथम महायुद्ध तक जापान की आर्थिक विकास युक्ति सरकारी हस्तक्षेप तथा

प्रारम्भिक औद्योगीकरण, भारी उद्योगों का विकास तथा उपनिवेश, प्रथम महायुद्ध के दौरान आर्थिक तेजी।

अंतः युद्ध काल में जापान का औद्योगिकरण

रूस में आर्थिक विकास-।

रूस में आर्थिक विकास (1860-1917)-कृषि, महायुद्ध – पूर्वकाल में औद्योगिक विकास।

अक्टूबर क्रांति एवं आर्थिक विकास (1917 – 1920) – सोवियत सरकार के तात्कालिक कदम, यौद्धिक साम्यवाद आदि।

रुस का आर्थिक विकास - ॥

सोवियत आर्थिक विकास (1921-1928) नयी अर्थिक नीति। औद्योगीकरण के सम्बन्ध में वाद-विवाद।

सोवियत आर्थिक विकास (1928-1941) – आर्थिक आयोजन की बुनियाद, पंचवर्षीय योजनाएं।

आधुनिक आर्थिक संवृद्धि-। सामान्य अनुभव

आधुनिक आर्थिक संवृद्धि की दर, संरचना एवं प्रसार।

विकास के चरणों के प्रति दृष्टिकोण।

असमान विनिमय, औपनिवेशिक हस्तांतरण तथा औद्योगिक क्रांति एवं पूंजी निर्यात का वित्तीय प्रबन्ध

उपनिवेशीय व्यवस्था, वाणिज्यवादी विचार धारा, त्रिकोणीय व्यापार तथा उपनिवेशी हस्तांतरण।

उपनिवेशों तथा हस्तांतरणों का पूंजी निर्यात में योगदान।

आधुनिक आर्थिक संवृद्धि ॥ : अल्प विकास का विकास

केन्द्र परिसर अवधारणा : लैटिन, अमेरिकी विचारधारा।

द्वैतग्रस्त, श्रम बहुल अर्थव्यवस्था में आर्थिक संवृद्धि- लैटिनी विचारधारा के तीन स्वरूप, द्वैतवाद की अवधारणा।

विकास के समकालीन मुद्दे-

असमान विनिमय, विश्व न्यायी संचयन तथा अल्प विकास।

विकास आयोजन संकट : समकालीन मुद्दे।

UGEN-01
(English)

Language Thorough Literature

Content Vocabulary-1

Extension of Meaning-1

Literal versus Metaphorical. Extension of Meaning – From a concrete object to an abstract idea, Living (animal or human) to non-living (object) and vice-versa, Animal to human and vice-versa, Extension of sensory perception, extension by meaning.

Extension of Meaning-2 Figure of Speech

Metaphor and Simile, Transferred Epithet. Extended, Metaphor. Allegory. Part for the whole. Object for Person. Euphemism. Idioms and Proverbs. Extension by Change in word Class (Parts of Speech). Imagery.

Multiple Meanings -1

Multiple Meaning and Extended meaning Compared. Related Multiple meanings- Multiple meanings of word used as the same part of speech, Abstract and concrete meanings, Phrasal verbs, A word used as Different parts of speech Noun and verb, Noun and verbs with stess shift, Noun and adjective.

Multiple Meanings-2

Homonyms : Words having the same sounds and spelling – Homonyms as the parts of speech, Homonyms as different parts of speech, Homonyms used for puns. Homophones : Words having the same sounds but Different spelling – Homophones as the same parts of speech, Homophones as the different parts of speech, Words Having the same spellings but different sounds. Words with some similarity in sounds and spellings.

Overlap of Meaning-1

Overlap in concrete Nouns – Objects persons, places and organizations. Overlap in Abstract Nouns. Overlap in verbs. Difference in Style.

Overlap of Meaning-2

Overlap in Adjective – Adjectives used in Different context, Adjectives used in different senses, Adjectives of degree, some other important adjectives. Overlap in Adverbs.

Content Vocabulary-2

Confusion of Semantic and Structural Criteria

Countable and Uncountable Nouns – Quantifiers or 'Amount' words, All and every. Verbs – verb + proposition, verbs such as let and make, verbs such as want and like, verbs such as enjoy and love.

Wrong Analogies

Singular and Plural Nouns. Verbs – Past tense and past participle forms, wrong use of the progressive tenses, Strongly transitive verbs, verbs like know : teach : tell, show, tag questions. Adjectives Degree of comparision.

Study of Litrary texts -1

M. K. Gandhi : Playing the English Gentleman.' Greard Manley Hopkins : Spring'.

Study of Litrary texts – 2

Jawahar Lal Nehru : 'Opportunity for youth'. Nissim Ezekiel : The Patriat. The Good Samaritan.

Structure Words

Structure Words-1

Passage for Reading – 'University Days'by James Thumber. Recognizing Structure Words – Structure Words and content words, Lexical Meaning and structural meaning, Why do we need Structure words ?. Characteristics and structure words in Use-Frequency of occurrence, closed class membership, structure words as structural markers, structure words provide the grammatical framework of a sentence . A note on 'Some other words : Determines.

Structure Words -2 The Articles

Passage for Reading from 'A Letter to God'. Articles as Determiner's. Four Distractions Relevant to the use of Articles – Count nouns vs. mass nouns, Singular vs. plural nouns, General vs. Particular reference, Definite vs. indefinite meaning. The use of Article with count and mass nouns. The use of Article for General Reference. The use of Article for particular Reference. Summary of Rules. Uses of the Definite Article.

Structure words-3 Auxiliaries

Passage for Reading, Auxiliaries and Main verbs. Primary Auxiliaries : be, have, do. Modal Auxiliaries and their meanings. Types of complex verb. Phase. Auxiliaries as operators.

Structure Words-4 Prepositions

Recognising Prepositions – Prepositions and adverbs, prepositions and conjunctions, simple and complex prepositions, Passage for reading, Prepositions and their objects, prepositional phrases, Identifying prepositions in the passage. Meaning of Prepositions. The use of prepositions – The rate of usage, Choosing prepositions correctly, Idiomatic uses.

Structure Wards in Discourse -1

What is cohesion. Definite Reference – Personal reference, Demonstrative reference.

Structure Words in Discourse-2

Difference between Reference and linkage as cohesive Devices. Additive Relations. Adversative Relation. Casual Relation. Temporal Relation.

Phrasal Verbs; Word Formation

Phrasal Verbs-1

Phrasal verbs – The idiomatic nature of Phrasal verbs, The unity of Phrasal verbs, Transitive and intransitive phrasal. The

use of phrasal verbs-phrasal verbs in Normal Day-to-Day use, phrasal verbs in literary use, Passage use, phrasal verbs in literature use, passage, for reading.

Phrasal Verbs-2

Adverb particles and prepositions. Prepositional verbs-Recognising, Prepositional verbs, Distinguishing phrasal verbs from prepositional verbs. Phrasal. Prepositional verbs. Multi-word verbs-The use of multi-words verbs. Passage for Reading.

Word Formation -1

Passage for Reading : How many words are made in English – the major process. Affixation : Prefixation. Suffixation, How are affixes used ? A few words of caution.

Word – Formation-2

Passage for Reading. Compounding – What is a compound?, The use of compounds, Writing corrections for compounds, types of compounds. Conversion. Some minor, Processes of words-Formation – Abbreviation Back formation, Blends.

Literary Devices

Sound patterns

Rhythm, Rhyme. Alliteration. Assonance. Onomatapoeia.

Figures of Speech-1

Simile. Metaphor – Extended metaphor, mixed metaphor. Synecdoche. Metonymy. Personification. Passage for Study. From Mulk Raj Anand : The lost child.'

Figures of Speech-2

Irony – The irony of situation, Ironic contrast, Irony in satire. Paradox. Antithesis.

Figure of Speech-3

Allegory Bunyan : The Piligrim's progress, Melvin B. Talson : The sea turtle and the Shark. Symbol – John Boyle O Reilly : A white rose, Robert Forst : The road neat taken., Imagery – T.S.

Fliat : The hollow men', Keats : ode toe autumn, Passge from N. Scott momanday : A hosue made of down'.

Figures of speech - 4

Euphemism. Hyperbole, Eulogy, Understatement. Passage for study.

Rhetorical Devices

An Introduction to Rhetoric

Examples of Rhetoric. An Appeal to Emotions. Elevation of Style. Organization.

Structure and style

Structure – Introduction, Narration of facts, preposition or exposition, Division of the topic, proof or confirmation, Refutation, Conclusion. Style – Purity, Clarity, decorum, ornament.

Use of Repetition

Repetition as a Rhetorical Device. various patterns of Repetition. Abrahamlincaln : The Gettysberg Address'.

Use of Questions

Questions as a Rhetorical Device. Various types of questions. Sarojini Naidu : The Battle of Freedom is Over.

Study of a text

M. K. Gandhi : The Great Sentinel – The back ground, the trait, Glossary, The structure of the discourse, Details discussion, the style of the discourse.

Communicative Functions and Grammatical Structure

Language Form and Function

Language of Form. Language as Function.

Using Language for Communicative Functions

Relationship of language form and Function-One language form expressing a number of functions, one language function

having different forms, Form and function interrelate both directly and indirectly. The choice of an Appropriate Form for a Communicative situation.

Doing things with language : Appropriateness

Appropriateness. Some Basic Considerations for using language Appropriately – Differences between written and spoken English, Differences between formal and informal language, differences between polite and familiar language.

Doing things with language : Politeness

The principle of politeness – Doing impose on your hearer, give your however options, make your hearer fuel good. Communicative functions that call for good. Communicative functions that call for politeness. Strategies for politeness – Indirectness, tentativeness. Singles of Politeness. Different Degrees of Politeness.

Requests, Offers and Invitations

Definition of Requests : offers and invitations – Requests, offers, Invitations. Alternative Forms for requests, offers and Invitations – Variant forms with modulus, Tentative equivalents of shall, may, can will.

UGEN-02
(English)

The Structure of Modern English

Phonetics and Phonology-1

An introduction to Phonetics

The Production of speech – The organs of speech. A phonetic Description of speech sounds- vowels and consonants, Description of vowels, Description of consonants (place of

Articulation, manner of articulation). The use of phonetic symbols.

English Vowels -1

The English vowels. Vowels in British Received Pronunciation – Pure vowels (The front vowels, The back vowels, The central vowels), Acceptable Indian Variants.

English Vowels -2

The English Dipthongs – Closing dipthongs, centering dipthongs.

English Consonants-1

The English Consonants- The plosives, The affricates, The fricatives. Some Important contrasts.

English Consonants-2

The Nasal – Bilabial Nasal, Alvealar nasal, Velar nasal. The Lateral Consonant. |v |. The semi vowels – Palatal Semi vowel, Labio vealar Semi vowel.

Phonetics and Phonology-2

Words Stress

Word Stress. Primary stress and secondary stress. How to Mark Stress. Various Stress Patterns. Words Stress Affected by Suffixes. Stress Shift According to the Function of Words. Some Important Rules Concerning word stress.

Stress and Rhythm in connected speech

Connected speech. Words to be stressed in connected speech. Content words and grammatical words. Thythm. Weak Form.

Intonation – 1

Saying short sentences. Saying longer sentences. Breath Groups/sense Groups Tone Groups.

Intonation – 2

Choice of stressed syllables in an Utterance. Choice of the Nucleus.

Intonation – 3

Tones, The falling tone. The Rising tone. The Important Functions of Intonation.

Morphology -1

Morphology : The Basic concepts-1

Identifying the parts of a word-The criteria, Morphemes, Free morphemes and found morphemes, Affixes, Stems and Roots. How are morphemes Combined in to words ?

Morphology : The Basic Concept – 2

Different Types of Affixes : In flectional vs Derivational. Compounding. Conversion. Morphology.

Inflectional Morphology of English – 1

The major parts of speech. Inflectional Morphology of the English Noun-Noun classes, Grammatical categories Associated with the Noun, Morphology of the proper noun, Morphology of the mass noun. The inflectional Paradigm of the English Noun.

Inflectional Morphology of English -2

Inflectional Morphology of the English pronouns – Identifying pronouns, Grammatical categories associated with pronouns, The paradigms of personal pronouns. Inflectional Morphology at the English Adjective – Identifying adjectives, The regular adjectives, The irregular adjectives, The inflectional paradigms of the adjective. Inflectional morphology of the English Adverb-Identifying adverbs, Grammatical categories associated with the adverb, Regular and irregular adverbs, The inflectional paradigms of the adverb.

Inflectional Morphology of English -3

Identifying verbs. Verbs classes, Grammatical categories Associated with the English verb – Person and number, tense, Aspect, mood, voice. Morphology of the full verb- The regular verbs, The irregular verbs, The besis for the regular – irregular distinction, Morphology. Morphology of the modal verb.

Morphology of the primary verb. The Inflectional Paradigm of the English verb.

Morphology -2

Derivational Morphology - 1

Derivational Morphology : Characteristics. Prefixation : Types of Prefixes, - Negative prefixes, Reversative Prefixes, Number prefixes, Prefixes of Degree (rank, size) etc. Prefixes of time and order, Prefixes showing location, Prefixes showing attitude and orientation, Prefixes which change the part of speech of the stem.

Derivational Morphology – 2

Classification of Derivational Suffixes – The scheme of classification, same sounding suffixes (suffixal Homophones). Derivational suffixes of English – Noun suffixes : Suffixes forming nouns, Adjective suffixes : suffixes forming adjectives, Noun/Adjective suffixes : Suffixes forming words which can occur as noun or adjective, verb suffixes : suffixes forming verbs, Adverb suffixes : suffixes forming adverbs.

Derivational Morphology – 3

The nature of conversion – Conversion and diversion, conversion and suffixation, Full and partial conversion, conversion with formal modification. Types of conversion : classification and Description – Classification, Direction of conversion, Description.

Word compounding - 1

Criteria for compounds – The grammatical criterion, The phonological criterion, The meaning criterion, Applying the criteria, some other considerations. Classification of compounds. Some Minor Compound types- The coordinate (dvandva) compound, the combining form compound, The reduplicative compound, the phrase compound.

Word Compounding – 2

Noun Compounds – Type <1.A> : Noun + Noun, Type <1.B> :

verb + noun, Type <1.C.> : noun + verb, Type <1.D.> : adjective + noun, type <1.E.> : Verb + particle, Type <1.F.> : particle + verb, Type <1.G.> : Particle + noun, Adjective compounds – Type <II.A> : noun + adjective, Type <II.B> : adjective + adjective, Type <II.C.> : adverb + adjective, Type <II.D.> : adjective + noun. verb compounds – Type <III.A.> noun + verb, Type <III.B> : adjective + noun, Type <III.C> : particle + verb, Type <III.D.> : adjective + verb.

Syntax – 1 : Sentence Structure - 1

What is a sentence ?

What is a sentence ? Order. Agreement. Type of Sentences. Block language.

Basic Sentence Patterns

Basic elements of sentence. Basic sentence patterns.

The Subject

The National view of subject, The Grammatical Aspects of Subject – Subject verb agreement, Question formation, passive voice.

The Nature of the Predicate : The verb

Verbal Elements of the Predicate – Tense , Aspect, modality, voice, Finite and non-finite verb phrases.

Objects and Complements

Object, complements and Adverbials. Properties of objects and complements. Voice.

Syntax 2 : Sentence Structure - 2

Adverbials - Definition and Kinds

Negative – Types, Explicit and non verbal Negatives.

Questions - Types, structure & functions.

Imperatives & Exclamations –

Syntactic features of Indian English.

Word order, Questions, Tense and aspects.

Syntax -3 : The noun phrase and the verb phrase -

Noun phrase – Pre modification, post modification Relative clause & prepositional phrase, verb phrase.

UGEN-03

Communication skills in English

Letters :

Concepts in communication. Formal letters – style, formal & Informal, machines and essentials of writing, types and formal letters and informal letters.

Conversation :

Formal and Informal face to face conversation, telephonic conversation.

Other forms of official Communication

Memoranda, Reports, Minutes of meetings, telegram and telexes.

Interviews and public speaking

Interviews, Debates, Discussions, speeches and Seminar talks.

Diaries, Notes, Tables and figures

Private and general diaries, travelogues, notes, tables, charts and graphs.

Mass Media – Print

Writing for newspaper – news, editorial letter to editor, Article and features etc. Articles for Journals. Advertising – meaning, types, direct mail advertising. Notes on the English character by E.M. Forester.

Forms of prose short story

Introduction to the short story, Javni by Raja Rao, the lost child by Mulkraj Anand, A cup of tea by Katherine Mansfield, After Twenty years' by O Henry.

Formse of prose the novel : The Mayor of Casterbridge (text)

Thomas Hardy : A Biographical note, Hardy's works, The mayor of caster bridge (Preface and text)

(B) Forms of prose The novel : The mayor of casterbridge (Study Guide)

Introduction to Novel.

The novel : A Riger for Malgudi (Study Guide)

Forms of prose the essay

Addison : Mediation in West minister Abbey, Lamb : Old China, Stevenson : As triplex, Chesterton : on Running After one's Hat, Orwell : Shooting at Elephant.

Biography and Autobiography

Introduction to Biography and Autobiography, Boswell's life of Johnson, Strachey's Queen Victoria, Jawahar Lal Nehru's an Autobiography, Bertrand Russell's Autobiography.

Writing for Radio – Movement of sounds, movements and Ideas, Radio drama, **Block – 8 Mass Media : Television** T.V. Script, Drama, Documentary and Feature Programmes, Interviews, Media, contexts and words. **Block-8 Syntax : Compound and complex sentences.** Clause types and sentence types, compound sentences, complete sentence.

UGEN-04

Understanding Prose

Varieties of Prose Descriptive Prose

Understanding prose : An introduction, forms of prose, figures of speech, Passage from H.G. Well's The war of the worlds, Passage from Isak Dinesen's Out of Africa, Sean O' Casey's This : fallen fore the well, D.H. Lawrence's Morning in Maxico, Alan Moore head's. The Blue Nile, Black House by Charles Dicken's, Encantadas by Herman Mehille's, The mirror of the sea by Conrad's. The village by Mulkraj Anand.

Varities of Prose Narrative Prose

Passage Seth's Charles Dicken's Great Expectations, Vikram Seth's From Heaven Lake, Hemingway's The short happy life of francis Macomber, Wale Soyinka's Aki, Raja Rao's Kanthapura, Golding's The inheritors, Kamala Markanday's The Golden Honey comb, The Blue nile by Alan Morehead.

Varities of Prose Expository Prose

Passage from Richar Wright's Twelve million Black voices, Men and learning by Edmund Leach, Thoughts of the common Language by Jawahar Lal Nehru

UGEN-05
Understanding Poetry

Shakespeare and Milton

Introduction to poetry, Shakespeare, John Mitton.

Donne, Pape and Gray

The Romantic Poets

William Wordsworth, S. T. Coleridge, Lord Byron, Shelley, John Keats.

Victorian Poetry

Alfred Lord Tenny Son, Robert Browing, Matthew Arnold, Thomas Hardy and Robert Bridges.

The Modern Poets

W. B. Yeats, T. S. Eliot, Auden and Spender

The American Poets

Ralph Worldo Emerson, Walf Whitman, H.W. Long follow and Edgar Allan Poe, Emily Dickinson, Robert Frost.

The Indian Poet

Rabindranath Tagore and Sarojini Naidu

Nissim Eze Kiel Kamala Das

A.K. Ramanujan and Jayant Mahapatra.

UGEN-06

Understanding Drama

One Act Plays -I

Introduction to one – Act plays.

The Bishop's Candlesticks-1

The Bishop's Candlesticks-2

One Act Plays – II

Refund – Text of refund, structure of the play.

Refund (Contd.) Analysis of the different parts of the play.

The monkey's Paw-text, structure and analysis.

Macbeth

Background study to the play & Discussion : Act I

Discussion : Acts I & II

Discussion : Act III

Discussion : Act IV & V

Characterisation & Techniques.

A Doll's House : A study Guide

Introduction

Critical Analysis : Acts I & II

Critical Analysis : Act III and Dramatic Techniques.

Themes and Characterisation

Introduction to Drama.

Arms and the man – A study Guide

Arms and the man-I Introduction, life and works of George Bernard show.

Arms and the man-II – Introduction, Summary of the Act-VI.

Arms and the man-III – Introduction & Summary

Arms and the man – IV – Introduction, Title of the play, An anti romantic comedy.

Ghashiram Kotwal : A study Guide.

Introduction

Background and plot

Theme and Characterisation

Dramatic Techniques.

UGEN-07

Reading the Novel

The novel A Introduction

Introduction to the novel

Aspects of the novel

A Tate of two cities

Introductory : A Tate of two cities

Reading the text : Books I & II

Reading the text Book III

The French Revolution

Dickens's Treatment of the French Revolution

The two worlds of a Tate of two cities.

The Scarlet Letter

Hawthorne the Novelist : A review of this Literary Career.

The socio-cultural Background of the scarlet letter.

Dealing the novel

Characterization.

Themes and their Express through Imagery.

Structure, Narrative Techniques and special features.

Nineteen – Eighty Four

Orwell : The man, His work and his limes

Reading the novel.

The novel as Utopica, Anti-Utopia, Dystopia.

The political and existential concerns of 1984.

Aspects of Nineteen Eighty Four.

Things fall Apart

Africa : A brief historical Survey

The African novel in English : An introduction.

Literature and society in Nigeria.

Chinna Achele : Life and works.

Things fall apart : Detailed Analysis.

Specific features of things fall Apart.

Sunlight on a broken column

An introduction to the Indian novel in English.

Socio culture context of sunlight on a broken column.

Reading the novel.

Theme and characterization.

Critical Assessment.

Other Similar novels.

Paraja

Paraja An introduction.

The cultural context and Paraja

Paraja : A novel in translation.

Theme and plot

Characterization

The Novel Retrospective

The novel : A conclusion.

Critical perspective.

Future of the novel.

बी0 ए0 टेक्सटाइल डिजाइनिंग
प्रथम वर्ष

पेपर नं0- 131 कोर्स कोड-यू.जी.टी.डी.-01 कोर्स शीर्षक– बेसिक डिजाइन

डी.टी.डी. -03 + डी.टी.डी. -04

डी.टी.डी. -01

सामग्री

कला सामग्री का परिचय, आपका कार्य स्थल; बेसिक्स ऑफ स्केचिंग, रेखांकन के आधारभूत तत्व, लाइन के गुण; पर्सपेक्टिव ड्राइंग, इलस्ट्रेशन।

इनडोर

आम्ब्जेक्ट ड्राइंग, डिजाइन के लिये प्रयुक्त क्षेत्र, स्थिर चित्रण, कम्पोजिंग सीन्स, सिम्बल्स।

आउटडोर

मोन्यूमेन्टल स्केचिंग, लैंडस्कैप; सी-स्कैप, नेचर स्टडी।

रंगना

लेखन, जल रंग, पोस्टर रंग, पेस्टल रंग।

डी.टी.डी. -03

डिजाइन

डिजाइन की धारणा, डिजाइन का वर्गीकरण, डिजाइन के तत्व, रेखाओं के प्रकार, डिजाइन के सिद्धान्त, टेक्सचर, टेक्सचर के वर्ग।

रंग

रंग की व्याख्या, रंग क्या होता है, रंग के आयाम, रंग चक्र, रंगों का मनोविज्ञान, रंग संयोजन, रंग व डिजाइन।

डिजाइन एडाप्टेशन

डिजाइन बनाना – संरचनात्मक एंव सतही, यर्थाथवादी व स्टाइलाइज्ड, ऐब्सट्रेक्ट और पारम्परिक डिजाइन, लोककला।

पुराण शास्त्र

भारतीय पुराण शास्त्र यूनानी पुराण शास्त्र, ईसाई पुराण शास्त्र, चीनी पुराण शास्त्र।

डी.टी.डी. -04

डिजाइन बनाना

मौलिक आकार के साथ डिजाइन का निर्माण; परम्परागत आकार के साथ डिजाइन का निर्माण, अमूर्त आकार के साथ डिजाइन का निर्माण, अमूर्त आकारों के साथ डिजाइन का निर्माण, चिन्हों द्वारा डिजाइन बनाना।

प्लेसमेन्ट्स

हाथ से छपी डिजाइनों का नियोजन, मशीन से छपी डिजाइनों का नियोजन, बुनाई डिजाइनों का नियोजन, रेखाचित्र (ग्राफ) बनाना।

प्लेसमेन्ट्स

हैन्डीक्राफ्ट्स, आईवोरी – हाथी दाँत से बना सामान, बास्केटरी मैट वीविंग और केन आर्टिकल्स, स्टोनवेयर, लैकर वर्क, आर्ट मेटलवेयर; हस्तशिल्पों से डिजाइनिंग, क्रोक्यूस बनाना, डिजाइन को अंतिम रूप देना।

डिजाइन का निर्माण

वेजीटेबल प्रिन्टिंग के लिए डिजाइनिंग; बाटिक अथवा ब्लॉक के लिए डिजाइनिंग; स्क्रीन के लिए डिजाइनिंग, फ्री-हैण्ड पेन्टिंग के लिए डिजाइन।

पेपर नं0- 132 कोर्स कोड-यू.जी.टी.डी.-02 कोर्स शीर्षक– ड्राइंग एवं स्केचिंग

डी.टी.डी. -01 + डी.टी.डी. -05

डी.टी.डी. -05

प्रकृति

फूलों का अध्ययन, पत्तियों का अध्ययन, वृक्षों की टहनियों का अध्ययन, सब्जियों का अध्ययन।

प्रकृति-2

जानवरों का अध्ययन, पक्षियों का अध्ययन, मछलियों का अध्ययन, तितलियों का अध्ययन।

प्रकृति-3

कीड़े, पहाड़, नदियाँ, आदि, विभिन्न माध्यमों से रेखाचित्र, विभिन्न माध्यमों में रंगना।

प्रकृति-4

कार्टूनिंग, बिन्दुओं द्वारा रेखाचित्र बनाना, डिजाइन रूपान्तरण-1, डिजाइन रूपान्तरण-2।

B. A. Textile Designing
First Year

Paper No. -131 Course Code-UG.T.D.-01 Title of Course – Basic Design

DTD – 03 + DTD – 04

DTD-03

Design

Design Concept, Categorization of Design; Elements of Design, Types of Lines; Principles of Design; Textures, Categories of Texture.

Colour

Colour Theory. What is Colour, Dimensions of Colour, The Colour wheel; Psychology of colour; Colour Schemes, Colour & Design.

Design Adaptation

Design Generation – Structural & Surface; Realistic & Stylised Designs; Abstract & Traditional Designs; Folk Art.

Mythology

Indian Mythology; Greek Mythology; Christian Mythology; Chinese Mythology.

DTD-04

Making Design

Generation of Design with basic shapes; Generation of Design with Traditional shapes; Generation of Design with abstract shapes; Generation of Designs with symbols.

Placements

Placements of hand printed Designs; Placements of Machine printed designs; Placements of woven designs; Making Graphs.

Placements

Handicraft, Ivory, Basketry, Mat weaving & Cane articles, Stone ware, Lacquer work, Art Metalware; Designing from Handicrafts; Making croquis; Finalising design.

Generation of Design

Designing for vegetable printing; Designing for Batik & Block; Designing for Screen; Design for free hand painting.

Paper No. -132 Course Code-UG.T.D.-02 Title of Course – Drawing & Sketching

DTD – 01 + DTD – 05

DTD-01

Material

Introduction to Art material, Your work place; Basics of Sketching. Definition of Line, quality of Line; Perspective Drawing. Illustration.

Indoor

Object Drawing, Place for Designing; Still Life; Composing Scenes Symbols.

Outdoor

Monumental Sketching; Land Scapes; Seascapes; Nature.

Colour

Writing; Water colour; Poster Colour; Pastel.

DTD-05

Nature-1

Flower Study; Leaf Study; Trees & Twigs study; Vegetable Study.

DTD-01

Nature-2

Animal Study; Bind Study; Fishes Study; Butterflies Study.

Nature-3

Insects; Mountains Rivers etc; Sketching With Different Mediums; Colouring With Different Mediums.

Nature-4

Cartooning; Rendering Sketches; Design Conversion-1; Design Conversion-2

बी0 ए0 फैशन डिजाइनिंग
प्रथम वर्ष

पेपर नं0- 124 कोर्स कोड-यू.जी.एफ.डी.-01 कोर्स शीर्षक– बेसिक डिजाइन एवं फैशन इलेस्ट्रेशन

डी.एफ.डी. -02 + डी.एफ.डी. -07

डी.एफ.डी. -02

रेखांकन व सामग्री

कला सामग्री का परिचय, बेसिक रिक्वायरमेन्ट्स; वेसिक्स ऑफ स्केचिंग, लाइन की परिभाषा, लाइन के गुण; पर्सपेक्टिव ड्रॉइंग, इलस्ट्रेशन्स फॉर स्केचिंग।

बेसिक डिजाइन का परिचय

डिजाइन का वर्गीकरण, इलीमेन्ट ऑफ डिजाइन, मानव निर्मित या ज्यामितीय शेल्स, प्राकृतिक या ऑरगेनिक शेल्स, स्थिर आकार, गतीय आकार, स्पेस, कलर, पैटर्न, मूवमेन्ट, टाइपोग्राफी, टेक्सचर; प्रिन्सपल्स ऑफ डिजाइन, रेपिटेशन, अलटेरेशन, डोमिनेन्स या इम्फेसिस, सिम्पलीसिटी, वेरायटी, प्रोपोर्शन, टेक्सचर्स के वर्ग।

रंग

इन्ट्रोडक्शन टू कलर, प्राइमरी कलर व्हील का पिगमेन्ट थ्योरी के अनुसार निर्माण, दा टेरीटेरी कलर व्हील विद् दा नेम्स ऑफ दा कलर्स टिन्ट्स; साइक्लोजी ऑफ कलर्स; कलर स्कीम्स; कलर एण्ड ड्रेस।

स्केचिंग

कम्पोजीशन्स; स्थिर चित्रण (स्टिल लाइफ); प्रकृति अध्ययन (नेचर स्टडी); डिजाइन की रचना करना।

डी.एफ.डी. -07

बेसिक्स ऑफ गारमेन्ट ड्राइंग

गैदर्स, प्लीट्स आदि की स्केचिंग; कालर्स एवं कफ्स् आदि का रेखांकन, प्लेट्स एवं गैदर्स आदि को रंगने का तरीका; कॉलर, कफ आदि में रंग भरना।

बेसिक्स ऑफ गारमेन्ट ड्राइंग

स्टिक फिगर्स; ब्लाँक फिगर्स; क्विक् स्केचेस; पोस्चर्स;

बेसिक्स ऑफ फिगर ड्राइंग

हाथ के घुमाव पैर के घुमाव; फिगर स्केचिंग; फैशन फिगर।

डिजाइन की रचना

कढ़ाई के लिए डिजाइन की रचना करना; फ्री-हैण्ड पेन्टिग और बाटिक इत्यादि के लिए डिजाइन की रचना करना; स्टेन्सिल, वेजीटेबिल, स्क्रीन प्रिन्टिंग आदि के लिए डिजाइन की रचना करना, प्रयोग की जाने वाली वस्तुएँ; स्टोरी बोर्ड बनाना।

पेपर नं0- 125 कोर्स कोड-यू.जी.एफ.डी.-02 कोर्स शीर्षक– फैशन कन्सेप्ट्स

डी.एफ.डी. -01 + डी.एफ.डी. -05

डी.एफ.डी. -01

सामान्य फैशन

फैशन की प्रस्तावना, फैशन का परिचय, फैशन का वर्गीकरण; एसेसरीज का महत्व- 1. बेल्टस, 2. आभूषण, 3. घड़ियाँ, 4. हाथ के थैले, 5. फूटवियर, 6. छतरी, 7. बोज और नेकटाईज, 8. हेडगियर, 9. स्कार्फस, 10. सॉल, 11. मफलर, 12. चश्मे, 13. कास्मेटिक, 14. दस्ताने, खाल और त्वचा में अन्तर- 1. चमड़े के प्रकार, 2. वार्नीशेड लेदर या पेन्टेड लेदर, 3. फ्लैक्स ऑफ शैक, 4. चमड़े की पहचान, 5. खाल को परिक्षित करना। 6. चमड़े के लिए प्रयुक्त औजार, 7. चमड़े को सिलने के धागे, 8. पॉलिश के प्रकार।

ग्लोसरी

फैशन में प्रयोग होने वाले शब्द ए से जेड तक।

फैशन की पहचान

फैशन का चुनाव, स्टाइल की पहचान, कपड़ों का स्टाइल व शरीर का आकार; फिगर का समानुपात, आधारभूत फिगर प्रकार, पतले कन्धे नितम्ब प्रकार का आकार, चौड़े कन्धे पतले हिप्स फिगर प्रकार,दृष्टिभ्रम द्वारा दोषमुक्त होना, लम्बवत धारियाँ, बेड़ी धारियाँ,

कैम्युफ्लेमिंग के सामान्य नियम, रूप का रंगों के साथ समायोजन, रंग का चतुरता से प्रयोग, रंग और आपका फिगर, कम्प्लीमेन्ट्री फिगर्स-टॉल एण्ड स्लेन्डर, एवरेज एण्ड वेल प्रोपोशन, पेटाइल एण्ड स्लेन्डर, शार्ट एण्ड हैवा, प्लम्स फिगर; फिगर प्रोबलम्स, मैटरनिटी वियर।

फैशन उद्योग

डिजाइनर का दायित्व – डिजाइनर का क्षेत्र, फैशन डिजाइनर के लिए आवश्यक कौशल, वर्किंग इन्वायरमेन्ट; भारतीय फैशन उद्योग, हस्तशिल्प शिल्प उत्पादन का परिमाण व भौगोलिक विस्तार, घरेलू बाजार का आकार, निर्यातक बाजार का आकार, भारतीय फैशन डिजाइनर; पश्चिमी फैशन डिजाइनर।

डी.एफ.डी. -05

फैशन के प्रभाव

फैशन को प्रभावित करने वाले तत्व, फिगर समानुपात, विभिन्न प्रकार के फिगर तथा उन्हें संतुलित करने का तरीका, मानव शरीर का विभिन्न कोणों से निरीक्षण ब्लॉक की ड्रफ्टिंग के लिए 8 हेड थ्योरी और शरीर, फैशन डिटेल, बाजार सर्वेक्षण।

वस्त्र डिजाइन के तत्व

कॉलर गले व जेबो के प्रकार, कफ बो व योक के प्रकार; आस्तीन प्लीट व ड्रॉ स्ट्रिंग्स, स्कर्ट व शीयरिंग के प्रकार।

सिलहौटीज की रचना

को-ऑडिनेटस, मिक्स एण्ड मैच; आधारभूत सिलहौटीज, प्रेरणात्मक उत्पाद;

डिजाइन प्रेरणा

फिगर पर प्रिन्ट का प्रभाव, राज्यों की पोशाकें-काँचीपुरम साडियाँ, बालुचरी गढ़वाल साडियाँ, बनारसी चन्देरी, चिकन, इकत, कोटा, पैठनी, पटन पटोला, टाई एण्ड डाई, जरदोजी, विभिन्न कथावस्तुओं पर आधारित डिजाइनिंग, फैशन शो के लिये डिजाइनिंग।

B. A. FASHION DESIGNING FIRST YEAR

Paper No. -124 Course Code-UG.F.D.-01 Title of Course – Basic Design & Fashion Illustration

DFD – 02 + DFD – 07

DFD-02

Material of Drawing

Introduction to Art material, Basic requirements; Basics of Sketching, Definition of Line, Line Quality; Perspective Drawing; Illustrations for Sketching.

Introduction to Basic Design

Categorization of Design; Elements of Design, Man-made or Geometric shapes, Natural or Organic Shapes, Static Shape, Dynamic Shape, Space, Colour, Pattern, Movement, Typography; Principles of Design, Repetition, Alternation, Dominance of Emphasis, Simplicity, Varirty, Propotio; Categories of Texture.

Colour

Introduction to Colour, Making the Primary Colour Wheel by Fallowing the Pigment Theory, The Teriaary colour Wheel the Names of the Colours; Psychology of Colour; Colour Schemes; Colour & Dress.

Sketching

Compositions; Still Life; Nature Study; Creating Designs.

DFD-07

Basic of Garment Drawing

How to Sketch Gathers Pleats etc; How to Sketch Collars Cuffs etc; How to Colour Gathers Pleats etc; How to Colour cuffs etc.

Basic of Garment Drawing

Stick Figures; Block Figures; Quick Sketches; Postures.

Basic of Figure Garment

Hand Movement; Leg Movement; Figure Sketching; Fashion Figures.

Creating Designs

Creating Designs for Embrodery; Creating Designs for Free Hand

Painting Batik etc; Creating Designs for Stencil Vegetable Printing Screen; Creating a Story Board.

Paper No. -125 Course Code-UG.F.D.-02 Title of Course – Fashion Concepts

DFD – 01 + DFD – 05

DFD-01

Fashion Barries

Objectives, Introduction to Fashion; Categorization of Fashion; IMportance of Accessories, Types of Accessories-Belts, Jwellery, Watches, Hand Bags, Footwear, Umberllas, Bows & Necties, Headgears & Hats, Scarves, Shawls, Muffler, Spectacles, Cosmetrics, Gloves; Differece between hide & Skin, Types of leather, Varnished leather or painted leather, Flanks of Shank, Recognizing leather, Presserving skins, Instruments used for leather, Threads used to stitch leather, Types of polishes.

Glossary

Glosary of Terms used in the clothing industry A to Z

Identifying Fashion

Selction of Fashion, Personality, Clothes Styles & Body shapes; Figure Proportions, Diagram of a normal Figure, Narrow-Shoulder, wide-hip figure types, Camouflaging through optical Illusion, Compliments looks with colour, Clever use of colour, Colour & your figure; Complimentary figures, Tall & slender figures, Tall & angular, Average & well – proportioned, Petite & slender, Short & heavy Plump figures, Figure problems, Maternity wear.

The Fashion Industry

A Designer's responsibility, The designer's field, Skill required by a fashion designer, Working Environment; The Indian Fashion Industry, Handicraft, Extent & Geographical spred of craft production Size of Domestic market, Size of Export market; Indian Fashion Designers; Western Fashion Designers.

DFD-05

Fashion Influences

Factors Influencing Fashion; Figure Proportions; Fashion Details; Market Sruveys.

Elements of Garments Design

Types of Collars, Necklines and Pockets; Types of Cuffs, Bows and Yokes; Types of Sleeves, Pleats and Drawstrings; Types of Skirts and shearings.

Creating Shillhoueties

Co-ordinates : Mix & Match; Basic Sillhoueties; Inspirational Product Design.

Design Inspiration

Effect of Prints of Figure; State outfits-Kanchipuram Sarees, Baluchari, Gadhwal, Sarees, Banasari, Chanderi, Chikan, Ikat, Kota, Pathani, Patan Patola, Tie & Dye, Zardozi; Designing with innovative themes; Designing for a Fashion show.

नोट : सार्टीफिकेट कोर्स हेतु – डी0टी0डी0-01 से
डी0एफ0डी0-3 तक

पेपर नं0- 736 कोर्स कोड-डी.टी.डी.-01 कोर्स शीर्षक– स्केचिंग
डी.टी.डी. -01 + डी.टी.डी. -05
डी.टी.डी. -01

सामग्री

कला सामग्री का परिचय, आपका कार्य स्थल; बेसिक्स ऑफ स्केचिंग, रेखांकन के आधारभूत तत्व, लाइन के गुण; पर्सपेक्टिव ड्राइंग; इलस्ट्रेशन।

इनडोर

आम्ब्जेक्ट ड्राइंग, डिजाइन के लिये प्रयुक्त क्षेत्र; स्थिर चित्रण; कम्पोजिंग सीन्स; सिम्बल्स;

आउटडोर

मोन्यूमेन्टल स्केचिंग, लैंडस्कैप; सी-स्कैप; नेचर स्टडी

रंगना

लेखन, जल रंग, पोस्टर रंग, पेस्टल रंग

डी.टी.डी. -05

प्रकृति

फूलों का अध्ययन, पत्तियों का अध्ययन, वृक्षों की टहनियों का अध्ययन, सब्जियों का अध्ययन।

प्रकृति-2

जानवरों का अध्ययन, पक्षियों का अध्ययन; मछलियों का अध्ययन, तितलियों का अध्ययन।

प्रकृति-3

कीड़े, पहाड़, नदियाँ, आदि; विभिन्न माध्यमों से रेखाचित्रण, विभिन्न माध्यमों में रंगना।

प्रकृति-4

कार्टूनिंग, बिंदुओं द्वारा रेखाचित्र बनाना; डिजाइन रूपान्तरण-1; डिजाइन रूपान्तरण-2

पेपर नं0- 737 कोर्स कोड-डी.टी.डी.-02 कोर्स शीर्षक–बेसिक डिजाइन

डी.टी.डी. -03

डी.टी.डी. -03

डिजाइन

डिजाइन की धारणा, डिजाइन का वर्गीकरण; डिजाइन के तत्व, रेखाओं के प्रकार; डिजाइन के सिद्धान्त; टेक्सचर, टेक्सचर के वर्ग

रंग

रंग की व्याख्या, रंग क्या होता है, रंग के आयाम, रंग चक्र, रंगों का मनोविज्ञान, रंग संयोजन, रंग व डिजाइन।

डिजाइन एडाप्टेशन

डिजाइन बनाना – संरचनात्मक एवं सतही; यथार्थवादी व स्टाइलाइज्ड; ऐब्सट्रेक्ट और पारम्परिक डिजाइन; लोककला।

पुराण शास्त्र

भारतीय पुराण शास्त्र; यूनानी पुराण शास्त्र; ईसाई पुराण शास्त्र, चीनी पुराण शास्त्र

डी.टी.डी. -04

डिजाइन बनाना. मौलिक आकार के साथ डिजाइन का निर्माण; परम्परागत आकार के साथ डिजाइन का निर्माण; अमूर्त आकारों के साथ डिजाइन का निर्माण; चिन्हों द्वारा डिजाइन बनाना।

प्लेसमेन्ट्स

हाथ से छपी डिजाइनों का नियोजन, मशीन से छपी डिजाइनों का नियोजन, बनावटी डिजाइनों का नियोजन, रेखाचित्र (ग्राफ) बनाना।

प्लेसमेन्ट्स

हैन्डीक्राफ्ट्स, आईवोरी-हाथी दाँत से बना सामान, बास्केटरी मैन वीविंग और केन आर्टिकिल्स, स्टोनवेयर, लैकर वर्क आर्ट मेटलवेयर, हस्तशिल्पों से डिजाइनिंग; क्रोक्यूस बनाना, डिजाइन को अंतिन रूप देना।

डिजाइन का निर्माण

वेजीटेबल प्रिन्टिंग के लिए डिजाइनिंग, बाटिक अथवा ब्लॉक के लिए डिजाइनिंग, स्क्रीन के लिए डिजाइनिंग; फ्री-हैण्ड पेन्टिंग के लिए डिजाइन।

डी.टी.डी. -07

भारतीय वस्त्र

कढ़ाईयाँ, स्टि्च के प्रकार, आउट लाइन तथा सतही कार्य; राज्यों की कढ़ाईयाँ,रंगों का प्रयोग करना; कालीन तथा फ्लूर कवरिंग्स, भारत के शिल्प।

भारतीय वस्त्र

भारत की लोक कलाएँ; ब्रोकेड, बाँधनी, बालूचरी इत्यादि; इत्यादि; फुलकारी तथा पहाड़ी रूमाल; पटोला, कॉथा तथा कलमकारी।

प्राचीन यूरोपीय कला

मिश्र की कला, यूनान, रोमन, बैजेन्टाइन।

मध्यकालीन तथा आधुनिक युग

प्रारम्भिक मध्यकालीन कला, उत्तरार्द्ध मध्यकालीन कला, पुर्नजागरण कला; आधुनिक कला

नोट : डिप्लोमा कोर्स हेतु डी0टी0डी0 – 01 से डी0टी0डी0-05 तक

पेपर नं0- 739 कोर्स कोड-डी.टी.डी.-04 कोर्स शीर्षक–टेक्सटाइल थ्योरी

डी.टी.डी. -02 + डी.टी.डी. -06

डी.टी.डी. -02

टेक्सटाइल फाइबर्स -1

सूती, तंतु का वर्गीकरण, तंतु की विशिष्टता, फाइबर कॉटन, सूत बनाने की प्रक्रिया, कोम्बिंग प्रक्रिया के उद्देश्य, रेशे की लम्बाई, रेशों की बेहतर समानन्तरता, रेशों का तुलनात्मक क्रम; लिनेन, कपड़े की पहचान सीधे ओर से करना; तंतु की बनावट तथा रचना,

लिनेन की पहचान लिनेन को प्रेस करना, लिनेन और कपास को पहचानने के लिए आम जॉच; साधारण वानस्पतिक तंतु, लघु वनस्पतिक तंतुः सिमुलेटिड लिनिन कपड़ा, ऊन, ऊन की विशेषताएँ, विशेष प्रकार के ऊन।

टेक्सटाइल फाइबर्स -2

सिल्क, सिल्क की विशेषताएँ तथा गुण, सिल्क के प्रकार, सिल्क की देखभाल, सिल्क की सिलाई; थर्मोप्लास्टिक फाइबर, आर्टिफिशियल कपड़े के गुण, मानव निर्मित फाइबर, खनिज तंतु, ऐसबेस्टस एकल प्राकृतिक तंतु, ऐसबेस्टस को बनाने की प्रक्रिया, स्टोनवूल का निर्माण, मेटल फाइवर तथा उनके महत्व; रेयाँन, रेयॉन की सम्भावना, रेयॉन की सिलाई, नायलॉन, प्रोपर्टीज, नायलॉन के प्रकार।

टेक्सटाइल तंतु-तृतीय

सूत निर्माण, उब्लिंग के सिद्धान्त, सिलाई का धागा, कपड़े की बुनाई, धागा बनाना; फैब्रिक फिनिशिंग, रंगाई तथा छपाई; कपड़े पर डिजाइन अंकित करना, डिजाइन के प्रकार।

अपने कपड़े को पहचानें

टेक्सटाइल तथा वस्त्र, सिल्क, ऊनी कपड़े, कॉटन, लिनेन,रेयाँन व एसीटेट ब्लैंड, कपड़े की देखरेख; वार्डरोब प्लानिंग, टेक्सटाइल डिजाइनर की भूमिका, अपारेल डिजाइनर, मैटेरियल डिजाइनर, टेक्सटाइल डिजाइनर।

डी.टी.डी. -06

फैब्रिक मेन्टेनेन्स

धुलाई, भारतीय उपभोक्ता संगठन, काटन एवं लिनेन की धुलाई, ऊनी कपड़ों की धुलाई, रेयॉन एवं नायलॉन की धुलाई, कलफ करना, स्टार्च के प्रकार, कलफ की प्रकृति, ताप की आवश्यकता, धब्बों को हटाना, धब्बों को छुड़ाने का आधार, वस्त्रों की पहचान।

ग्लोसरी ए से जेड तक

तृतीय खण्ड-विभिन्न प्रकार के वस्त्र बनाना

बुनाई, सूइयों के प्रकार, ज्वेल बाइन्डिंग, बेसिक नेटिंग, अल्टरनेटिंग मेश, डॉयमंड मेश, रिलीजिंग मेश, वाइड मेश, सरकुलर कोना, आयताकार वर्ग, त्रिकोण, लेस मेकिंग,लेस फिलिंग, स्प्रैंग।

प्रिन्टिंग के उपकरण

औजार, मशीनें, लूम्स; टेक्सटाइल उद्योग

पेपर नं0- 740 कोर्स कोड-डी.टी.डी.-05 कोर्स शीर्षक–टेक्सटाइल क्राफ्ट

डी.टी.डी. -08

छपाई के आधारभूत तत्व

पेपर पैटर्न बनाना, स्टेन्सिल बनाना, ब्लॉंक बनाना, स्क्रीन बनाना।

प्रिन्टिंग के प्रकार

वेजीटेबल प्रिन्टिंग, फैब्रिक प्रिन्टिग, फ्री-हैण्ड पेन्टिग, इम्बोस्ड पेन्टिंग।

डाइंग तथा एडवांस्ट प्रिन्टिग

टाई एण्ड डाई; बाटिक, फोटोग्राफिक स्क्रीन; डिस्चार्ज प्रिन्टिग।

विशेष ट्रीटमेन्ट्स

कॉम्बिनेशन प्रिन्टिंग; टेक्सचर्स; लेस बनाना; मैक्रमे

डी.टी.डी. -09

डाईज - 1

टेक्सटाइल डाईज, डाई के स्त्रोत, डाईज तथा वस्त्र; पिगमेन्ट्स (रंजनक), समूह, रंजनकों के तीन मूलभूत वर्ग कलरेशन चार्टस; रंगों को प्रभावित करने वाले तथ्य, कलर रिमूवर्स, डाई वर्गीकरण, एसिड डाईज, एजोइक अथवा नैपथाल डाईज, बेसिक डाईज, डायरेक्ट डाईज, डिसपर्स डाईज, मॉरडेन्ट डाईज, प्रीमेटलाइज्ड डाईज, रिएक्टिव डाईज, सल्फर डाईज, वैट डाईज, फ्लोरोसेन्ट ब्राइटेनर्स।

डाईज-2

सल्फर डाईज, मॉरडेन्ट डाईज, वैट डाईज; प्राकृतिक डाईज।

डाईज-3

संश्लेषित डाईज, खनिज डाईज, एसीटेट डाईज, डाईज फिक्सेशन

आधुनिक ऐप्लीकेशन्स

डिजाइन का हस्तान्तरण, वस्त्रें की डिजिटल प्रिन्टिंग पेन्टिंग प्रिन्टिंग, डायरेक्ट प्रिन्टिंग के लाभ, हीट ट्रॉन्सफर के लाभ, नॉन टेक्सटाइल डाईज, रंजनकों की महत्वता, एक्सटेन्डर रंजनक, वाहनों के प्रकार, कलरवेज

Note – For Certificate Course – DTD-01 to DTD-03

Paper No. -736 Course Code-D.T.D.-01 Title of Course – Sketching

DFD – 01 + DFD – 05

DTD-01

Material

Introduction to Art Material, Your work place; Basics of Sketching, Definition of Line, quality of Line; Perspective Drawing; Illustration.

Indoor

Object Drawing, Place for Design; Still Life; Composing Scense Symbols.

Outdoor

Monumental Sketching; Land Scapes; Sea-scapes; Nature.

Colour

Writing; Water colour; Poster Colour; Pastel

DTD-05

Nature -1

Flower Study; Leaf Study; Trees & Twigs study; Vegetable Study.

Nature -2

Animal Study; Bind Study; Fishes Study; Butteries Study.

Nature -3

Insects; Mountains Rivers etc; Sketching With Different Mediums; Colouring With Different Mediums.

Nature -4

Cartooning; Rendering Sketches; Design Conversion-1; Design Conversion-2

Paper No. -737 Course Code-D.T.D.-02 Title of Course – Basic Design

DFD – 03

DTD-03

Design

Design Concept, Categorization of Design; Elements of Design, Types of Lines; Principles of Design; Textures, Categories of Texture.

Colour

Colour Theory, What is Colour, Dimensions of Colour, The Colour wheel; Psychology of colour; Colour Schemes; Colour & Design.

Design Adaptation

Design Generation – Structural & Surface; Reelistic & Stylised Designs; Abstract & Traditionsl Designs; Folk Art.

Mythology

Indian Mythology; Greek Mythology; Christian Mythodology; Chinese Mythology.

Paper No. -738 Course Code-D.T.D.-03 Title of Course – Design Ideas

DFD – 04 + DTD-07

DTD-04

Making Design

Generation of Designs with basics shapes; Generation of Designs with Traditional Shapes; Generation of Designs with abstract shapes; Generation of Designs with symbols.

Placements

Placements of hand printed Designs; Placements of Machine printed designs; Placements of woven designs; Making Graphs.

Placements

Handicrafts, Ivory, Basketry, Mat weaving & Cane articles, Stone ware, Lacquer work, Art Metalware; Designing from Handicrafts; Making croquis; Finalising a design.

Generation of Design

Design for vegetable printing; Designing for Batik & Block; Designing for Screen; Design for free hand painting.

DTD-07

Indian Fabrics

Embroideries, Kinds of Stitches Outline & Surface Work; State Embrodies, Using Colours; Carpet & Floor Covering; Crafts of India.

Indian Textile

Folk Arts of Indian; Broacades Baluchari Bandhani etc; Phulkari & Pahadi Rumals; Patola Kantha & Kalamkari.

Ancient European Art

Egyption; Greek; Roman; Bazantine.

Medieval & Modern Period

Early Medieval Art; Later Medieval Art; Rennaissance art; Modern Art.

Note – For Diploma Course – DTD-01 to DTD-05

Paper No. -739 Course Code-D.T.D.-04 Title of Course – Textile Theory

DFD – 02 + DFD – 06

DTD-02

Textile Fibres

Cotton, Classification of Fibres, Quality of Fibers, Cotton, Preparation of Cotton, The Objective of the Combing Process are – Fibres of Length Parallelisation of the Fibers, The Relative Order of the Fibres; Linen, Identifing the Right Side, Structure & Composition of the Fibre, Identifying Linen, Pressing Linen, Common tests for Linen & Cotton in Cloth; Minor Vegetable Fibers, Short Vegetable Fibres, Simulated Linen Fabries, Wool, Properties of Wool, Properties of Special Wools.

Textile Fibres-2

Silk, Properticsoof Silks, Manufacturing of Silk, Sewing Silk; Thermoplastic Fabres, Properties of Artifical Cloth, Manmade Fibres; Mineral Fibres, Asbestos the One Natural Mineral Fibre, Processing of Abestos, Manufacture of Stone Wool, Metal Fibers and their Importance; Rayons, Pressing Rayons, Sewing Royons, Nylon, Propertie, Types of Nylon.

Textile Fibres-3

Yarn Construction, Principal of Doubling; Sewing Threads; Fabric Weaving, Making Threads; Fabric Finishes, Dyeing and Printing; Obtaining Design on Fabric, Types of Designs.

Know Your Fabric

Textile and Clothing, Silk Wool Cotton Linen Rayons, Acitate Blande; Care of Fabrics; Wardrobe Planning; Role of a Textile Designer, Apparel Designer Material Design, Textile Design.

DTD-06

Fabric Maintanance

Laundering, Consumer Association of India Laundering of Cotton & Linen, Laundering of Woolens, Laundering of Rayons & Linen; Stiffering, Kinds of Starch, Stiffening of Tatted Fabrics & Laces, Haet is Essential; Stain Removals; Fabric Indentification.

Glossary

Glossary A to Z

Making of Different Fabrics

Kniting, Types of Needles; Nalebinding, Basic Netting Alternating Mesh; Diamond Mesh, Relesing Mesh, Wide Mesh, Circular Netting, Rectangles, Square, Triangle; Lace Making Lace Making; Springs.

Printing Equipment

Tools Machines; Looms, The Textile Industery.

Paper No. -740 Course Code-D.T.D.-05 Title of Course – Textile Theory

DFD – 08 + DFD – 09

DTD-08

Basics to Printing

Making Paper Patterns; Making Stencil; Making Blocks; Making Screens.

Type of Printing

Vegetable Printing; Fabric Printing; Free hand Painting; embossed Painting.

Dyeing & Advanced Printing

Tie & Dye; Batik; Photographic Screen; Discharge Printing.

Special treatments

Combination Printing; Texture Printing; Lace Making; Macrame.

DTD-09

Dyes-1

Textile Dyes, Dye Source, Dyes or Fabrics; Pigments, Pigments Groups, There are Three Basic Classes of Pigments; Colouration Charts; Factors Affecting Colour, Colour Removers, Dye Classification, Acid or Napthol Dyes, Azoic or Napthol Dyes, Basic Dyes, Direct Dyes, Dispers Dye, Mordant Dyes, Reactive Dye, Premetallised Dyes, Sulphur Dyes, Vat Dyes, Flurescent Brighteners.

Dyes-2

Sulphar Dyes; Mordant Dyes; Vat Dyes, Natural Dyes.

Dyes-3

Sythertic Dyes; Mineral Dyes; Acetate Dyes; Dye Fixation.

Modern Application

Transfering of Designs; Digital Printing of Textiles, Painting, Printing. The Benefits of Direct Printing, The Benefits of Heat Transfer, Non Textile Dyes, Importance of Pigments, Extender Pigments, Types of vehicles; Colour Ways.

नोट : सार्टीफिकेट कोर्स हेतु – डी0 एफ0डी0-01 से डी0एफ0डी0-3 तक

पेपर नं0- 730 कोर्स कोड-डी.एफ.डी.-01 कोर्स शीर्षक– फैशन जनरल नालेज

डी.एफ.डी.-01 + डी.एफ.डी.-06

डी.एफ.डी. -01

सामान्य फैशन

फैशन की प्रस्तावना, फैशन का परिचय, फैशन का वर्गीकरण, एसेसरीज का महत्व-1. बेल्टस, 2. आभूषण, 3. घड़ियाँ, 4. हाथ के थैले, 5. फूटवियर, छतरी, 7. बोज और नेकटाईज, 8. हेडगियर, 9. स्कार्फस्, 10. सॉल, 11. मफलर, 12. चश्में, 13. कास्मेटिक, 14. दस्ताने, खाल और त्वचा में अन्तर-1. चमड़े के प्रकार, 2. वार्नीशेड लेदर या पेन्टेड लेदर, 3. फ्लैक्स ऑफ शैक, 4. चमड़े की पहचान, 5. खाल को परिक्षित करना, 6. चमड़ के लिए प्रयुक्त औजार, 7. चमड़े को सिलने के धागे, 8. पाँलिश के प्रकार।

ग्लोसरी

फैशन में प्रयोग होने वाले शब्द ए से जेड तक।

फैशन की पहचान

फैशन की चुनाव, स्टाइल की पहचान, कपड़ों का स्टाइल व शरीर का आकार; फिगर का समानुपात, आधारभूत फिगर प्रकार, पतले धन्धे नितम्ब प्रकार का आकार, चौड़े कन्धे पतले हिप्स फिगर प्रकार, द्रष्टिभ्रम द्वारा दोषमुक्त होना, लम्बवत् धारियाँ, बेड़ी धारियाँ, कैम्युफ्लेगिंग के सामान्य नियम, रूप का रंगों के साथ समायोजन, रंग का चतुरता से प्रयोग, रंग और आपका फिगर, कम्प्लीमेन्ट्री फिगर्स-टॉल एण्ड स्लेन्डर, टॉल एण्ड स्लेन्डर एवरेज एण्ड वेल प्रोपोशन, पेटाइल एण्ड स्लेन्डर, शार्ट एण्ड हैवी, प्लम्प फिगर; फिगर प्रोबलम्स, मैटरनिटी वियर।

फैशन उद्योग

डिजाइनर का दायित्व- डिजाइनर का क्षेत्र, फैशन डिजाइनर के लिये आवश्यक कौशल, बर्किंग इन्वायरमेन्ट; भारतीय फैशन उद्योग, हस्तशिल्प, शिल्प उत्पादन का परिणाम व भौगोलिक विस्तार, घरेलू बाजार का आकार, निर्यातक बाजार का आकार, भारतीय फैशन डिजाइनर; पश्चिमी फैशन डिजाइनर।

डी.एफ.डी. -06

प्राचीन भारतीय युग

सिन्धु घाटी सभ्यता 2500 बी0सी0 1500 बी0सी0, सिन्धु घाटी सभ्यता के रेखांकन, वैदिक युग, मौर्य तथा शुग काल, मौर्य तथा शुंग काल का रेखांकन; कुषाण काल, गन्धार काल; गन्धार काल; गुप्त काल, गुप्त काल के बाद के वस्त्र।

मुगल भारत

मुगल काल के वस्त्र, बाबर, हुमायूँ तथा अकबर; जहाँगीर, शाहजहाँ तथा औरंगजेब, मुगल काल के पश्चात्।

पाश्चात् फैशन

ग्रीक तथा रोमन काल, रोमन काल-पहली से पाँचवी शताब्दी ईसा पश्चात् इटालियन तथा ब्रिटिश काल, मध्यकालीन इटालियन युग (11वीं से 15वीं शताब्दी), इटली का पुनरूत्थान (13वीं से 16वीं शताब्दी पश्चात्), चार्लस; लुइस चतुर्दश।

16वीं शताब्दी पश्चात्

प्रथम साम्राज्य – 1799-1815; फ्रेन्च पुनरूत्थान; विक्टोरियन युग; बीसवीं शताब्दी के वस्त्र।

पेपर नं0- 731 कोर्स कोड-डी.एफ.डी.-02 कोर्स शीर्षक– बेसिक डिजाइन एवं स्केचिंग

डी.एफ.डी. -02 + डी.एफ.डी. -07

डी.एफ.डी. -02

रेखांकन व सामग्री

कला सामग्री का परिचय; बेसिक रिक्वायरमेन्ट्स; बेसिक्स ऑफ स्केचिंग, लाइन की परिभाषा, लाइन के गुण; पर्सपेक्टिव ड्रॉइंग; इलस्ट्रेशन्स फॉर स्केचिंग।

बेसिक डिजाइन का परिचय

डिजाइन का वर्गीकरण; इलीमेन्ट ऑफ डिजाइन, मानव निर्मित या ज्यामितीय शेल्स, प्राकृतिक या ऑरगेनिक शेल्स, स्थिर आकार, गतीय आकार, स्पेस, कलर, पैटर्न, मूवमेन्ट, टाइपोग्राफी, टेक्सचर; प्रिन्सपल्स ऑफ डिजाइन, रेपिटेशन, अलटेरेशन, डोमिनेन्स

या इम्फेसिस, सिम्पलीसिटी, वेरायटी, प्रोपोर्सन; टेक्सचर्स के वर्ग।

रंग

इन्ट्रोडक्शन टू कलर, प्राइमरी कलर व्हील का पिगमेन्ट थ्योरी के अनुसार निर्माण, दा टेरीटेरी कलर व्हील विद् दा नेम्स ऑफ दा कलर्स टिन्ट्स साइक्लोजी ऑफ कलर्स, कलर स्कीम्स; कलर एण्ड ड्रेस।

स्केचिंग

कम्पोजीशन्स; स्थिर चित्रण (स्टिल लाइफ); प्रकृति अध्ययन (नेचर स्टडी), डिजाइन की रचना करना अध्ययन (नेचर स्टडी); डिजाइन की रचना करना।

डी.एफ.डी. -07

बेसिक्स ऑफ गारमेन्ट ड्राइंग

गैदर्स, प्लीट्स आदि की स्केचिंग; कालर्स एवं कफ्स् आदि का रेखांकन; प्लेट्स एवं गैदर्स आदि को रंगने का तरीका; कॉलर, कफ आदि में रंग भरना।

बेसिक्स ऑफ फिगर ड्राइंग

स्टिक फिगर्स; ब्लाँक फिगर्स; क्विक् स्केचेस; पोस्चर्स।

बेसिक्स ऑफ गारमेन्ट ड्राइंग

हाथ के घुमाव; पैर के घुमाव; फिगर स्केचिंग फैशन फिगर।

डिजाइन की रचना

कढाई के लिए डिजाइन की रचना करना; फ्री-हैण्ड पेन्टिंग और बाटिक इत्यादि के लिए डिजाइन की रचना करना; स्टेन्सिल, वेजीटेबिल, स्क्रीन प्रिन्टिंग आदि के लिए डिजाइन की रचना करना, प्रयोग की जाने वाली वस्तुएँ; स्टोरी बोर्ड बनाना।

पेपर नं0- 732 कोर्स कोड-डी.एफ.डी.-03 कोर्स शीर्षक– डिजाइन आइडियाज

डी.एफ.डी. -05 + डी.एफ.डी. -09

UGPH-01
(नीति शास्त्र)

नीति शास्त्र का स्वरूप और क्षेत्र, नीति शास्त्र की परिभाषा, कुछ नैतिक शब्दो का अर्थ, सदगुण, मूल्य, नीतिशास्त्र की विधाएं, आदर्श मूलक नीतिशास्त्र, अधि- नीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र का क्षेत्र, क्या नीतिशास्त्र व्यावहारिक विज्ञान है, नीतिशास्त्र का अन्य शास्त्रो से संबंध , मनोविज्ञान और नीतिशास्त्र, समाजशास्त्र और नीतिशास्त्र, राजनीतिशास्त्र और नीतिशास्त्र, तत्वमीमांसा और नीतिशास्त्र, धर्म और नीतिशास्त्र।

यूनानी नैतिक दर्शन सामान्य परिचय

सुकरात पूर्व युग – सोफिस्टस सुकरात (469-399 ईसा पूर्व) सेरेनेक्स और सिनिकस प्लेटो (427-347 ईसा पूर्व) प्रत्ययो का सिद्धान्त, मुख्य सदगुण, संतुलित और सामजस्यपूर्ण जीवन , अरस्तू (384-322 ईसा पूर्व) सदगुणो का स्वरूप, मध्य मार्ग का सिद्धान्त, ऐच्छिक कर्मो की परिभाषा, आदर्श नैतिक जीवन ।

स्वार्थवाद और सुखवाद सामान्य परिचय

स्वार्थवाद का स्वरूप और वर्गीकरण,नैतिक स्वार्थवाद, मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद, सुखवाद का स्वरूप और वर्गीकरण, सुख की परिभाषा, नैतिक सुखवाद, मनोवैज्ञानिक सुखवाद।

उपयोगितावाद सामान्य परिचय

कर्म सम्बंधी उपयोगितावाद, नियम संबंधी उपयोगितावाद, आदर्शमूलक उपयोगितावाद, जरमी बेथम, जॉन स्टुअर्ट मिल, हेनरी सिजविक।

विकासात्मक नैतिक सिद्धान्त सामान्य परिचय

हरबर्ट स्पैन्सर, लेसली स्टीफेन, सैमुअल अलेक्जेण्डर, लाएड मार्गन

आत्मपूर्णतावाद सामान्य परिचय

हीगेल, कानूनी अधिकार अथवा बाध्यता, अंतः प्रेरित नैतिकता, वैयक्तिक और सामाजिक हित का एकीकरण, ग्रीन, ब्रेडले, व्यक्ति और समाज का संबंध, सामाजिक समझौते का सिद्धान्त, समाज की आंगिक धारणा।

अंतः प्रज्ञावाद सामान्य परिचय

बौद्धिक अंतः प्रज्ञावाद रैल्फ कडवर्थ , क्लार्क, नैतिक संविति का सिद्धान्त, शैफटसबरी, हचिसन, अंतर्विवेक सिद्धान्त – बटलर। विशिष्ट प्रवृत्तियॉ, आत्मप्रेम और परोपकार, अंतर्विवेक, नव्य अन्तः प्रज्ञावाद, जी0ई0 मूर,

एच0ए0 प्रिचर्ड, डब्लू0 डी0 रॉस।

कान्ट का निरपेक्ष आदेश का सिद्धान्त सामान्य परिचय

शुभ संकल्प का स्वरूप और महत्व, कर्तव्य का स्वरूप और महत्व, सापेक्ष और निरपेक्ष आदेश, मुख्य नैतिक सिद्धान्त, सार्वभौमिकता का नियम, मनुष्यता को साध्य मानने का नियम, स्वाधीनता का नियम, साध्यो के साम्राज्य का नियम, नैतिकता की आवश्यक मान्यताएं, संकल्प की स्वतंत्रता, आत्मा की अमरता, ईश्वर का अस्तित्व, मूल्यांकन

संकल्प – स्वातन्त्रय और नैतिक उत्तरदायित्व सामान्य परिचय

संकल्प की स्वतंत्रता का अर्थ, कर्म करने की क्षमता, ज्ञान और उद्देश्य, विकल्पो की उपस्थिति, नियतत्ववाद और अनियतत्ववाद, नैतिक उत्तरदायित्व, दंड के सिद्धान्त, प्रतिरोधात्मक सिद्धान्त, सुधारात्मक सिद्धान्त, प्रतिकारात्मक सिद्धान्त।

नैतिक निर्णयो का स्वरूप और प्रमाणीकरण सामान्य परिचय

विश्लेषणात्मक नीतिशास्त्र की समस्याएं, प्रकृतिवाद, व्यक्तिनिष्ठवाद, वस्तुनिष्ठवाद, संवेगवाद, कार्नेप और एयर, स्टीवेन्सन । परामर्शवाद, हेयर, नावल स्मिथ।

व्यक्तित्व और समाज सामान्य परिचय

व्यक्ति और समाज का संबंध, स्वार्थवाद, परार्थवाद, सर्वार्थवाद, अधिकार, जीवन का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, रोजगार का अधिकार, सम्पत्ति का अधिकार, समझौते का अधिकार, कर्तव्य, नैतिक प्रगति।

भारतीय नैतिक दर्शन

सामान्य परिचय , भारतीय नैतिक दर्शन का विकास, गीता का नैतिक दर्शन, जैन नैतिक दर्शन, बौद्ध नैतिक दर्शन, महात्मा गॉधी का नैतिक दर्शन, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रहमचर्य, निष्कर्ष ।

पुस्तक - नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त

लेखक - वेद प्रकाश वर्मा

UGPH-02
(समाज दर्शन)

समाज दर्शन की प्रकृति, विषयवस्तु तथा अन्य विषयो से इसका संबंध विषय प्रवेश, समाज दर्शन क्या है, समाज दर्शन एक नियामक विज्ञान है, समाज दर्शन की प्रकृति समाज दर्शन का विषय क्षेत्र।

परिवार

परिवार की प्रकृति एवं उसकी परिभाषा, परिवार की उत्पत्ति, परिवार के कार्य, परिवार के विषय मे विभिन्न मत, परिवार की कमियॉ, भारत मे परिवार के प्रकार, संयुक्त परिवार, संयुक्त परिवार की विशेषताएं, संयुक्त परिवार के प्रकार, कार्य विशेषताएं, समस्याएं विघटन के प्रमुख कारण, संयुक्त परिवार का भविष्य, केन्द्रीय परिवार, विस्तृत परिवार।

समाज

समाज की प्रकृति व परिभाषा, समाज समुदाय एवं समितियॉ, समाज के प्रमुख तत्व, आधार, सामाजिक समझौते के सिद्धान्त, विकासवादी सिद्धान्त, समाज एवं व्यक्ति का संबंध, उत्पत्ति , दैवी उत्पत्ति का सिद्धान्त, व्यक्तिवादी सिद्धान्त।

राज्य

राज्य, राज्य की परिभाषा, राज्य के मूल तत्व, राज्य की उत्पत्ति के सिद्धान्त, दैवी उत्पत्ति का सिद्धान्त, शक्ति का सिद्धान्त, सामाजिक समझौते का सिद्धान्त, हॉब्स, लॉक, रूसो का सामाजिक समझौते का इतिहास, समझौते का कारण, समझौते का स्वरूप, राज्य सत्ता का स्वरूप, आलोचना।

लोकतंत्र

अर्थ एवं परिभाषा, इसके समर्थन मे दिये जाने वाले तर्क, लोकतंत्र के विरूद्ध तर्क, लोकतंत्र की आलोचनाओ का मूल्यांकन, शासन के प्रकार- संसदीय और अध्यक्षीय शासन, संसदीय शासन प्रणाली।

समाजवाद

समाजवाद, अर्थ, इसकी परिभाषाएं, इतिहास, विशेषताएं, समाजवाद के प्रमुख रूप- कल्पनावादी समाज, वैज्ञानिक समाजवाद, आलोचना, भारत मे समाजवाद का विकास, प्रजातांत्रिक समाजवाद, समाजवाद का साधन।

साम्यवाद

अर्थ, परिभाषा, साम्यवाद का स्रोत, मार्क्स और हीगेल का प्रभाव द्वंद्वात्मक भौतिकवाद, वर्ग संघर्ष की धारणा, आर्थिक निर्धारणवाद, अतिरिक्त मूल्य का सिद्धान्त, परिवार धर्म आदि का लोप,मार्क्सवाद का मूल्यांकन।

सर्वाधिकारवाद

अर्थ एवं परिभाषा, सर्वाधिकारवादी राज्य की विशेषताएं,

फासीवाद

अर्थ, परिभाषा, एवं विषय प्रवेश, राज्य संबंधी अवधारणा, राजनीतिक दायित्व, फासीवाद का मूल्यांकन।

गॉधीवाद

गॉधीवाद का अर्थ, गॉधी के सामाजिक एवं राजनैतिक विचार, सर्वोदय की अवधारणा, राज्य संबंधी अवधारणा,विकेन्द्रीकरण राजनीतिक दायित्व, सत्याग्रह, गुण, मूल्यांकन, सर्वोदय का मूल्यांकन।

अराजकतावाद

अर्थ, परिभाषा एवं परिचय, अराजकतावाद की प्रणालियां, अराजकतावाद की प्रमुख विशेषताएं, आलोचना।

धर्मतंत्र

धर्मतंत्र का अर्थ परिभाषा एवं प्रकार, समीक्षा।

संविधानवाद

अर्थ एवं परिभाषा, संविधानवाद के आधार, इतिहास, उददेश्य संविधान की अवधारणाएं।

आतंकवाद

अर्थ एवं परिभाषा इतिहास, कारण, भारत मे आतंकवाद का विकास, रोकने के उपाय।

क्रान्ति

अर्थ एवं परिभाषा, क्रान्ति की विशेषताएं, क्रान्तियो के कारण स्तर, क्रान्तियों के सिद्धान्त, रोकने के उपाय ।

राजनीतिक अवधारणायें

अधिकार, न्याय, स्वतंत्रता, समानता, संप्रभुता, राजनीतिक दायित्व, अधिकारो का वर्गीकरण।

भारतीय सामाजिक व्यवस्थाएं

वर्ण व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति के सिद्धान्त, विभिन्न वर्णो की स्थिति, वर्ण व्यवस्था का महत्व, वर्ण तथा जाति मे अन्तर,आश्रम व्यवस्था, पुरूषार्थ, विवाह संस्कार, विवाह का उददेश्य एवं प्रकार, अनुलोम तथा प्रतिलोम विवाह।

परम्परा तथा आधुनिकता

परिभाषा एवं विषय क्षेत्र, परंपरा के संबंध मे पश्चिमी विचारको के मत, भारतीय विचारधारा मे परंपरा के संबंध मे धारणा।

आधुनिकता उत्तर आधुनिकता एवं संस्कृति

परिभाषा विषयक्षेत्र एवं आधुनिकता की विशिष्टताएं, उत्तर आधुनिकता और विश्व संस्कृति।

मनु

अर्थ एवं काल, मनु की राज्य और सत्ता संबंधी अवधारणा राजा के संबंध मे मनु का मत, मनुस्मृति के अनुसार शासन के सिद्धान्त, कानून और न्याय व्यवस्था।

आदर्श समाज व्यवस्था का मापदंड

अर्थ, विषयक्षेत्र, एवं विकास, आदर्श समाज व्यवस्था के लक्ष्य।

आदर्शवाद

परिभाषा, आदर्शवाद का विकास, मनुष्य और समाज, सामाजिक और राजनीतिक मूल्य, राज्य, शक्ति और प्राधिकार कानून और अधिकार, राजनीतिक दायित्व, न्याय का आदर्श।

प्राचीन यथार्थवाद

परिभाषा, अर्थ एवं विचारधारा का विकास, मनुष्य और समाज की अवधारणा, सामाजिक और राजनीतिक मूल्य, राज्य शक्ति और प्राधिकार, कानून का अधिकार, राजनैतिक दायित्व, न्याय का आदर्श।

दार्शनिक उदारवाद

दार्शनिक उदारवाद, मनुष्य और समाज, सामाजिक और राजनैतिक मूल्य, राज्य शक्ति और प्राधिकार।

दंड के सिद्धान्त

दंड के सिद्धान्त का महत्व एवं धारणा, दंड के सिद्धान्त, प्रतिशोध का सिद्धान्त, निवर्तनवादी सिद्धान्त, सुधारवादी सिद्धान्त, दंड का आदर्शात्मक सिद्धान्त, मृत्युदंड की समस्या, दंड के संबंध मे कुछ प्रसिद्ध विचारको के मत।

सामाजिक परिवर्तन

विषय प्रवेश एवं परिभाषा, सामाजिक परिवर्तन के प्रतिमान, सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएं।

लिंगीय समानता

लिंगीय समानता का अर्थ, स्त्री-पुरूष एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, स्त्रियों की स्थिति, अस्तित्ववादी विश्लेषण, वर्तमान शताब्दी मे स्त्रियो की स्थिति।

पारिस्थितिकीय दर्शन

मानवतावाद

मानवतावाद का अर्थ, मानवतावाद के प्रकार- धर्मसंगत मानवतावाद एवं धर्मविरोधी मानवतावाद, कोलिल लामोण्ट का मानवतावादी विश्व दर्शन, मानवतावाद की सामान्य विशेषताएं, मूल्यांकन।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं प्रगति

वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और प्रौद्योगिकीय विकास, वैज्ञानिक प्रगति का मूल्यांकन, प्रगति का स्वरूप, निष्कर्ष।

धर्म निरपेक्षतावाद

धर्म निरपेक्षतावाद का अर्थ एवं परिभाषा, धर्म निरपेक्ष राज्य की विशेषताएं।

पुस्तक - समाज दर्शन

लेखक- डा0 शिव भानु सिंह

UGPH-03
धर्म दर्शन

धर्म दर्शन का स्वरूप और क्षेत्र

धर्म का अर्थ, दर्शन का अर्थ, धर्म दर्शन की परिभाषा, धर्म दर्शन का क्षेत्र, धर्म दर्शन की विधियॉ, धर्म दर्शन की आवश्यकता।

धर्म का उदगम और विकास

धर्म के मूल स्रोत, सर्वात्मवाद, मानववाद और टोटेमवाद, आदिम धर्म की सामान्य विशेषताएं, वैदिक कालीन धर्म, राष्ट्रीय तथा विश्वव्यापी धर्मो का विकास, धर्म के विकास की अविच्छिन्न्र परंपरा।

ईश्वर के अस्तित्व के लिए प्रमाण

ईश्वर के अस्तित्व का अर्थ, सृष्टिमूलक प्रमाण, प्रयोजनमूलक प्रमाण, नीतिपरक प्रमाण, धार्मिक अनुभव संबंधी प्रमाण, प्रत्यय-सत्ता-प्रमाण, निष्कर्ष।

ईश्वर का स्वरूप और जगत के साथ उसका संबंध

ईशवर के तत्वमीमांसीय गुण, ईश्वर की व्यक्तित्वपूर्णता और उसके नैतिक गुण, ईश्वर और विश्व रचना, ईश्वर और जगत के संबंध के विषय मे कुछ प्रमुख सिद्धान्त, ब्रहमा और परमतत्व।

प्रार्थना का स्वरूप और उसकी दार्शनिक समस्याएं

प्रार्थना का स्वरूप, उददेश्य तथा उदगम, ईश्वर विषयक प्रार्थना की कुछ प्रमुख दार्शनिक कठिनाइयॉ, प्रार्थना का प्रभाव और उसकी आवश्यकता।

ईश्वरवाद और अशुभ की समस्या

अशुभ का अर्थ और वर्गीकरण, अशुभ की समस्या का स्वरूप, कुछ मुख्य समाधान, निष्कर्ष ।

धार्मिक अनुभव और रहस्यवाद

अनुभव का अर्थ और वर्गीकरण, धार्मिक अनुभव का स्वरूप, रहस्यवाद का स्वरूप और वर्गीकरण, रहस्यवाद और धर्म, रहस्यवाद और ज्ञान।

धार्मिक ज्ञान और आस्था

ज्ञान का अर्थ, ज्ञान का वर्गीकरण, धार्मिक ज्ञान का स्वरूप, श्रुति आस्था और तर्कबुद्धि।

धार्मिक भाषा

पृष्ठभूमि, असंज्ञानात्मक सिद्धान्त, संज्ञानात्मक सिद्धान्त, उपयोग-सिद्धान्त, निष्कर्ष।

धर्म और नैतिकता

नैतिकता का स्वरूप, धर्म और नैतिकता का संबंध।

आत्मा की अमरता

आत्मा की अमरता का अर्थ और वर्गीकरण, आत्मा की अमरता की प्रमाणिकता, क्या आत्मा की अमरता का विचार सार्थक है? निष्कर्ष।

कर्मवाद और पुनर्जन्म का सिद्धान्त

कर्मवाद और पुर्नजन्म का अर्थ, कर्मवाद की दार्शनिक समस्याएं, पुर्नजन्म का सिद्धान्त और उसकी कुछ दार्शनिक समस्याएं, निष्कर्ष।

मोक्ष और उसके साधन

मोक्ष का स्वरूप, मोक्ष के साधन, वर्तमान युग मे मोक्ष की उपादेयता।

धर्म के विरूद्ध कुछ चुनौतियॉ

पृष्ठभूमि, विज्ञान और धर्म, मार्क्सवाद और धर्म, मनोविश्लेषणवाद और धर्म, मानवतावाद और धर्म।

सर्व-धर्म समन्वय तथा सार्वभौम धर्म की समस्या,

सर्व-धर्म-समन्वय का अर्थ, सार्वभौम धर्म की संभावना, सर्व-धर्म सम्भाव और कुछ धार्मिक सहिष्णुता।

धर्म निरपेक्षवाद – कुछ भ्रांतियां का उन्मूलन

धर्मनिरपेक्षवाद की भ्रामक व्याख्या, धर्मनिरपेक्षवाद का अर्थ, धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र की प्रमुख विशेषताएं, धर्मनिरपेक्षवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, क्या भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है?

धर्म परिवर्तन कुछ समस्याएं और समाधान

धर्म-परिवर्तन का अर्थ, धर्म-परिवर्तन के मुख्य कारण, धर्म-परिवर्तन का औचित्य।

धार्मिक सहिष्णुता

सहिष्णुता और असहिष्णुता का अर्थ, धार्मिक असहिष्णुता और उसके कुछ मुख्य कारण, धार्मिक सहिष्णुता की आवश्यकता और उसके कुछ प्रमुख उपाय।

धर्म और वैज्ञानिक दृष्टिकोण

धर्म और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अर्थ, धर्म और वैज्ञानिक दृष्टिकोण मे आधारभूत अंतर, निष्कर्ष।

तर्कबुद्धि और धर्म

तर्कबुद्धि का स्वरूप, धार्मिक जीवन मे तर्कबुद्धि का स्थान।

निरीश्वरवादी धर्म

निरीश्वरवादी और धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म।

पुस्तक - धर्म दर्शन

लेखक- डा0 शिव भानु सिंह

UGPH-04
तर्कशास्त्र
प्रथम भाग – भाषा

भूमिका

तर्कशास्त्र क्या है? आधार वाक्य और निष्कर्ष, युवतियो की पहचान, निगमन और आगमन, सत्यता और वैधता।

भाषा का प्रयोग

भाषा के तीन मौलिक कार्य, विविध कार्य संपादन करने वाला विवरण,विवरण के रूप, भावोत्तेजक या संवेगात्मक शब्द, सहमति और असहमति के प्रकार, संवेगात्मक रूप से तटस्थ भाषा।

अनौपचारिक तर्कदोष

प्रासंगिकत्व दोष, संदिग्धार्थ दोष, तर्क दोषो के परिहार ।

परिभाषा

परिभाषा के पांच उददेश्य, शाब्दिक विवाद और परिभाषा, परिभाषा के पांच प्रकार, अर्थ के विभिन्न प्रकार, परिभाषा की विधियॉ, जाति-व्यवच्छेदक परिभाषा के नियम ।

निरूपाधिक तर्कवाक्य

निरूपाधिक तर्कवाक्य और वर्ग,गुण, परिमाण और व्याप्ति, परंपारागत विरोध-वर्ग। अन्य अव्यवहित अनुमान, सत्तामूलक तात्पर्य, निरूपाधिक तर्कवाक्यो के लिए प्रतीक और रेखाचित्र।

निरपेक्ष न्यायवाक्य

मानक निरपेक्ष न्यायवाक्य, न्यायवाक्यीय युक्ति का अकारगत प्रयोग, न्यायवाक्य के परीक्षणार्थ बेन की रेखाचित्र विधि, नियम और तर्कदोष।

सामान्य भाषा की युक्तियॉ

निरपेक्ष न्यायवाक्य की पद-संख्या में कमी करना, निरपेक्ष तर्कवाक्य का मानकाकार मे रूपांतरण, एकरूप रूपांतरण, लुप्ताव्यव न्यायवाक्य, संक्षिप्त तर्कमाला, वैकल्पिक और हेतुहेतुमत न्यायवाक्य, उभयतः पाश ।

प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र

विशेष प्रतीको का महत्व, संयोजन, निषेध और विकल्प के प्रतीक, हेतुहेतुमत वाक्य और शाब्दिक प्रतिपत्ति, युक्ति-आकार और युक्तियॉ, वाक्य- आकार और वाक्य, शाब्दिक प्रतिपत्ति के विरोधाभास, विचार के तीन नियम।

निगमन की पद्धति

वैधता का आकारगत प्रमाण, अवैधता का प्रमाण, असंगति।

तर्कवाक्यीय फलन और परिमाणक

एकवचनात्मक तर्कवाक्य, परिमाणक, परंपरागत उदेदश्य-विधेयात्मक तर्कवाक्य, वैधता प्रमाणित करना, अवैधता प्रमाणित करना, न्यायवाक्य-रहित अनुमान।

द्वितीय भाग – आगमन

साम्यानुमान और संभाव्य अनुमान

साम्यानुमान द्वारा युक्ति, साम्यानुमानिक युक्तियो का मूल्यांकन।

कारणात्मक संबंध, प्रायोगिक अनुसंधान के लिए मिल की पद्धतियॉ

कारण का अर्थ, मिल की पद्धतियॉ, मिल की प्रणालियों की समालोचना, मिल की विधियो का समर्थन।

विज्ञान और प्राक्कल्पना

विज्ञान का महत्व, व्याख्याएं – वैज्ञानिक और अवैज्ञानिक, वैज्ञानिक व्याख्याओ का मूल्यांकन, गुप्तचर का वैज्ञानिक स्वरूप, कार्यरत वैज्ञानिकः वैज्ञानिक अनुसंधान का ढांचा, निर्णायक प्रयोग और तदर्थ प्राक्कल्पनाएं वर्गीकरण : प्राक्कल्पना के रूप मे।

प्रसम्भाव्यता

प्रसम्भावयता की वैकल्पिक धारणाएं, प्रसम्भावयता-कलत।

पुस्तक- तर्कशास्त्र एक परिचय

लेखक- संगमलाल पाण्डेय

UGPH-05
(भारतीय दर्शन के सिद्धान्त)

प्रस्तावना

वेद और उपनिषद, भूमिका, वैदिक दर्शन, उपनिषद, आत्मतत्व, ब्रहमतत्व, माया का अविद्या, मोक्ष और मोक्ष साधन, भगवदगीता, भूमिका, तत्व विवेचन, योग, ज्ञान, कर्म, भक्ति, चार्वाक दर्शन, भूमिका चार्वाक मत के स्रोत, ज्ञानमीमांसा, तत्त्मीमांसा, आचार मीमांसा।

जैन दर्शन

भूमिका, ज्ञान, अनेकान्तवाद, स्यादवाद, स्यादवाद समीक्षा, तत्वमीमासा, बंध और मोक्ष, समीक्षा,

प्रारंभिक बौद्ध दर्शन

(क) भगवान बुद्ध के दार्शनिक सिद्धान्त

भूमिका, कुछ तथ्य, चार आर्यसत्य और आर्य अष्टांगिक मार्ग, प्रतीत्यसमुत्पाद, अव्याकृत प्रश्नो पर बुद्ध का मौन, अनात्मवाद या नैरात्यवाद, निर्वाण।

(ख) हीनयान दर्शन

हीनयान और महायान, हीनयान के दार्शनिक सिद्धान्त : प्रतीत्यसमुत्पाद, क्षणभंगवाद, निर्वाण, वैभाषिक-सौत्रान्तिक मतभेद, हीनयान समीक्षा,

शून्यवाद या माध्यमिक दर्शन

अश्वघोष का दर्शन, महायान-सूत्र, शून्यवाद का अर्थ और महत्व, शून्यवाद का तर्क और दर्शनः तत्व और बुद्धि कोटियां, दार्शनिक मतो का विरोध, द्वंद्वात्मक तर्क और प्रसंगपादन, चतुष्कोटि खंडन, प्रतीत्यसमुत्पाद अजातिवाद है, कार्यकारण वाद-खंडन, संवृत्ति और परमार्थ शून्यता प्रतीत्यसमुत्पाद है,सर्वनिषेधवाद नहीं है, निर्वाण, शून्यता ही निर्वाण है जो बुद्धि विकल्पातीत है, पुदगल नैरात्म्य और धर्मनैरात्म्य, शून्यता प्रपंचोपशम शिवतत्व है।

विज्ञान या योगाचार दर्शन

विज्ञान वाद का उदय, योगाचार की विशेषताएं, लंकावतार सूत्र विज्ञप्तिमात्रतासिद्धि, विज्ञान-परिणाम, आत्मधर्मोपचार, परिणाम का अर्थ, आलयविज्ञान, किलष्ट मनोविज्ञान,विषय मनोविज्ञान, त्रिस्वभाव, अभूत परिकल्प और शून्यता, संक्लेश और व्यवदान ।

स्वतंत्र विज्ञानवाद या सौत्रान्कि योगाचार दर्शन

भूमिका, प्रमाण, क्षणभंगवाद बाम्हर्थ खंडन और विज्ञानमात्र का प्रतिपादन, अन्य मतो का खंडन, न्यायवैशेषिक पदार्थ खंडन, अपोहवाद के खंडन का खंडन, सांख्यखंडन, ईश्वरवादखंडन, ब्रम्हवाद खंडन, आत्मवादखंडन, विज्ञानवाद तथा स्वतंत्र विज्ञानवाद की समीक्षा।

सांख्य दर्शन

भूमिका, कार्यकारणवाद, प्रकृति, पुरूष सर्ग, सृष्टिकम, बंधन और मोक्ष, ईश्वर, समीक्षा।

योग दर्शन

भूमिका चित्त तथा उसकी वृत्तियॉ, अष्टांग योय, ईश्वर

वैशेषिक दर्शन

भूमिका पदार्थ, द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव, परमाणुकारणवाद, ईश्वर, बंधन, और मोक्ष, समीक्षा।

न्याय दर्शन

भूमिका, न्याय और वैशेषिक, ज्ञानमीमांसा, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, कारणवाद, ईश्वर, समीक्षा।

पूर्वमीमांसा दर्शन

भूमिका, प्रामाण्यवाद, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि, आत्म और ज्ञान ख्यातिवाद, विपरीतवाद, विपरीतख्याति, अन्यथाख्याति, सतख्याति, सदसतख्याति, विज्ञान ख्याति, शून्यता ख्याति, अनिर्वचनीय ख्याति, ख्यातिवाद की समीक्षा, तत्वमीमांसा, धर्म।

शंकराचार्य के पूर्व का अद्वैत वेदांत दर्शन : गौडपादाचार्य

गौडपाद-कारिका, अजातिवाद, आत्मतत्ववाद, अस्पर्शयोग,गौडपाद, और महायान।

शंकराचार्य का अद्वैत वेदान्त दर्शन

भूमिका, माया, आविद्या, या अध्यास विशेषताएं, अध्यास निरूपण, अध्यास लक्षण,सत असत अनिर्वचनीय प्रतिभास और व्यवहार, आत्मा और ब्रह्म, ईश्वर जीव और साक्षी, माक्षः मोक्ष निरूपण, जीवनमुक्ति, ज्ञान कर्म और उपासना, श्रुति तर्क और अनुभव सांख्य खंडन, वैशेषिक खंडन, ईश्वर की केवल

निमित्तकारणता का खंडन, ईश्वरपरिणामवाद का खंडन बौद्धमत खंडन सर्वास्तिवाद खंडन, क्षणभंगवाद, विज्ञानवाद खंडन शून्यवाद खंडन, परंपरा खंडन का प्रयोजन , उपसंहार ।

शंकराचार्य अद्वैत वेदान्त दर्शन

मंडन मिश्र और सुरेशाचार्य, अविद्या या माया, आत्मा या ब्रह्म ईशवर जीव और साक्षी, द्वैत खंडन और प्रपंच मिथ्यात्व प्रतिपादन ।

बौद्ध और वेदान्त दर्शन

भगवान बुद्ध और वेदान्त हीनयान और वेदान्त, माध्यमिक और वेदान्त, विज्ञानवाद और वेदान्त, रामानुजाचार्य का विशिष्टद्वैत वेदान्त दर्शन, वेदांत के अन्य संप्रदाय, शैव तथा शाक्त संप्रदाय।

पुस्तक- भारतीय दर्शन

लेखक- सी.डी.शर्मा

UGPH-06
(आधुनिक पाश्चात्य दर्शन)

प्रस्तावना

विषय प्रवेश, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, दर्शन और दर्शन के इतिहास का स्वभाव, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, धार्मिक पृष्ठभूमि, वैज्ञानिक पृष्ठभूमि, विज्ञान का दर्शन पर प्रभाव, आधुनिक दर्शन की प्रमुख विशेषताएं, आधुनिक दर्शन की प्रमुख समस्याएं, बुद्धिवाद एवं अनुभववाद।

संक्रमण काल

क्यूसा-निवासी निकोलस, जीवन वृत्त,रचनाएं, ज्ञान मीमांसा, तत्व मीमांसा, प्राचीन निकायो के पुनरूद्धारक एवं उनके विरोधी, प्रकृति के इटैलियन दार्शनिक, गियोर्दानो ब्रूनो, तत्व मीमांसा, टामस कैम्पानेला, ज्ञान मीमांसा, तत्व मीमांसा, सृष्टि मीमांसा, राजनीतिक एवं वैधिक दार्शनिक, मेकियावेली,संशयवादी दार्शनिक, रहस्यवादी दार्शनिक, प्रकृति के यथार्थ अन्वेषण के संस्थापक।

ब्रिटिश दर्शन

फ्रांसिस बेकन, रचनाएं, रचनाएं, आगमन प्रणाली, अन्ध विशवासो से मुक्ति,

वैज्ञानिक पद्धति, तत्व-विज्ञान, ज्ञान मीमांसा, नीति विज्ञान, मानव स्वाभाव की व्याख्या । सामाजिक अनुबंध सिद्धान्त, राज सत्ता का स्वरूप, शर्बरी के लार्ड हवेर्ट, आधुनिक दर्शन का सामान्य सर्वेक्षण, ब्रिटिश दर्शन की विशेषताएं, फांसीसी दर्शन की विशेषताएं, जर्मन दर्शन की विशेषताएं।

बुद्धिवाद : डेकार्टस

रेने डेकार्टस, जीवन वृत्त, रचनाएं, डेकार्टस की दार्शनिक प्रणाली, ज्ञान और भ्रम, संशयात्मक प्रणाली के नियम, हेत्वानुमान की आलोचना, आत्मा का अस्तित्व, संदेह पद्धति, ईशवर का अस्तित्व, सत्तामूलक, तर्क। आनुभाविक तर्क, संसृतिमूलक तर्क, भ्रम का कारण, जगत का अस्तित्व, द्रव्य, गुण और पर्याय, मनुष्य, आत्मा और शरीर का संबंध, प्रत्यय प्रतिनिधित्ववाद, क्या डेकार्टस आधुनिक दर्शन का जनक, डेकार्टस के दर्शन का मूल्यांकन, डेकार्टस के दार्शनिक अनुयायी, आर्नाल्ड ग्यूर्लिकस निकोलस मेलेब्रांश।

बुद्धिवाद : स्पिनोजा

बेनेडिक्टस स्पिनोजा, जीवन वृत्त, रचनाएं, रिपनोजा और डेकार्टस के विचारो मे तुलना, द्रव्य, ईश्वर और जगत मे संबंध, ईश्वर के तीन रूप, गुण का स्वरूप, पर्याय का स्वरूप, स्वतंत्रता एवं अनिवार्यता, ज्ञान मीमांसा, सत्य और सत्य का लक्षण, विभिन्न ज्ञानो का तारतम्य, क्या स्पिनोजा रहस्यवादी दार्शनिक है। उपसंहार।

बुद्धिवाद लाइबनित्स

जीवन वृत्त, दार्शनिक पृष्ठभूमि, रचनाएं, तर्कशास्त्र, चिदणुवाद, प्रतिनिधानवाद, चिदणुओ का तारतम्य, ज्ञान मीमांसा, आत्मा और शरीर, पूर्वस्थापित सामंजस्य,सृष्टि, ईश्वर, ईश्वर के अस्तित्व की युक्तियॉ, सत्तामूलक युक्ति, पर्याप्त हेतु की युक्ति, नित्य सत्यो की युक्ति, पूर्वस्थापित सामंजस्य युक्ति। लाइबनित्स के दर्शन की समीक्षा।

अनुभववाद : लॉक

जीवन वृत्त, रचनाएं, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, आधुनिक विज्ञानो का खंडन, ज्ञान का स्रोत, विज्ञान के प्रकार, द्रव्य एवं अमूर्त प्रत्यय, मूलगुण एवं उपगुण, तृतीयक गुण प्रतिनिधिवाद, ज्ञान का स्वभाव, ज्ञान की प्रमाणिकता, ज्ञान के प्रकार, ज्ञान की सीमाएं, तत्व मीमांसा, लॉक के दर्शन की आलोचना, लॉक का प्रभाव।

अनुभववाद : बर्कले

जीवन वृत्त, रचनाएं, बर्कले का विज्ञानवाद, अमूर्त विज्ञानो का खंडन, सामान्य प्रत्यय, संकेतवाद, संकेतवाद और सामान्य प्रत्यय, जड ़तत्व का खंडन, सत्ता अनुभवमूलक है, वस्तुवाद का खंडन, क्या जगत् असत है? विषयनिष्ठ विज्ञानवाद, आत्मा का स्वरूप ,अन्य आत्माओ का अस्तित्व, ईश्वर, कारण-कार्यमूलक युक्ति, आलोचना, बर्कले का महत्व।

अनुभववाद : ह्यूम

जीवन वृत्त, रचनाएं, प्रत्यक्षवाद, विज्ञान का अर्थ, मानवीय ज्ञान के घटक, मनोवैज्ञानिक परमाणुवाद, नामवाद, साहचर्यनियम, दार्शनिक संबंध, कारणता का विश्लेषण, जड़ तत्व का निरसन, आत्म तत्व का निरसन, ईश्वर तत्व का निरसन, संशयवाद, विशवास प्रत्यय का विश्लेषण, हयूम के दर्शन की आलोचना, हयूम का प्रभाव।

आलोचनात्मक विज्ञान : काण्ट

जीवन वृत्त, रचनाएं, दार्शनिक पृष्ठभूमि, काण्ट के दर्शन की पूर्व मान्यताएं, काण्ट द्वारा ज्ञान की समस्या का समाधान, शुद्ध बुद्धि की समीक्षा की प्रमुख समस्या, अनुभव निरपेक्ष संश्लेषणात्मक वाक्य किस प्रकार संभव है। संवेदनालंब समीक्षा, देश-काल का तात्विक प्रतिपादन, देश काल का अतीन्द्रिय प्रतिपादन, बोधालंब समीक्षा,अतीन्द्रिय तर्कशास्त्र,प्रत्यय या विकल्प समीक्षा, बुद्धि विकल्पो का तात्विक निगमन, बुद्धि विकल्पो का अतीन्दिय निगमन, बुद्धि प्रकृति का निर्माण करती है। विशुद्ध समाकल्पन की अतीन्द्रिय मौलिक संश्लेषणात्मक एकता, सिद्धान्तो की समीक्षा, विशुद्ध विकल्पो के आकृति कल्प, बुद्धि के सिद्धान्त, बौद्धिक मनोविज्ञान के तर्काभास, द्रव्यत्व का तर्काभास, सरलता का तर्काभास, मनोविज्ञान का तर्काभास, व्यक्तित्व का तर्काभास, काल्पनिकता का तर्काभास, बौद्धिक संस्तुति विज्ञान के विप्रतिबोध, बौद्धिक ईश्वर विज्ञान के व्याधात, काण्ट के दर्शन की समीक्षा।

पुस्तक- पाश्चात्य दर्शन

लेखक- सी0डी0 शर्मा

UGPH-07
(भारतीय ज्ञान मीमांसा)

वैदिक एवं बौद्ध न्याय

न्याय का अर्थ इतिहास, न्याय शास्त्र के भेद, प्राचीन और नव न्याय, वैदिक न्याय के प्रमुख आचार्य - महर्षि गौतम, वात्सायन, उद्योत्कर, वाचस्पति मिश्र, आचार्य उदयन, नव्य न्याय गंगेश उपाध्याय, वर्धमान उपाध्याय, पक्षधर मिश्र, वासुदेव सार्वभौम आदि। बौद्ध-न्याय-आचार्य दिंग्नाग, आचार्य परमार्थ, शंकर स्वामी, धर्मपाल, धर्मकीर्ति, बौद्ध के सम्प्रदाय।

ज्ञान : प्रमा, अप्रमा, ख्यातिवाद (भ्रम) –

ज्ञान स्वरूप, परिभाषा, मीमांसा मत, सांख्य मत, न्याय वैशेषिक मत, ज्ञान के प्रकार – प्रभा, अप्रभा संशय, विपर्पय (भ्रम), भ्रम के पॉच सिद्धान्त, भ्रम की सामान्य विशेषताएं, अन्य व्याख्यातिवाद, विपरीत ख्यातिवाद, न्याय और भ्रम मे भेद, अख्यातिवाद, बौद्ध दर्शन का भ्रम-सिद्धान्त, आत्मख्यातिवाद, असतख्यातिवाद (शून्यवाद) अनिर्वचनीय ख्यातिवाद (वेदान्तमत), तर्क, स्मृति, प्रत्यभिज्ञा।

वास्तुवाद, विज्ञानवाद और प्रामाण्यवाद

वस्तुवाद, विज्ञानवाद, प्रमाण्यवाद, न्यायमत परतः, प्रामाण्यवाद, सांख्यमत, स्वतः प्रामाण्यवाद, मीमांसामत प्रामाण्य स्वतोग्राह्य, अप्रमाण्यपरतोग्राह्यं, प्रभाकर, कुमारिल का मत, मीमांसा मत की आलोचना, बौद्धमत, प्रमाण्यपरतः और अप्रामाण्य स्वतोग्राह्य, आलोचना,

प्रमाण

प्रमाण का स्वरूप एवं परिभाषा, विश्वनाथ का मत, प्रमाण और प्रमाणाभास, बौद्ध न्याय मे प्रमाण की अवधारणा, प्रमाण का लक्षण, न्याय बिन्दु के अनुसार, प्रमाण वार्किक के अनुसार। बौद्ध दर्शन मे प्रमाण, वैभाषिक, सौतान्त्रिक मत। प्रमाणों की संख्या । प्रमाणो की संख्या , प्रमाण सम्प्लव और प्रमाण व्यवस्था। प्रमाण देविध्य, शब्द प्रमाण का खण्डन, उपमान का खंडन प्रमाण।

प्रत्यक्ष प्रमाण

प्रत्यक्ष का स्वरूप, अर्थ, प्रत्यक्ष की परिभाषा नव्य न्याय के अनुसार प्रत्यक्ष, मीमांसा एवं बौद्ध मत मे प्रत्यक्ष लक्षण, कल्पना का स्वरूप, भ्रान्ति का स्वरूप, प्रत्यक्ष के विषय, प्रकार, इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष - लौकिक अलौकिक सन्निकर्ष, निर्विकल्पक और सविकल्पक प्रत्यक्ष, द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव का प्रत्यक्ष, सविकल्प के विषय मे विवाद।

अनुमानप्रमाण

अनुमान का स्वरूप, परिभाषा, वैशेषिक मत, बौद्ध मत स्वार्थानुमान,

परार्थानुमान, हेतु के प्रकार, अनुमान के अवयव, विषय, पंचावयव, न्याय मत, व्याप्ति न्याय मत, बौद्ध मत, लिंग परामर्श, अनुमान का वगीकरण, हेत्वाभास।

शब्द प्रमाण

शब्द प्रमाण का स्वरूप, वाक्य विवेचन, आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि, तात्पर्य, पद का स्वरूप, अर्थ, भेद, पद और पदार्थ, शक्ति और लक्षण, व्यंजना, शब्दार्थ का स्वरूप, शब्दार्थ इसके साधन, वाक्यार्थ, अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद, तात्पर्यवाद, स्फोटवाद, अपोहवाद, शब्द की नित्यता अनित्यता, शब्द का प्रामाण्य,

उपमान प्रमाण

स्वरूप, न्याय और मीमांसा का मत, उपमान का अनुमान, में अन्तर्भाव, उपमान का प्रत्यक्ष मे अर्न्तभाव उपमान की उपयोगिता।

अर्थापत्ति और अनुपलब्धि

स्वरूप प्रकार, अर्थापत्ति सम्बंधी विवाद, प्रत्यक्ष पूर्विका अनुमान पूर्विका अर्थापति, अर्थापत्ति और अनुमान, अनुपलब्धि, अनुपलब्धि का प्रत्यक्ष मे अन्तर्भाव।

पुस्तक- प्रमाण मीमांसा

लेखक - बी0 एन0 सिंह

UGPH-08

(पाश्चात्य ज्ञानमीमांसा)

ज्ञान और दार्शनिक चिंतन
ज्ञान की परिभाषा एवं स्वरूप
ज्ञान के प्रकार
ज्ञान के स्रोत
ज्ञाता-ज्ञेय संबंध
सत्यता
सामान्य
आगमन की समस्या
वैयक्तिक अनन्यता और अन्य मत
ज्ञान की सीमा
दर्शन का मूल्य

पुस्तक- पाश्चात्य ज्ञान मीमांसा

लेखक- एस0के0 सेठ एवं नीलिमा मिश्र

UGHI

प्रश्न पत्र UGHI-01 हिन्दी गद्य

हिन्दी गद्य का विकास

हिन्दी गद्य का विकास – गद्य साहित्य, हिन्दी गद्य की पृष्ठभूमि, हिन्दी गद्य का विकास (विकास के कारण, प्रारंभिक गद्य लेखन, अंग्रेजों की भाषा-नीति) भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, प्रेमचन्द और उनके बाद।

हिन्दी गद्य की विविध विधाएँ – साहित्य, नाटक (नाटक का वर्गीकरण, रेडियो नाटक, दूरदर्शन नाटक), एकांकी, उपन्यास, कहानी, लघुकथा, निबन्ध, आलोचना, रेखाचित्र और संस्मरण, आत्मकथा और जीवनी, यात्रावृत्त, रिपोर्ताज।

हिन्दी कहानी

हिन्दी कहानी : स्वरूप और विकास – कहानी का रचनागत वैशिष्ट्य (कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, परिवेश, संरचना शिल्प प्रतिपाद्य), कहानी के भेद, हिन्दी कहानी का विकास।

'उसने कहा था' (चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी') : वाचन – कहानी का वाचन, कहानी का सार, कहानी की सन्दर्भ सहित व्याख्या।

'उसने कहा था' : विश्लेषण और मूल्यांकन – कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, परिवेश, संरचना (शैली; भाषा और संवाद), मूल्यांकन (रचनाकार की दृष्टि और कहानी का प्रतिपाद्य, शीर्षक की उपयुक्तता)।

'शतरंज के खिलाड़ी' (प्रेमचन्द) : वाचन एवं विश्लेषण – कहानी का वाचन, सार, सन्दर्भ सहित व्याख्या, कथावस्तु, चरित्र चित्रण, परिवेश, संरचना शिल्प (शैली, संवाद, भाषा), मूल्यांकन।

'आकाश-दीप' (जयशंकर 'प्रसाद') : वाचन

'आकाश दीप' : विश्लेषण और मूल्यांकन – कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, परिवेश, संरचना शिल्प (शैली; भाषा और संवाद)- मूल्यांकन।

'परदा' (यशपाल) : वाचन एवं विश्लेषण – वाचन, सार, सन्दर्भ सहित व्याख्या, कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, परिवेश, संरचना शिल्प (शैली, भाषा, संवाद), मूल्यांकन।

'अकेली' (मन्नू भंडारी) : वाचन एवं विश्लेषण – वाचन, सार, सन्दर्भ सहित व्याख्या, कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, परिवेश, संरचना शिल्प, मूल्यांकन।

हिन्दी उपन्यास (पहला भाग)

हिन्दी उपन्यास : स्वरूप और विकास – उपन्यास का रचनागत वैशिष्ट्य (कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, परिवेश, संरचना शिल्प, प्रतिपाद्य), उपन्यास के भेद, हिन्दी उपन्यास का विकास (प्रेमचन्द पूर्व, प्रेमचन्द युगीन एवं प्रेमचन्दोत्तर युग के उपन्यास)।

'निर्मला' (प्रेमचन्द) वाचन एवं व्याख्या-। - उपन्यास का वाचन, कथासार, व्याख्या।

'निर्मला' (प्रेमचन्द) वाचन एवं व्याख्या-॥ - उक्तवत।

हिन्दी उपन्यास (दूसरा भाग)

'निर्मला' : कथावस्तु – कथावस्तु (कथावस्तु के प्रकार, गुण, विकास की पद्धति), 'निर्मला' की कथा (आरंभ, विकास, परिणति), 'निर्मला' की कथावस्तु की विशेषताएँ।

'निर्मला': चरित्र-चित्रण- चरित्र-चित्रण की विधियाँ,चरित्र-चित्रण के गुण, उपन्यास के पात्र।

'निर्मला' : परिवेश, संरचना शिल्प

'निर्मला' : प्रतिपाद्य एवं प्रेमचन्द का वैशिष्ट्य – मूल्यांकन (प्रतिपाद्य, शीर्षक की सार्थकता), प्रेमचन्द का वैशिष्ट्य (प्रेमचन्द के उपन्यास, औपन्यासिक पात्र, देशकाल-चित्रण, भाषा, शिल्प, सोद्देश्यता)

हिन्दी एकांकी (पहला भाग)

हिन्दी एकांकी : स्वरूप और विकास – दृश्य विधा का विशिष्ट स्वरूप, एकांकी का संरचनागत वैशिष्ट्य (कथानक, पात्र, संवाद तथा भाषा-शैली, परिवेश अथवा देशकाल, अभिनेयता या मंचीयता, प्रतिपाद्य अथवा उद्देश्य), हिन्दी एकांकी का विकास, एकांकी के भेद, रेडियो नाटक।

'कौमुदी महोत्सव' (डॉ0 राम कुमार वर्मा) : वाचन।

'कौमुदी महोत्सव' : विश्लेषण और मूल्यांकन – कथानक (आरंभ, विकास, परिणति, संकलन-त्रय), चरित्र-चित्रण (चन्द्रगुप्त, चाणक्य, वसुगुप्त), परिवेश, संरचना शिल्प (भाषा, शैली, संवाद), अभिनेता, मूल्यांकन।

'रीढ़ की हड्डी' (जगदीश चन्द्र माधुर): वाचन

हिन्दी एकांकी (दूसरा भाग)

'रीढ़ की हड्डी' : विश्लेषण और मूल्यांकन- कथानक (आरम्भ, विकास, परिणति), चरित्र-चित्रण (उमा, गोपाल प्रसाद) परिवेश, संरचना शिल्प, अभिनेयता, मूल्यांकन।

'जोंक' (उपेन्द्रनाथ 'अश्क') : वाचन एवं विश्लेषण- वाचन, सार, सप्रसंग व्याख्या, कथानक, पात्र, परिवेश, संरचना-शिल्प, अभिनेयता, मूल्यांकन।

'संस्कार और भावना' (विष्णु प्रभाकर) : वाचन एवं विश्लेषण- वाचन, सार, सन्दर्भ सहित व्याख्या, कथानक, चरित्र-चित्रण, परिवेश, संरचना शिल्प, अभिनेयता, मूल्यांकन।

'गिरती दीवारें' (उदयशंकर भट्ट) : वाचन एवं विश्लेषण- वाचन, सार, सन्दर्भ सहित व्याख्या, कथानक, पात्र, परिवेश, संरचना शिल्प, अभिनेयता, मूल्यांकन।

हिन्दी नाटक

हिन्दी नाटक : स्वरूप और विकास – साहित्य की अन्य विधाएँ और नाटक, नाटक और रंगमंच का सम्बन्ध, नाटक और उपन्यास, नाटक के तत्व (कथावस्तु, पात्र, परिवेश; भाषा, शैली और संवाद; अभिनेयता और मंचीयता, प्रतिपाद्य अथवा उद्देश्य), नाटक के प्रकार, हिन्दी नाटक का विकास।

'ध्रुवस्वामिनी' (जयशंकर 'प्रसाद') वाचन एवं व्याख्या

'ध्रुवस्वामिनी' : कथानक – कथावस्तु के स्रोत, नाटक का कथा-सार, कथावस्तु (आरंभ, विकास, परिणति), कथावस्तु का विश्लेषण (अंक-दृश्य योजना, दृश्य और सूच्य घटनाएँ, आधिकारिक और प्रासंगिक कथावस्तु, विविध नाटकीय युक्तियों का प्रयोग, संकलन-त्रय, कथावस्तु विकास की परम्परागत प्रविधियाँ, कार्य-व्यापार की तीव्रता और आद्योपान्त संघर्ष)।

'ध्रुवस्वामिनी' : चरित्र-चित्रण – चरित्र-चित्रण की शिल्पविधि, प्रसाद जी की पात्र-सृष्टि की विशेषताएँ, 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के पात्र।

'ध्रुवस्वामिनी' : परिवेश तथा संरचना-शिल्प- ऐतिहासिक नाटक और परिवेश, 'ध्रुवस्वामिनी' का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आधुनिक परिवेश, 'ध्रुवस्वामिनी' का संरचना-शिल्प।

'ध्रुवस्वामिनी' : प्रतिपाद्य और अभिनेयता- प्रतिपाद्य (नारी जागरण की चेतना, अयोग्य और भ्रष्ट शासक से मुक्ति, यथार्थपरक जीवन-दृष्टि), 'ध्रुवस्वामिनी' की अभिनेयता।

'ध्रुवस्वामिनी' : रचना दृष्टि की नवीनता और सार्थकता – परंपरा का अनुकरण और नया प्रयोग, समस्या नाटक के रूप में 'ध्रुवस्वामिनी', नाटक का शीर्षक, मूल्यांकन।

हिन्दी निबन्ध

हिन्दी निबन्ध : स्वरूप और विकास- निबन्ध का रचनात्मक वैशिष्ट्य अर्थ और परिभाषा, विचारात्मक एवं भावात्मक आधार, लेखक का व्यक्तित्व, शैली, भाषा), निबन्ध

के भेद, हिन्दी निबन्ध का विकास।

बातचीत (बालकृष्ण भट्ट) : वाचन एवं विश्लेषण- निबन्ध का वाचन, सार, व्याख्या, अन्तर्वस्तु, लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति, संरचना शिल्प, प्रतिपाद्य।

मित्रता (रामचन्द्र शुक्ल) : वाचन

मित्रता : विश्लेषण एवं मूल्यांकन – अन्तर्वस्तु (विचार पक्ष, भाव पक्ष), लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति, संरचना शिल्प (भाषा,शैली), प्रतिपाद्य।

नाखून क्यों बढ़ते हैं ? (हजारी प्रसाद द्विवेदी) : वाचन

नाखून क्यों बढ़ते हैं ? विश्लेषण एवं मूल्यांकन – अंतर्वस्तु (विचार पक्ष, भाव पक्ष), लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति, संरचना शिल्प (भाषा, शैली), प्रतिपाद्य।

एक था पेड़ और एक था ठूँठ ! (कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर') : वाचन एवं विश्लेषण- वाचन, सार, व्याख्या, अंतर्वस्तु (विचार पक्ष, भाव पक्ष), लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति, संरचना शिल्प (भाषा, शैली), प्रतिपाद्य।

मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (विद्यानिवास मिश्र) : वाचन एवं विश्लेषण – वाचन,सार, व्याख्या, अंतर्वस्तु (विचार पक्ष, भाव पक्ष), लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति, संरचना शिल्प (भाषा, शैली), प्रतिपाद्य।

व्याख्यात्मक प्रश्न

के प्रश्न पत्र में व्याख्यात्मक प्रश्न पाठ्यक्रम में समाहित सभी साहित्यिक कृतियों – **कहानी, उपन्यास, एकांकी, नाटक एवं निबन्धों** से पूछे जाएँगे, जिनका सन्दर्भ और प्रसंग सहित उत्तर देना होगा।

UGHI-02

हिन्दी काव्य

आदि काव्य

हिन्दी काव्य की पृष्ठभूमि (अपभ्रंश काव्य का परिचय) – अपभ्रंश : अर्थ और स्वरूप (साहित्यिक भाषा के रूप में अपभ्रंश का विकास), अपभ्रंश काव्य, अपभ्रंश और हिन्दी काव्य का संबंध।

हिन्दी का आदिकाव्य : स्वरूप एवं विकास – आदिकाव्य : अर्थ और स्वरूप (आदिकालीन परिस्थितियाँ, आदिकालीन काव्य का स्वरूप), आदिकाव्य की प्रतिनिधि रचनाएँ (पृथ्वीराज रासो, बीसलदेव रासो, ढोला मारू रा दूहा, विद्यापति की कविता, अमीर खुसरो की कविता), आदिकाव्य की साहित्यिक प्रवृत्ति, आदिकाव्य की शिल्पगत विशेषताएँ।

भक्तिकाव्य (पहला भाग)

भक्ति काव्य का स्वरूप और विकास- भक्ति काव्य की पूर्व परम्परा, पृष्ठभूमि, भक्ति का स्वरूप, भक्ति काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ भक्ति काव्य का शिल्प-विधान भक्तिकाव्य का विकास (ज्ञानाश्रयी, प्रेममार्गी (सूफी), कृष्ण भक्ति, रामभक्ति शाखा)।

कबीर का काव्य – कबीर का रचना – व्यक्तित्व, कबीर काव्य का ज्ञान पक्ष (निर्गुण-निराकार ईश्वर, अवतारवाद का खण्डन, शास्त्र-ज्ञान को चुनौती), कबीर काव्य का सामाजिक पक्ष (धार्मिक बाह्याचार का खण्डन, जाति प्रथा का विरोध, हिन्दू-मुस्लिम समन्वय, नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण), कबीर की भक्ति भावना, कबीर काव्य में रहस्यवाद, कबीर काव्य का शिल्प-पक्ष।

जायसी का काव्य – जायसी का रचना व्यक्तित्व, सूफीमत, पद्मावतः वस्तु वर्णन (कथावस्तु, ऐतिहासिकता), पद्मावत में प्रेम-तत्व, जायसी का रहस्यवाद, पद्मावत का शिल्प पक्ष, जायसी काव्य का मूल्यांकन।

मीराबाई - मीराबाई का परिचय (रचनाकार व्यकितत्व, जीवन-परिचय) विभिन्न सम्प्रदायों का प्रभाव, भक्ति-भावना (मीरा और आंडाल की भक्ति भावना की तुलना, वेदनानुभूति बनाम प्रेमानुभूति), गीतिकाव्य धारा, अभिव्यंजना शिल्प, काव्य-वाचन एवं व्याख्या, मूल्यांकन।

भक्तिकाव्य (दूसरा भाग)

सूरदास – युग-परिवेश, जीवन परिचय तथा रचनाएँ, भक्ति-भावना एवं दार्शनिक विचारधारा, सूर का भावपक्ष (वात्सल्य, शृंगार), अभिव्यंजना पक्ष, वाचन एवं व्याख्या, मूल्यांकन।

गोस्वामी तुलसीदास- तुलसी पूर्व रामकाव्य परम्परा, पृष्ठभूमि, तुलसीदास का परिचय, तुलसी का भाव-पक्ष, दार्शनिक विचार, भक्ति पद्धति,अभिव्यंजना शिल्प, मूल्यांकन, व्याख्या।

रहीम का काव्य – रहीम : जीवन वृत्त, रचनाकार व्यक्तित्व, रहीम और उनकी रचनाएँ, नीति काव्य परम्परा और रहीम, भाव पक्ष, अभिव्यक्ति कौशल, मूल्यांकन।

हिन्दी रीति काव्य

रीतिकाव्य का स्वरूप एवं विकास – रीतिकालीन परिस्थितियाँ, रीतिकाव्य (रीति शब्द की व्याख्या, 'रीतिकाव्य' से तात्पर्य, प्रमुख भेद, प्रवर्तन, नामकरण), रीतिकाव्य की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ।

रीतिबद्ध काव्य : देव एवं पद्माकर – रीतिबद्ध कवि देव एवं पद्माकर, देव का काव्यत्व एवं आचार्यत्व, देव की काव्यगत विशेषताएँ, सन्दर्भ सहित व्याख्या, पद्माकर का काव्यत्व एवं आचार्यत्व, पद्माकर की काव्यगत विशेषताएँ, सन्दर्भ सहित

व्याख्या।

रीतिसिद्ध काव्य : बिहारी – जीवन परिचय (व्यक्तित्व रचनाएँ, दरबारी काव्य परंपरा, रीतिसिद्ध कवि, मुक्तक काव्य/सतसई परम्परा), श्रृंगारिक काव्य, भक्ति और नीति, संरचना शिल्प, संदर्भ सहित व्याख्या।

रीतिमुक्त काव्य : घनानन्द – जीवन परिचय तथा रचनाएँ, भावपक्ष (प्रेम निरूपण, श्रृंगार वर्णन, रूप-सौन्दर्य वर्णन, भक्ति भावना), अभिव्यंजा पक्ष, सन्दर्भ सहित व्याख्या, मल्यांकन।

आधुनिक काव्य (भारतेन्दु युग तथा द्विवेदी युग)

भारतेन्दु युगीन हिन्दी काव्य : स्वरूप और विकास – भारतेन्दु युगीन हिन्दी काव्य की पृष्ठभूमि, भारतेन्दु युगीन हिन्दी काव्य का विकास (बदरीनारायण चौधरी प्रेमधन, प्रतापनारायण मिश्र, पं0 राधाचरण गोस्वामी, राधाकृष्ण दास), भारतेन्दु युगीन हिन्दी काव्य की विशेषताएँ।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – पृष्ठभूमि, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : कवि परिचय, भारतेन्दु काव्यः प्रमुख प्रवृत्तियाँ (प्राचीन एवं नवीन), संरचना शिल्प, काव्य वाचन तथा व्याख्या।

द्विवेदी युगीन हिन्दी काव्यः स्वरूप और विकास – युगीन पृष्ठभूमि, द्विवेदी युग (काल निर्धारण और नामकरण, महावीर प्रसाद द्विवेदीः युगकर्ता की शक्तियाँ और सीमाएँ), द्विवेदी युग के प्रमुख कवि (मैथिलीशरण गुप्त, हरिऔध, रामनरेश त्रिपाठी, नाथूराम शंकर शर्मा, सियाराम शरण गुप्त), द्विवेदी युगीन काव्य की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, द्विवेदीयुगीन काव्य का अभिव्यंजना शिल्प, सारांशः द्विवेदी युगीन काव्य का मूल्यांकन (प्रमुख प्रदेय, सीमाएँ)।

मैथिलीशरण गुप्त – जीवन और साहित्य (युगीन परिवेश और भारतीय नवजागरण, आधुनिक हिन्दी काव्य-चेतना), भाव पक्ष, संरचना शिल्प, काव्य-वाचन, व्याख्या, मूल्यांकन।

रामनरेश त्रिपाठी- युग-परिवेश, जीवन-वृत्त एवं व्यक्तित्व, रचना-संसार, काव्य सौन्दर्य : प्रमुख स्वर, रचना-विधान, : विविध आयाम, राम नरेश त्रिपाठी का योगदान, काव्य-वाचन, व्याख्या।

छायावाद

छायावाद : स्वरूप और विकास – छायावाद की पृष्ठभूमि (युगीन परिस्थितियाँ, साहित्यिक परिवेश), छायावाद का प्रारम्भ, छायावाद के प्रमुख कवि (प्रवर्तक कवि जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा), छायावाद की अन्तर्वस्तु, छायावाद का रचना-विधान, छायावाद का महत्वः शक्ति और सीमाएँ (ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रासंगिकता)।

जयशंकर प्रसाद – जीवन और व्यक्तित्व, युग परिवेश, रचना-संसार, प्रमुख स्वर, शिल्प विधान।

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला – युग परिवेश, जीवन और व्यक्तित्व, सर्जक कृतित्व, निराला-काव्य की अन्तर्वस्तु, निराला-काव्य में सांस्कृतिक-सामाजिक नवजागरण, वाचन एवं व्याख्या, मूल्यांकन।

सुमित्रानन्दन पन्त- रचनाकार व्यक्तित्व, काव्य-चेतना का विकास (काव्यानुभूति, प्रकृति-सौन्दर्य, नारी के प्रति नवीन दृष्टि, जीवन-दर्शन), काव्य-शिल्प, व्याख्या, मूल्यांकन।

महादेवी वर्मा- युग परिवेश, जीवन वृत्त, सृजनात्मक व्यक्तित्व, काव्य सौन्दर्य : अन्तर्वस्तु, काव्य सौन्दर्य : रचना विधान, छायावादी काव्य और महादेवी वर्मा, वाचन एवं व्याख्या।

प्रगतिवाद

प्रगतिवाद : स्वरूप और विकास – प्रगतिवाद : पृष्ठभूमि, प्रगतिवाद शब्द का प्रयोग और अर्थ, अन्तर्वस्तु, अभिव्यंजना शिल्प, प्रगतिवाद के प्रमुख कवि (नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह, गजानन माधव मुक्तिबोध, त्रिलोचन), प्रगतिवाद का महत्व।

केदारनाथ अग्रवाल – जीवन परिचय, कृतित्व, पृष्ठभूमि, काव्य की अर्न्तवस्तु, संरचना-शिल्प, काव्यपाठ एवं व्याख्या।

नागार्जुन – पृष्ठभूमि, जीवन-परिचय, कृतित्व, काव्य की अन्तर्वस्तु, संरचना शिल्प, काव्य-वाचन, व्याख्या।

प्रयोगवाद और नयी कविता

प्रयोगवाद और नयी कविता : स्वरूप और विकास – पृष्ठभूमि, स्वरूप, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, शिल्प विधान,प्रयोगवादी काव्य का विकास, नयी कविता की पृष्ठभूमि,अर्थ, नयी कविता का विकास।

अज्ञेय – कवि परिचय, काव्य संवेदना, अभिव्यंजना-शिल्प, काव्य वाचन और व्याख्या, मूल्यांकन।

गजानन माधव मुक्तिबोध – जीवन परिचय, कृतित्व, युगीन पृष्ठभूमि, अन्तर्वस्तु, संरचना-शिल्प, काव्य-पाठ एवं व्याख्या।

भवानी प्रसाद मिश्र – जीवन परिचय, रचनाएँ, काव्य संवेदना, काव्य-शिल्प, काव्य वाचन और व्याख्या, मूल्यांकन।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना – युग परिवेश, जीवनी, व्यक्तित्व-कृतित्व, काव्य संवेदना, अभिव्यंजना, शिल्प काव्य-वाचन, व्याख्या, मूल्यांकन।

नरेश मेहता – कवि परिचय, व्यक्तित्व, काव्ययात्रा, काव्य संवेदना, अभिव्यंजना शिल्प, काव्य वाचन, व्याख्या, मूल्यांकन।

समकालीन कविता : स्वरूप और विकास – स्वरूप और दृष्टि (समकालीनता, तात्कालिकता एवं परम्परा, समकालीन परिवेश एवं सर्जना, समकालीन कविता एवं आधुनिकता, समकालीन कविता में यथार्थ से साक्षात्कार), समकालीन कविता और नयी कविता, विशाल परिदृश्य (प्रमुख कवि), समकालीन कविता की काव्यगत अथवा संवेदनागत प्रवृत्तियाँ, शिल्पगत पवृत्तियॉ, मूल्यांकन।

धूमिल- जीवन-परिचय, कृतित्व, युगीन पृष्ठभूमि, अन्तर्वस्तु, संरचनाशिल्प, काव्य-पाठ, व्याख्या।

प्रबन्ध काव्य

प्रबन्ध काव्य : स्वरूप और विकास- प्रबन्ध काव्य की अवधारणा और आधार, प्रबन्ध काव्य के भेद (महाकाव्य, खण्डकाव्य), महाकाव्य के दो प्रकार, संस्कृत एवं हिन्दी में महाकाव्य परम्परा, आधुनिक युग के महाकाव्य, हिन्दी में खण्ड काव्य परम्परा, नवीन प्रबन्ध चेतना, मूल्यांकन।

'कुरुक्षेत्र' (रामधारी सिंह दिनकर) का वाचन – कवि परिचय, कुरुक्षेत्र की सृजन-प्रेरणा और युग-परिवेश, कथासार, वाचन (दूसरा तथा तीसरा सर्ग), सन्दर्भ सहित व्याख्या।

'कुरूक्षेत्र' का वस्तुपक्ष – कथानक के स्रोत अथवा आधार, कथा-संयोजन (इतिहास और कल्पना, वस्तु-व्यंजना, नूतन उद्‌भावनाएँ) चरित्र-चित्रण, प्रकृति और संवेदना, भाव-रस व्यंजना।

'कुरुक्षेत्र' का अभिव्यंजना शिल्प- काव्यरूप और नामकरण, काव्य भाषा, बिम्ब, प्रतीक, अप्रस्तुत योजना, छन्द एवं लय।

'कुरुक्षेत्र' का प्रतिपाद्य – परिवेश, केन्द्रीय समस्या, अन्य समस्याएँ (विज्ञान का विनाशकारी प्रभाव, परमधर्म और आपद्धर्म का निर्धारण, बुद्धि और हृदय का सन्तुलन, मूल्यांकन), संदेश।

व्याख्यात्मक प्रश्न

व्याख्यात्मक प्रश्न पाठ्य सामग्री में उद्‌धृत अंशों से ही पूछे जाएँगे। पाठ्यक्रम में निहित सभी कवियों की रचनाओं से व्याख्यात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनका सन्दर्भ और प्रसंग सहित उत्तर देना होगा।

UGHI-03

हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं साहित्य परिचय

हिन्दी साहित्य के इतिहास की भूमिका

साहित्य और इतिहास का अंतःसंबंध – इतिहास और साहित्य का इतिहास, साहित्येतिहास लेखन के विभिन्न पक्ष (सामग्री संकलन, काल विभाजन और नामकरण, मूल्यांकन), साहित्येतिहास लेखन की विभिन्न पद्धतियाँ, हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परंपरा, हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की समस्याएँ।

काल विभाजन और नामकरण की समस्या – आवश्यकता, काल विभाजन और नामकरण का आधार, हिन्दी साहित्य के काल विभाजन की समस्या, नामकरण सम्बन्धी विवाद।

हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि – अपभ्रंश का उद्‌भव और विकास, अपभ्रंश साहित्य का अवलोकन (स्वयंभू, पुष्पदन्त, जैन कवि, बौद्ध सिद्ध काव्य, वीर और शृंगार काव्य), अपभ्रंश और हिन्दी साहित्य का संबंध (अपभ्रंश और हिन्दी का चरित काव्य, भक्ति काव्य और शृंगार काव्य), अभिव्यंजना शिल्प।

आदिकालीन साहित्य

आदिकालीन परिस्थितियों का अध्ययन – आदिकाल : अर्थ एवं स्वरूप, परिस्थितियाँ : अर्थ एवं महत्व, आदिकालीन साहित्य के प्रेरक बिन्दु, आदिकाल की परिस्थितियाँ (राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं साहित्यिक), उनका आदिकालीन साहित्य पर प्रभाव।

आदिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ – धर्म संबंधी साहित्य (सिद्ध कवि, नाथ कवि, जैन कवि), चारण कवि, लौकिक साहित्य (अमीर खुसरो, विद्यापति, भविसयत्त कहा)।

रासो काव्य- व्युत्पत्ति, स्वरूप, प्रमुख रासो कृतियाँ (वीर गाथात्मक, शृंगारपरक; धार्मिक एवं उपदेशमूलक रासो काव्य), रासो काव्य की प्रमुख विशेषताएँ, अभिव्यंजना पक्ष।

भक्तिकालीन काव्य

भक्तिकालीन परिस्थितियों का अध्ययन – भक्तिकाल का अर्थ एवं स्वरूप, ऐतिहासिक प्रेरक बिन्दु, परिस्थितियाँ, भक्तिकालीन साहित्यः सामग्री और स्वरूप, भक्तिकालीन साहित्य पर परिस्थितियों का प्रभाव।

भक्तिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय- भक्तिकालीन काव्य की सामान्य विशेषताएँ, निर्गुण भक्ति काव्य, सगुण भक्ति काव्य, भक्ति काव्य का महत्व।

भक्तिकाव्य का दार्शनिक आधार- भक्ति, धर्म और दर्शन; भक्ति के विविध रूप,

दार्शनिक मतवाद (अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, शुद्धाद्वैतवाद, पुष्टिमार्गीय भक्ति, द्वैताद्वैतवाद, द्वैतवाद), अन्य संप्रदाय, भक्ति सम्प्रदायों का प्रदेय।

भक्तिकालीन काव्य की प्रमुख शाखाएँ

निगुर्ण ज्ञानमार्गी काव्यधारा – युग परिवेश, संतकाव्य, निर्गुण सन्तकवियों का समाज सुधारक रूप, निर्गुण संत काव्य का भाव पक्ष, अभिव्यंजना पक्ष, संतकाव्य में जीवन-दर्शन और मूल्य।

निर्गुण प्रेममार्गी (सूफ़ी) काव्यधारा – सूफ़ी मत और सिद्धान्त, सूफी प्रेमकाव्य परम्परा, भाव व्यंजना और रस, रहस्यवाद, सूफी काव्य में भारतीय अभारतीय तत्व, काव्य रूप और कथानक रूढ़ियाँ, प्रतीकात्मकता, काव्य-भाषा, अलंकार, छन्द।

सगुण कृष्ण भक्ति काव्यधारा – युग परिवेश, कृष्ण भक्ति काव्य और भक्ति आन्दोलन, हिन्दी कृष्ण भक्ति काव्य से संबंधित कुछ प्रमुख संप्रदाय, हिन्दी कृष्ण भक्ति काव्य परम्परा, उसमें कृष्ण और राधा का स्वरूप, कृष्ण भक्ति काव्य की कथ्यगत विशेषताएँ, शिल्पगत विशेषताएँ।

सगुण रामभक्ति काव्यधारा – पृष्ठभूमि (युग परिवेश), भक्ति आन्दोलन और सगुण रामभक्ति काव्यधारा, राम का लोकनायक रूप, सगुण रामभक्ति धारा में नारी का स्वरूप, भक्ति का निरूपण, जीवन-दर्शन और मानव-मूल्य, लोकमंगल की साधना, अन्य विशेषताएँ, सगुण राम काव्यधारा का भाव-सौन्दर्य, अभिव्यंजना सौन्दर्य।

रीतिकालीन काव्य

रीतिकालीन काव्य की परिस्थितियाँ – रीतिकाल : अर्थ एवं स्वरूप, रीतिकाल की परिस्थितियाँ, रीतिकालीन साहित्य एवं कला की स्थिति।

रीतिकालीन काव्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएँ- पृष्ठभूमि, 'प्रवृत्ति' से तात्पर्य, रीतिकालीन काव्य की प्रवृत्तियाँ, विशेषताएँ (रीति-निरूपण, श्रृंगारिकता, राजप्रशस्ति; भक्ति नीति आदि गौण विशेषताएँ, रीतिमुक्त काव्य, रीति इतर काव्य)

रीतिबद्ध काव्य तथा रीतिसिद्ध काव्य – 'रीति' शब्द से अभिप्राय, 'रीतिबद्ध' और 'रीतिसिद्ध' का तात्पर्य, रीतिकाल के प्रमुख रीतिबद्ध और रीतिसिद्ध कवि तथा उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ, रीतिबद्ध और रीतिसिद्ध कवियों के वर्ण्य-विषय, काव्यगत विशेषताएँ।

रीतिमुक्त काव्य एवं अन्य प्रवृत्तियाँ – रीतिकालीन रीतिमुक्त काव्यधारा, रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि, रीतिमुक्त काव्य की प्रमुख विशेषताएँ, रीतिकालीन काव्य की अन्य प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रीतिकाल का प्रदेय।

आधुनिक हिन्दी साहित्य

आधुनिक युगीन परिस्थितियाँ – आधुनिक युगः स्वरूप एवं स्थिति, नामकरण एवं सीमांकन, परिस्थितियाँ; साहित्य,संगीत एवं अन्य कलाएँ, राष्ट्रीय चेतना का विकास।

आधुनिक युग का वैचारिक आधार- सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि, पाश्चात्य जीवन-दृष्टियाँ, थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना, भारतीय जीवन-दृष्टियाँ, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा आदर्शवादी जीवन-दर्शन।

आधुनिक हिन्दी साहित्य का आरम्भ- पृष्ठभूमि, आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास, प्रारम्भिक हिन्दी साहित्य का महत्व।

भारतेन्दु युग – पृष्ठभूमि, भारतेन्दु युगीन हिन्दी साहित्य, भारतेन्दु युगीन हिन्दी साहित्य की विशेषताएँ, महत्व।

द्विवेदी युग – पृष्ठभूमि, युगीन साहित्यकार, साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, महत्व।

आधुनिक हिन्दी काव्य

छायावाद – छायावाद की पृष्ठभूमि, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, शिल्पगत विशेषताएँ, प्रमुख छायावादी कवि।

छायावादोत्तर एवं प्रगतिशील काव्य- छायावादोत्तर काव्य की पृष्ठभूमि, छायावादोत्तर काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ, शिल्पगत विशेषताएँ, प्रमुख छायावादोत्तर कवि, प्रगतिवाद की पृष्ठभूमि, प्रगतिवादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, शिल्पगत विशेषताएँ, प्रमुख प्रगतिवादी कवि, छायावादोत्तर और प्रगतिवादी काव्य का महत्व।

प्रयोगवाद एवं नयी कविता- प्रयोगवाद की पृष्ठभूमि, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, शिल्पगत विशेषताएँ, प्रमुख प्रयोगवादी कवि, नयी, कविता की पृष्ठभूमि, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, शिल्पगत विशेषताएँ, नयी कविता के प्रमुख कवि।

समकालीन हिन्दी काव्य – पृष्ठभूमि, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, शिल्पगत विशेषताएँ, प्रमुख कवि।

आधुनिक हिन्दी गद्य

कथा साहित्य : कहानी एवं उपन्यास- उपन्यासः पृष्ठभूमि, हिन्दी उपन्यास का उद्‌भव, विकासः स्वातन्त्र्योत्तर युग; कहानीः पृष्ठभूमि, हिन्दी कहानी का उद्‌भव और विकास, प्रमुख कथाकार।

नाट्य साहित्य – हिन्दी नाटक का उदय, प्रसाद पूर्व हिन्दी नाटक, प्रसाद युगीन हिन्दी नाटक, प्रसादोत्तर स्वतन्त्रता पूर्व हिन्दी नाटक, स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी नाटक, नाटक विधा के विभिन्न रूप, नाटक और रंगमंच।

निबन्ध एवं अन्य गद्य विधाएँ- हिन्दी निबन्ध का विकास, संस्मरण-रेखाचित्र, जीवनी-आत्मकथा, यात्रा साहित्य-रिपोर्ताज।

हिन्दी आलोचना का विकास- शुल्क पूर्व हिन्दी आलोचना, शुक्ल युगीन हिन्दी आलोचना, शुक्लोत्तर हिन्दी आलोचना।

साहित्य एवं उसके अंग

साहित्य की परिभाषा एवं प्रयोजन- साहित्य का विशिष्टार्थ, व्युत्पत्ति मूलक अर्थ, वाङ्मय और साहित्य, 'साहित्य' शब्द का इतिहास और काव्य से उसका सम्बन्ध, साहित्य की परिभाषाएँ, समाहारपूर्ण परिभाषा, प्रयोजन और हेतु : पारस्परिक अन्तर, साहित्य का प्रयोजन, समाहार।

रस का अर्थ, उसके विभिन्न अंग एवं काव्य में महत्व-रस का अर्थ, स्वरूप तथा लक्षण, रस निष्पति, रस के भावादि अंग अथवा तत्व, संचारी भावों के संबंधों पर आधारित स्थितियाँ, रस के भेद, रस-मैत्री एवं रस-विरोध, काव्य में रस का महत्व।

शब्द-शक्ति- अर्थ और प्रकार, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना-भेदोपभेद एवं विशेषताएँ।

बिम्ब, प्रतीक एवं कल्पना तत्व- बिम्बः अभिप्राय एवं परिभाषा, काव्यबिम्ब की विशेषताएँ, बिम्ब के आधारभूत प्रेरक तत्व, बिम्ब के भेद, बिम्ब के गुण, प्रतीकः महत्व, प्रतीक का स्वरूप-विस्तार एवं परिभाषा, प्रतीकवाद, प्रतीकों की विशेषताएँ, वर्गीकरण, प्रयोग; कल्पना :महत्व, स्वरूप और विशेषताएँ, भेद, कल्पना का विस्तार तत्व, बिम्ब के भेद, बिम्ब के गुण; प्रतीक : महत्व, प्रतीक का स्वरूप-विस्तार।

छन्द एवं अलंकार

छन्द एवं उसके भेद-। छन्द शब्द का अर्थ एवं व्युत्पत्ति, परिभाषा एवं स्वरूप, छन्द और काव्य का सम्बन्ध एवं प्रयोजन, छन्दशास्त्र : व्याख्या और नियम; गति, यति अथवा विरति तथा विरति भंग, चरण, गण, तुक विचार, छन्द के प्रकार।

छन्द एवं उसके भेद-॥ - मात्रिक छन्द, वर्णिक छन्द, स्वच्छन्द छन्द,मुक्त छन्द।

अलंकार एवं उसके भेद -। अलंकार : अर्थ, काव्य में महत्व, प्रमुख भेद; शब्दालंकारों के प्रमुख भेद।

अलंकार एवं उसके भेद-॥ अर्थालंकार, अर्थालंकार के अंग, भेद, उभयालंकार।

नोट : UGHI-03 में व्याख्यात्मक प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे।

UGHI-04

मध्यकालीन भारतीय साहित्य समाज और संस्कृति

भक्ति का आविर्भाव

भक्ति का उदय – भक्ति का अर्थ एवं स्वरूप, भक्ति का उदय, भक्ति सम्बन्धी विभिन्न दार्शनिक मत, निर्गुण भक्ति मत।

भक्ति आन्दोलन का विकास – भक्ति आन्दोलन का आरंभिक उदय, भक्ति आन्दोलनकालीन परिस्थितियाँ, भक्ति आन्दोलन के उदय के कारण, भक्ति आन्दोलन का महत्व, भक्ति आन्दोलन का प्रसार और विकास, भक्ति आन्दोलन की सीमाएँ और परिणति।

भक्ति साहित्य का परिचय – भक्ति काव्य की सामान्य विशेषताएँ, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, दक्षिणांचल भक्ति काव्य, (तमिल, कन्नड़, तेलुगु एवं मलयालम भक्ति काव्य), पश्चिमांचल भक्ति काव्य (मराठी एवं गुजराती), पूर्वांचल भक्ति काव्य (बंगला, असमिया, ओड़िया), उत्तरांचल भक्ति काव्य (सिंधी, पंजाबी), हिन्दी भक्ति काव्य, भक्ति काव्य का महत्व।

दक्षिणांचल भक्ति साहित्य (भाग- 1)

तमिल भक्ति काव्य (एक)- तमिल भक्ति-काव्य की पृष्ठभूमि, तमिल भक्ति-काव्य के प्रमुख वैष्णव कवि, पेरियाल्वारः जीवन परिचय एवं कृतित्व, कुलशेखर आल्वार : जीवन परिचय एवं कृतित्व, आण्डाल : जीवन परिचय एवं कृतित्व, आल्वार भक्त कवियों की काव्य-अभिव्यक्ति : भाषा, शैली; तमिल भक्ति-काव्य का सामाजिक सन्दर्भ।

तमिल भक्ति काव्य (अप्पर, सुन्दरर तथा मणिक्कवाचकर)- तमिल शिवभक्ति साहित्य की पृष्ठभूमि, शिवभक्ति के दर्शन का संक्षिप्त परिचय, तमिल भक्ति काव्यों के प्रमुख शैव कवि, सुंदरमूर्ति : जीवन परिचय एवं कृतित्व, मणिक्कवाचकर : जीवन परिचय एवं कृतित्व।

कन्नड़ भक्ति काव्य (बसवेश्वर तथा अक्कमहादेवी)- कन्नड़ भक्ति साहित्य की पृष्ठभूमि, कन्नड़ भक्ति साहित्य के प्रमुख कवि, बसवेश्वर की सामाजिक चेतना (काव्य-वाचन-भावार्थ), अक्क महादेवी जीवन परिचय एवं कृतित्व (काव्य-वाचन–भावार्थ)।

कन्नड़ भक्ति काव्य (पुरंदरदास तथा कनकदास)- युगीन पृष्ठभूमि, कनकदास का आविर्भाव, कविताएँ (पुरंदरदास, कनकदास)

दक्षिणांचल भक्ति साहित्य (भाग- 2)

तेलुगु भक्ति काव्य (एक)- तेलुगु भक्ति काव्य की शैव एवं निर्गुण धारा, तेलुगु भक्ति

काव्य की धार्मिक-सामाजिक पृष्ठभूमि पालकुरिकि सोमनाथ : जीवन परिचय एवं रचनाएँ, काव्य-वाचन, वेमनाः जीवन परिचय एवं रचनाएँ, काव्य-वाचन, सोमनाथ एवं वेमना के काव्य का शिल्प पक्ष, मूल्यांकन (महत्व एवं प्रासंगिकता)।

तेलुगु भक्ति काव्य (वैष्णव भक्ति काव्य : राम काव्य और कृष्ण काव्य)- वैष्णव भक्तिकाव्य के प्रतिनिधि कवि, (पोतना-जीवन परिचय, पृष्ठभूमि), काव्य-वाचन, गोनबुद्धा रेड्डी : जीवन परिचय एवं कृतित्व, त्यागराज : जीवन परिचय।

मलयालम भक्ति काव्य (चेरूश्शेरी एवं एषुत्तच्छन)- मलयालम भक्ति साहित्य का संक्षिप्त परिचय, कवि परिचय : चेरूश्शेरी और एषुत्तच्छन, उनकी रचनाओं का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष, काव्य-वाचन (चेरूश्शेरी-मातृहृदयवर्णनम्, एषुत्तच्छन- लक्ष्मणोपदेशम्), मूल्यांकन।

पश्चिमांचल भक्ति साहित्य

मराठी भक्ति साहित्य-। : ज्ञानेश्वर, नामदेव – मराठी भक्ति साहित्य का परिचय, ज्ञानेश्वर का जीवन परिचय और रचनाएँ, ज्ञानेश्वर काव्य का सामाजिक पक्ष, दार्शनिक पक्ष, भक्ति का स्वरूप, ज्ञानेश्वर काव्य का शिल्प पक्ष, नामदेव का जीवन परिचय और रचनाएँ नामदेव काव्य में अभिव्यक्त समाज, नामदेव काव्य का दार्शनिक पक्ष, शिल्प पक्ष, ज्ञानेश्वर और नामदेव काव्य का मूल्यांकन।

मराठी भक्ति साहित्य : तुकाराम, चोखामेळा – तुकाराम का जीवन परिचय और रचनाएँ, तुकाराम काव्य का सामाजिक पक्ष, दार्शनिक पक्ष, भक्ति भावना, शिल्प पक्ष; चोखामेळा का जीवन परिचय और रचनाएँ, उनके काव्य का सामाजिक पक्ष, दार्शनिक पक्ष, भक्ति भावना, काव्य-शिल्प, तुकाराम और चोखामेळा काव्य का मूल्यांकन।

गुजराती भक्ति साहित्य-। नरसी मेहता, प्रीतमदास, दयाराम-गुजराती भक्ति साहित्य का परिचय, नरसिंह मेहता-जीवन परिचय और रचनाएँ, नरसिंह काव्य का सामाजिक पक्ष, भक्ति भावना, शिल्प पक्ष; प्रीतमदास-जीवन परिचय और रचनाएँ, प्रीतमदास की भक्ति की विशेषताएँ, दयाराम-जीवन परिचय और रचनाएँ, दयाराम काव्य का सामाजिक पक्ष, भक्ति भावना।

गुजराती भक्ति साहित्य-॥ प्रेमानंद, अखोभगत- प्रेमानन्द का जीवन परिचय और रचनाएँ, भक्ति भावना, शिल्प पक्ष, सामाजिक पक्ष; अखोभगत का जीवन परिचय और रचनाएँ, सामाजिक पक्ष, भक्ति भावना, शिल्प पक्ष।

पूर्वांचल भक्ति साहित्य

बांगला भक्ति साहित्य : चंडीदास और ज्ञानदास – बांगला भक्ति साहित्य का इतिहास, बांगला भक्ति साहित्य पर विद्यापति और जयदेव का प्रभाव, चैतन्य और उनका

भक्ति आन्दोलन, बांगला भक्ति साहित्य के प्रमुख कवि, चंडीदास : जीवन परिचय और रचनाएँ, चंडीदास के काव्य की विशेषताएँ, भक्ति भावना, शिल्प पक्ष; ज्ञानदास : जीवन परिचय और रचनाएँ, भक्ति भावना, शिल्प पक्ष।

बांगला भक्ति साहित्य : गोविन्ददास और बलराम – भक्ति गीति : बांगला साहित्य की महत्वपूर्ण प्रवृत्ति, बांगला भक्ति काव्य में कृष्णोपासक काव्य की पृष्ठभूमि, वैष्णव भक्ति आन्दोलन के छः प्रमुख कवि (षड्गोस्वामि), गोविन्ददास : जीवन परिचय और रचनाएँ, चैतन्योत्तर युग के श्रेष्ठ कवि गोविन्ददास, प्रेम के उदय और उसके विकास का चित्रण, गोविन्ददास की भक्ति भावना, शिल्प पक्ष, बलराम दास काव्य की विशेषताएँ, शिल्प पक्ष।

असमिया भक्ति साहित्य : शंकरदेव एवं माधवदेव – असमिया भक्ति साहित्य का संक्षिप्त परिचय, कवि परिचय : शंकरदेव एवं माधवदेव, शंकरदेव के काव्य का सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष, शंकरदेव और माधवदेव के काव्य की विशेषताएँ।

ओड़िया भक्ति साहित्य : बलराम दास, जगन्नाथ दास, अच्युतानंद दास- ओड़िया भक्ति साहित्य का इतिहास, ओड़िया भक्ति आन्दोलन और 'पंचसखा युग', बलरामदास का जीवन परिचय और रचनाएँ, जगन्नाथ दास और अच्युतानन्द दास का जीवन परिचय और रचनाएँ, पंचसखा काव्य का सामाजिक पक्ष, पंचसखाओं की भक्ति भावना, पंचसखाओं की भाषा और समाज पर प्रभाव।

उत्तरांचल भक्ति साहित्य

कश्मीरी भक्ति काव्य- कश्मीरी भक्तिकाव्य की पृष्ठभूमि, उद्भव एवं विकास, दार्शनिक आधार, कश्मीरी भक्ति काव्य में समाज एवं संस्कृति, लल्लेश्वरी : जीवन परिचय एवं कृतित्व, शेखुनुरुद्दीन वली : जीवन परिचय एवं कृतित्व, परमानंदः जीवन परिचय एवं कृतित्व।

सिन्धी भक्ति काव्य (शेख फरीद, बुल्लेशाह)- सिंधी सूफी संत काव्य, सिंधी सूफी महाकवि शाह अब्दुल लतीफ का जीवन और काव्य, 'शाह-जो-रिसालो' के 'सुर लीला चनेसर' में से कुछ बैतों का वाचन एवं व्याख्या, सिंधी सन्त महाकवि चैनराई सामी का जीवन और काव्य, सामी-जा-सलोक में से कुछ श्लोकों का वाचन एवं व्याख्या।

पंजाबी भक्ति काव्य (गुरु नानक देव, गुरु अर्जुन देव व गुरुतेग बहादुर)- पंजाबी भक्तिकाव्य : पृष्ठभूमि (दार्शनिक/सामाजिक), प्रमुख कवि, गुरु नानक देव : काव्य वाचन व काव्यगत विशेषताएँ, गुरु अर्जुन देव : काव्य वाचन व विशेषताएँ, गुरु तेगबहादुर : काव्य वाचन व काव्य की विशेषताएँ।

हिन्दी भक्ति साहित्य (भाग- 1)

सिद्ध एवं नाथ साहित्य- सिद्ध संप्रदाय : परिचय, सरहपाः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, सरहपा

के काव्य का प्रतिपाद्य, सरहपा के काव्य का वाचन; नाथ सम्प्रदाय : परिचय, गोरखनाथ : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, गोरखनाथ के काव्य का प्रतिपाद्य, गोरखनाथ के काव्य का वाचन।

ज्ञानाश्रयी काव्य एक (कबीर)- मध्यकालीन भक्ति काव्य, भक्ति के भेद, ज्ञानाश्रयी काव्य और कबीर का जीवन परिचय, रचनाएँ, दार्शनिक विचारधारा, भक्ति भावना, सन्दर्भ सहित व्याख्या।

ज्ञानाश्रयी काव्य दो (कबीर)- कबीर काव्य की अन्य विशेषताएँ, कबीर काव्य का सामाजिक पक्ष, काव्य-शिल्प, कबीर काव्य का मूल्यांकन, सन्दर्भ सहित व्याख्या।

ज्ञानाश्रयी काव्य (तीन) रैदास, दादूदयाल तथा सुंदरदास-पृष्ठभूमि, युगीन परिस्थितियाँ; रैदास, दादूदयाल एवं सुन्दरदास का परिचय, काव्यवाचन; रैदास, दादूदयाल तथा सुन्दरदास की वाणी में निरूपित समाज एवं संस्कृति।

प्रेमाश्रयी सूफी काव्य : जायसी, कुतबन, मंझन- प्रेमाश्रयी सूफी काव्यः पृष्ठभूमि-दार्शनिक/सामाजिक, प्रमुख कवि, जायसीः काव्य वाचन का काव्य विशेषताएँ, कुतबन : काव्य-वाचन व काव्य विशेषताएँ, मंझनः काव्य-वाचन व काव्य विशेषताएँ।

भारत में निर्गुण काव्य की परम्परा- भारत में निर्गुण काव्य की परम्पराः पृष्ठभूमि, भारत में निर्गुण काव्य परम्पराः परिचय एवं विशेषताएँ, प्रेममार्गी सूफी काव्य-परम्पराः विशेषताएँ।

हिन्दी भक्ति साहित्य (भाग- 2)

भारत में राम भक्ति साहित्य- भारत में राम भक्ति का उदय और विकास, राम भक्ति साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, दक्षिण भारत के विभिन्न क्षेत्रों में राम भक्ति का प्रसार, अन्य भारतीय भाषाओं में राम भक्ति साहित्य, हिन्दी का राम भक्ति साहित्य, राम भक्ति साहित्य और लोक जीवनः सामाजिक और सांस्कृतिक।

रामोपासक कविः तुलसीदास (एक) – तुलसीदास का जीवन परिचय और रचनाएँ, रामोपासक भक्ति काव्य की पृष्ठभूमि, तुलसी काव्य का सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष, तुलसी काव्य की दार्शनिक चेतना, तुलसी की भक्ति-भावना।

रामोपासक कवि : तुलसीदास – (दो) – तुलसी की मुक्तक एवं प्रबन्ध-रचनाएँ, 'मानस और तुलसी, तुलसी की भावुकताः मार्मिक प्रसंगों की योजना, तुलसी की भावुकताः मानस और व्यापकता के सन्दर्भ में, 'मानस' और तुलसी की चरित्र-चित्रण कला, 'मानस' और तुलसी की समन्वयवादी और सारसंग्रही दृष्टि, तुलसी-साहित्य में अभिव्यक्त समाज, तुलसी-काव्य में अभिव्यक्त संस्कृति, तुलसी काव्य का शिल्प पक्ष।

हिन्दी भक्ति साहित्य (भाग- 3)

भारत में कृष्ण भक्ति साहित्य – भारत में कृष्ण भक्ति का उदय और विकास, हिन्दीतर भाषाओं का कृष्ण भक्ति साहित्य, हिन्दी का कृष्ण भक्ति साहित्य, हिन्दी का सम्प्रदाय निरपेक्ष कृष्ण भक्ति साहित्य, हिन्दी कृष्ण भक्ति साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, हिन्दी कृष्ण भक्ति साहित्य और लोक जीवन, कृष्ण भक्ति साहित्य का अवदान।

कृष्णोपासक कवि सूरदास-। - सूरदास का परिचय, भक्ति काव्य में कृष्णोपासक भक्ति काव्य की पृष्ठभूमि, महाप्रभु वल्लभाचार्य, सूरदास के दार्शनिक सिद्धान्त, सूर की भक्ति-भावना।

कृष्णोपासक कवि सूरदास-॥ - वात्सल्य रस के कवि सूरदास, सूर का श्रृंगार वर्णन, सूर का वियोग श्रृंगार-वर्णन, संस्कृति और समाज, शिल्प पक्ष।

कृष्णोपासक कवि नंददास- जीवन वृत्त, रचनाएँ, नंददास का काव्यः अन्तर्वस्तु, नंददास का काव्य-रूप, सन्दर्भ सहित व्याख्या।

कृष्णोपासक कवयित्री मीरा- जीवन वृत्त, मीरा की रचनाएँ, मीरा काव्यः अन्तर्वस्तु, काव्य-रूप, सन्दर्भ सहित व्याख्या।

कृष्णोपासक कवि रसखान- रसखानः जीवन और साहित्य, काव्य-वाचन, रसखान की भक्ति-भावना, रसखान की सौन्दर्यानुभूति, रसखान का प्रेम-तत्व-निरूपण, रसखान का संदेश, रसखान की कवित्व-शक्ति, कृष्ण भक्ति काव्य धारा में रसखान का स्थान।

नोट :– UGHI-04 में व्याख्यात्मक प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे।

UGHI-05

आधुनिक भारतीय साहित्य : नवजागरण और राष्ट्रीय आन्दोलन

नवजागरण और राष्ट्रीय आन्दोलन

आधुनिक युग की भूमिका – आधुनिक युग का महत्व (सीमांकन, विशिष्टता, मूल संवेदना), आधुनिक युगः राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक सन्दर्भ; आधुनिक युग की मूल संवेदना, मूल्यांकन (आधुनिक युग का अवदान, आधुनिक युग के सन्दर्भ में भारतीय साहित्य की पहचान।

राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन का विकास-स्वाधीनता आन्दोलन की पृष्ठभूमि, स्वाधीनता आन्दोलन का विकास (पहला चरण 1857 से 1905 तक, दूसरा चरण 1905 से 1919 तक, तीसरा चरण, 1919 से 1947 तक), स्वाधीनता आन्दोलन का व्यापक परिप्रेक्ष्य (संस्कृति और समाज, आधुनिक भारतीय

साहित्य)।

नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना का विकास –भारतीय नवजागरण की पृष्ठभूमि, नवजागरण की अवधारणा (नवजागरण और पुनर्जागरण; नवजागरण, पुनरुत्थान और सामाजिक सुधार), यूरोपीय नवजागरण की विशेषता, भारतीय परिस्थितियों में नवजागरण की स्थिति (मध्ययुगीनता की समाप्ति, औपनिवेशिक पराधीनता और पूँजीवादी विकास, ब्रिटिश शासन और अंग्रेजी शिक्षा), विभिन्न धार्मिक-सामाजिक सुधार आन्दोलनों की भूमिका, राष्ट्रीय चेतना से अभिप्राय, नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना का अंतःसंबंध।

भारतीय साहित्य में नवजागरण एवं राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति-आधुनिक भारतीय साहित्य की पृष्ठभूमि, आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास, नवजागरण और राष्ट्रीय आन्दोलन की सामान्य विशेषताएँ, आधुनिक भारतीय साहित्य का उदय, पूर्वांचलीय साहित्य (बंगला, असमिया, उड़िया), पश्चिमांचलीय साहित्य (मराठी, गुजराती), दक्षिणांचलीय साहित्य (तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम), उत्तरांचलीय साहित्य (उर्दू, सिंधी, पंजाबी, कश्मीरी), हिन्दी का आधुनिक साहित्य, आधुनिक भारतीय साहित्य का ऐतिहासिक योगदान।

पूर्वांचलीय साहित्य

बांगला साहित्य-। बांगला भाषाः उद्‌भव और आधुनिक युग (प्राचीन और मध्ययुगीन बांगला : भाषा और लिपि, आधुनिक बांगला), बांगला साहित्यः आधुनिक युग (सत्रहवीं और अटठारहवीं सदी की प्रवृत्तियाँ, बांगला नाटक : नवजागरण, प्राक्- मधुसूदन कवि एवं गद्यकार), माइकेल मधुसूदन दत्त और नवजागरण, बंकिम चन्द्र : राष्ट्रीय चेतना (विविध साहित्यिक विधाओं में योगदान, सामाजिक अवदान), ईश्वरचन्द्र विद्या सागर : नवजागरण (साहित्यकार, वैयाकरण, समाज सुधारक), गिरीश चन्द्र घोष और द्विजेन्द्रलाल राय : नवजागरण।

बांगला साहित्य-।। - पृष्ठभूमि, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रवीन्द्र साहित्य (राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना), साहित्यिक विशेषताएँ, काव्य वाचन (भारत तीर्थ; प्रश्न 'संचयिता' के 'परिशेष' से; आत्मत्राण 'संचयिता' की 'गीतांजलि' से, निर्झरिर स्वप्न भंग), गद्य वाचन [हिमालय यात्रा (निबंध), काबुलिवाला (कहानी)]

बांगला साहित्य-।।। - शरतचन्द्र सामान्य परिचय (राजनीतिक, सामाजिक परिवेश), शरत् साहित्य की भूमिका (सामाजिक चेतना, ग्रामीण चेतना, धार्मिक चेतना, राजनीतिक चेतना), शरतचन्द्र के उपन्यास/कहानियाँ (महेश और अभागीर स्वर्ग, अभागीर स्वर्ग : विषय वस्तु, चरित्र चित्रण, उद्देश्य, भावार्थ), काजी नजरुल इस्लाम (राष्ट्रीय चेतना : समन्वय; विद्रोही कविताः वाचन, भावार्थ)।

असमिया साहित्य – आधुनिक असमिया साहित्य : युगीन पृष्ठभूमि, आधुनिक चेतना के

संवाहक : ईसाई मिशनरी, प्रेस की स्थापना : अरुणोदय पत्रिका, नवजागरण और असमिया साहित्य, छायावादी साहित्य : बेजबरुवा युग (असमिया भाषा उन्नति साधिनी सभा, राष्ट्रीय स्वाधीन चेतना और नवाजागरण, असमिया छायावादी काव्यों की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ), काव्य वाचन (रघुनाथ चौधरी, नलिनीबाला देवी)।

ओड़िया साहित्य – ओड़िया साहित्य की पृष्ठभूमि (भाषा, लिपि, साहित्य), आधुनिक उड़िया साहित्य : पृष्ठभूमि (राधानाथ राय युग, सत्यवादी युग, सबुज युग, प्रगति युग), उड़िया : पद्य, गद्य : नवजागरण (कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध), प्रमुख रचनाकार (फकीर मोहन सेनापति, राधानाथ राय, मधुसूदन राव, गोपबन्धु दास)।

दक्षिणांचल साहित्य-।

तमिल साहित्य-। पृष्ठभूमि (तमिल भाषा और साहित्य, सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियाँ), सुब्रह्मण्यम भारती, उनके साहित्य में राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण के तत्व, सुब्रह्मण्यम भारती की कविता।

तमिल साहित्य-॥ पृष्ठभूमि (तमिल गद्य का विकास, उपन्यास साहित्य का विकास, कहानी साहित्य का विकास), उपन्यासकार कल्कि (ऐतिहासिक उपन्यास, सामाजिक उपन्यास), कहानीकार पुदुमैपित्तन।

मलयालम साहित्य-। राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण– केरल के सन्दर्भ (मलयालम भाषा और साहित्य), कवि वल्लतोल, उनकी कविता के विभिन्न आयाम, काव्यवाचन (मेरे गुरुदेव-पाठ, भावार्थ, विश्लेषण)।

मलयालम साहित्य-॥ कवि कुमारनाशान, उनकी कविता के विभिन्न आयाम, काव्य वाचन (दुरवस्था-पाठ, भावार्थ, विश्लेषण), वैकम मुहम्मद बशीर, उनकी टाइगर कहानी का वाचन एवं विश्लेषण।

दक्षिणांचलीय साहित्य-॥

तेलुगु साहित्य-।- तेलुगु भाषा और लिपि, पृष्ठभूमि, तेलुगु साहित्य : प्रमुख साहित्यकार; काशीनाथुनि नागेश्वर राव पंतुलु (काव्य साहित्य, भाषा-शिल्प, गद्य, नाटक), वाचन : स्त्री शिक्षा (वीरेशलिंगम पतुलु), वाचन देशभक्ति (स्व0 गुरजाड़ अप्पाराव)।

तेलुगु साहित्य-॥- स्वतन्त्रता आन्दोलन में आंध्रों का योगदान, राष्ट्रीय आन्दोलन और तेलुगु साहित्य (तेलुगु कविताः आधुनिक प्रवृत्तियाँ), तेलुगु गद्य साहित्य का विकास (उपन्यास, कहानी, नाटक और एकांकी, आलोचना)।

कन्नड़ साहित्य –।- प्रस्तावना (युगीन परिस्थितियाँ, राष्ट्रीय चेतना गेय काव्य रूप में),

गाँधी युग और स्वाधीनता की चेतना, अन्य प्रसिद्ध कवियों का योगदान (कुवेंपु और नवजागरण), विभिन्न गद्य साहित्य और राष्ट्रीयता (अनुवाद और राष्ट्रीयता, रामस्थली)।

कन्नड़ साहित्य-॥ - राष्ट्रीय चेतना का विकास, गाँधी साहित्य : अन्य लेखक (प्रभू और राव), अन्य रचनाएँ, प्रमुख जीवनियाँ, नवजागरण का साहित्य (महिला साहित्यकार, नंजनगूड तिरूमलाम्बा), वाचनः तिरुमले राजम्मा 'भारती', कुछ प्रमुख लेखिकाएँ (कल्याणम्मा)।

पश्चिमांचलीय साहित्य

मराठी साहित्य-। - पृष्ठभूमि (मध्ययुगीनता की समाप्ति, ब्रिटिश शासन और अंग्रेजी शिक्षा), धार्मिक-सामाजिक सुधार आन्दोलन की भूमिका, प्रमुख सुधारक और उनका योगदान (लोकहितवादी-गोपालहरि देशमुख, महात्मा ज्योतिबा फुले, महादेव गोविन्द रानाडे, डॉ0 बाबा साहेब अम्बेडकर), नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना का अंतः संबंध।

मराठी साहित्य-॥ - मराठी साहित्य का उदय और विकास, आधुनिक मराठी साहित्य की पृष्ठभूमि, मराठी गद्य साहित्य (निबंध, उपन्यास, नाटक), मराठी पद्य साहित्य (केशवसुत), काव्य वाचन (भावार्थ, विश्लेषण, कविता का उद्देश्य)।

गुजराती साहित्य-।- गुजराती भाषा साहित्य की पृष्ठभूमि, आधुनिक गुजराती भाषा साहित्य का विकास (गद्य, पद्य) गुजराती भाषा साहित्य की प्रमुख प्रवृत्ति (नर्मद, बलवन्तराय क0 ठाकोर)।

गुजराती साहित्य-॥ - आधुनिक गुजराती साहित्य में गाँधी जी का प्रभाव (उपन्यास और कहानी, काव्य और नाटक, निबन्ध और आत्मकथा), आधुनिक गुजराती साहित्य में नवजागरण का विकासक्रम (रामनारायण वि0 पाठक 'द्विरेफ', झवेरचंद मेघाणी)।

उत्तरांचलीय साहित्य

कश्मीरी साहित्य – कश्मीरी साहित्य की पृष्ठभूमि, नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना (काव्य, गद्य), कश्मीरी साहित्य प्रमुख रचनाकार (गुलाम अहमद महजूर, अब्दुल अहद आज़ाद, दीनानाथ नादिम, प्रो0 मुहीउद्दीन हाजिमी, प्रेमनाथ परदेसी), कश्मीरी साहित्य : विकास, मूल्यांकन।

सिन्धी साहित्य-सिंधी साहित्य की पृष्ठभूमि, उद्‌भव एवं विकास (सरमस्त, सामी, राय; अंग्रेजी काल, अनुवाद साहित्य), सिन्धी साहित्य प्रमुख रचनाकार (कौडामल चंदनमल खिलनाणी, मिर्जा कालीच वेग, दयाराम गिदूमल, परमानंद मेवाराम)।

पंजाबी साहित्य- पंजाबी साहित्य की पृष्ठभूमि, परिस्थितियाँ (आधुनिक पंजाबी साहित्य),

पंजाबी साहित्य : प्रमुख रचनाकार (भाई वीर सिंह, धनीराम चात्रिक, प्रो0 पूरन सिंह, गुरबख्श सिंह, नानक सिंह, मोहन सिंह), पंजाबी साहित्य का मूल्यांकन।

उर्दू साहित्य-।- नवजागरण का उर्दू साहित्य, युगीन परिस्थितियाँ (साहित्यिक परिवेश, प्रमुख प्रवृत्तियाँ), प्रमुख साहित्यकार (मौलाना मोहम्मद हुसैन आजाद, मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली)।

उर्दू साहित्य-।।- पं0 रतननाथ सरशार, इकबाल, पं0 बृजनारायण चकबस्त।

हिन्दी साहित्य

युगीन पृष्ठभूमि – उन्नीसवीं सदी का भारत (राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक पृष्ठभूमि), नये युग का उदय, हिन्दी क्षेत्र की विशिष्ट परिस्थितियाँ, आधुनिक हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि, राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण का प्रभाव।

भारतेन्दु हरिशचन्द्र – जीवन परिचय, प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ (राष्ट्रीय, सामाजिक चेतना), नाटक 'अंधेर नगरी' (वाचन, कथासार, उददेश्य)।

मैथिलीशरण गुप्त- पृष्ठभूमि (राष्ट्रीय आन्दोलन, सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि), मैथिलीशरण गुप्त का परिचय (जीवनी साहित्य), कविताएँ (राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक चेतना, नारी चेतना, दलित चेतना) भारत भारती (वाचन, अर्थ, विश्लेषण)।

सियारामशरण गुप्त – जीवनी एवं रचनाएँ, प्रमुख प्रवृत्तियाँ (राष्ट्रीय, सामाजिक चेतना); पद्य, गद्य (काव्य, गीतिनाट्य, उपन्यास, कहानी, निबन्ध), उन्मुक्त (वाचन, अर्थ, विश्लेषण)।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' – पृष्ठभूमि, जीवनी एवं साहित्यिक रचनाएँ, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, 'प्रिय प्रवास' : वाचन, उद्देश्य।

रामनरेश त्रिपाठी- पृष्ठभूमि (राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिवेश), रामनरेश त्रिपाठी (जीवनी, रचनाएँ), प्रमुख काव्यगत प्रवृत्तियाँ (राष्ट्रीय, सामाजिक चेतना; नारी चेतना); पथिक, मिलन (वाचन, अर्थ)।

हिन्दी साहित्य

प्रेमचन्द – युग परिवेश, जीवनी और कृतित्व, रचना-संसार (उपन्यास, कहानी, अप्राप्य साहित्य, नाटक, जीवनी, लेख संग्रह, बाल साहित्य, चिट्ठी पत्री, अनुवाद), प्रेमचन्द साहित्य : नवजागरण का स्वरूप, 'जुलूस' कहानी (कथाकार, मूल्यांकन)', 'कर्मभूमि' उपन्यास (वाचन, कथासार मूल्यांकन)।

जयशंकर प्रसाद – पृष्ठभूमि, जीवनी व रचनाएँ, प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ (राष्ट्रीय, सामाजिक चेतना), 'चन्द्रगुप्त' : वाचन, कथासार, राष्ट्रीय चेतना, नारी चेतना।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' – निराला साहित्य की पृष्ठभूमि, निराला काव्य की अन्तर्वस्तु, रचना-विधान, गद्य रचनाएँ।

सुमित्रानन्दन पन्त-पन्त का जीवन –परिचय एवं काव्ययात्रा, काव्यगत विशेषताएँ, 'परिवर्तन': वाचन, भावार्थ, विश्लेषण।

महादेवी वर्मा- पृष्ठभूमि, जीवनी, साहित्य, महादेवी का गद्य साहित्यः विविध रूप (रेखाचित्र और संस्मरण, निबंध और आलोचना), महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य की विशेषताएँ, नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति।

हिन्दी साहित्य

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'- पृष्ठभूमि, जीवन-परिचय, रचनाएँ, प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ (राष्ट्रीय चेतना, नवजागरण)।

माखनलाल चतुर्वेदी- स्वतन्त्रता पूर्व हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना की पृष्ठभूमि, माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन-परिचय, पत्रकारिता और माखनलाल चतुर्वेदी, उनके काव्य का भाव पक्ष, रचना-शिल्प; मूल्यांकन, काव्यवाचन (पाठ), सन्दर्भ सहित व्याख्या।

रामधारी सिंह 'दिनकर' – पृष्ठभूमि, कवि परिचय व रचनाएँ, प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ (राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना), काव्य वाचन (रश्मिरथी, सामधेनी, हारे को हरिनाम)।

राष्ट्रीयता के विकास में आधुनिक भारतीय साहित्य का योगदान – आधुनिक भारतीय साहित्य और समाज का संबंध, भारतीय साहित्य की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक मनोभूमिका, भारतीय साहित्य के नवजागरणवादी बोध का स्थायी भावः राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय मुक्ति चेतना की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति (भारतीय भाषाओं में पत्रकारिता का उदय, नाटक, कथा साहित्य, कविता, गद्य : जीवनी, आत्मकथा, निबन्ध, आधुनिक भारतीय साहित्य में व्यक्त राष्ट्रीयता का स्वरूप।

UGHI-05 में व्याख्यात्मक प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे।

UGHI-06

हिन्दी भाषा : इतिहास और वर्तमान

भारत की भाषाएँ और हिन्दी

भाषा की परिभाषा – भाषा-संप्रेषण के रूप में, भाषा-सामाजिक व्यवहार के रूप में, भाषा-संरचना के रूप में।

भारतीय भाषाएँ और भारोपीय परिवार- विश्व की भाषाएँ तथा भाषा परिवार, भारोपीय परिवार, भारत-ईरानी शाखा, भारोपीय परिवार की विशेषताएँ।

भारतीय आर्य भाषाएँ- भारत के भाषा परिवार (द्रविड़, आस्ट्रिक, चीनी-तिब्बती), भारतीय आर्य भाषाएँ : एक विहंगम दृष्टि, भारतीय आर्य भाषाओं का वर्गीकरण (ग्रियर्सन, डॉ0 चटर्जी, तुलना), भारतीय आर्य भाषाओं का परिचय, विशेषताएँ।

हिन्दी भाषा – हिन्दी भाषा का विकास, हिन्दी भाषा का क्षेत्र, हिन्दी का साहित्य, हिन्दी भाषा का प्रसार, हिन्दी भाषा की भूमिकाएँ हिन्दी भाषा का स्वरूप, महत्व।

भारतीय भाषाओं की मूलभूत एकता-ध्वनि और उच्चारण के स्तर पर समानता, शब्द-स्तर पर समानता, वाक्य संरचना के स्तर पर समानता, भारत की भाषाओं में मूलभूत एकता का स्वर।

हिन्दी भाषा का इतिहास

संस्कृत भाषा- संस्कृत साहित्य (वैदिक, लौकिक), संस्कृत भाषा (लौकिक संस्कृत, वैदिक तथा लौकिक संस्कृत में अन्तर)।

पालि, प्राकृत और अपभ्रंश – मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, आर्य भाषाओं का विकास क्रम।

हिन्दी भाषा का विकास- आदिकाल, मध्यकाल; आधुनिक काल में हिन्दी (खड़ी बोली का विकास, 19वीं सदी के बाद खड़ी बोली का विकास), हिन्दी और उर्दू की समस्या, भारतेन्दु युग और हिन्दी, बीसवीं शताब्दी में हिन्दी।

हिन्दी भाषा के विविध रुप

हिन्दी भाषा की अवधारणा- हिन्दी भाषाः स्वरूप और भूमिकाएँ, हिन्दी भाषा का स्वरूप (विविध बोलियाँ, विविध क्षेत्रीय रुप; हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी का सवाल), हिन्दी भाषा की भूमिकाएँ (सम्पर्क भाषा, राजभाषा, प्रयोजनमूलक भाषा, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा।

हिन्दी का जनपदीय आधार – भाषा और बोली, हिन्दी का जनपदीय आधार, हिन्दी की उपभाषाएँ (राजस्थानी, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, बिहारी, पहाड़ी) पश्चिमी हिन्दी और पूर्वी हिन्दी में अन्तर (ध्वनि स्तर, व्याकरणिक स्तर), वर्गीकरण का पुनरावलोकन।

हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ – मारवाड़ी, ब्रज, खड़ी बोली, अवधी, भोजपुरी, मैथिली; बोलियों की सामान्य विशेषताएँ।

हिन्दी, उर्दू और हिन्दूस्तानी का सन्दर्भ - हिन्दी, उर्दू, हिन्दूस्तानी, हिन्दी बनाम उर्दू।

बोलचाल की भाषा और लिखित भाषा – बोलचाल की भाषा और लिखित भाषा की प्रकृति, कुछ सामान्य अंतर, विशेषताओं की तुलना, उच्चरित भाषा और लिखित भाषा का एक दूसरे पर प्रभाव, बोलचाल की भाषा का लिप्यंकन, लिखित भाषा में उच्चारणात्मक प्रभाव।

हिन्दी के प्रकार्य

हिन्दी के विविध प्रकार्य- भाषा के सामान्य प्रकार्य, भाषा के प्रयोजनमूलक प्रकार्य (राजभाषा हिन्दी, राष्ट्रभाषा हिन्दी), विकास की दिशाएँ विकास में समस्याएँ, अन्य प्रमुख कार्य।

हिन्दी का प्रयोजनमूलक स्वरूप – प्रयोजनमूलक भाषा से तात्पर्य, प्रयुक्ति की संकल्पना, प्रयुक्ति का आधार, हिन्दी की प्रयुक्तियाँ और प्रयोजनमूलक हिन्दी, प्रयोजनमूलक हिन्दी जानने की आवश्यकता, प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप (वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में हिन्दी, वैज्ञानिक और तकनीकी हिन्दी, कार्यालयी हिन्दी, विधि के क्षेत्र में हिन्दी, सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में हिन्दी, संचार माध्यमों में हिन्दी, विज्ञापन के क्षेत्र में हिन्दी), प्रयोजनमूलक हिन्दी और सामान्य हिन्दी में अन्तर, प्रयोजनमूलक हिन्दी और साहित्यिक हिन्दी में अन्तर।

सम्पर्क भाषा हिन्दी और हिन्दी का अखिल भारतीय स्वरूप- सम्पर्क भाषा से तात्पर्य, कौन-सी भाषा सम्पर्क भाषा हो सकती है?, हिन्दी सम्पर्क भाषा क्यों? सम्पर्क भाषा और राष्ट्रभाषाः हिन्दी का सन्दर्भ, संपर्क भाषा हिन्दी के विविध क्षेत्र, हिन्दी का अखिल भारतीय स्वरूप, सम्पर्क भाषा हिन्दी के सरलीकरण का प्रश्न, हिन्दी के कृत्रिम रूप से विकास का प्रश्न, सम्पर्क लिपि के रूप में देवनागरी, सम्पर्क भाषा हिन्दी के विकास में अनुवाद का महत्व।

हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ- विदेशों में हिन्दी भाषी, अन्य देशों में हिन्दी, विदेशों में हिन्दी का प्रयोजन पक्ष, विदेशों में हिन्दी शिक्षण की स्थिति विदेशों में हिन्दी भाषा का स्वरूप।

शिक्षा में हिन्दी

पाठ्यचर्या में भाषा – स्कूली शिक्षा में भाषा, त्रिभाषा सूत्र, भाषा के विविध नाम (नामों का भाषा वैज्ञानिक महत्व, शिक्षाशास्त्रीय महत्व), त्रिभाषा सूत्र का कार्यान्वयन, विभिन्न राज्यों में त्रिभाषा की स्थिति।

माध्यमिक शिक्षा में हिन्दी – त्रिभाषा सूत्र में हिन्दी शिक्षण, विभिन्न राज्यों में हिन्दी शिक्षण की स्थिति, विधि का सवाल (पाठ्य सामग्री का निर्माण, प्रशिक्षण)।

उच्च शिक्षा में हिन्दी – उच्च शिक्षा का स्वरूप, उच्च शिक्षा में भाषाः स्वरूप और संकल्पना, भाषा शिक्षा की प्रयोजनपरक दृष्टि, भाषा उन्मुख पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रमों का स्वरूप।

शिक्षा माध्यम के रूप में हिन्दी- शिक्षा माध्यम का महत्व, शिक्षा माध्यम का राष्ट्रीय सामाजिक जीवन से सम्बन्ध, हिन्दी शिक्षा का माध्यम क्यों? भारतीय हिन्दी शिक्षा व्यवस्था की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, स्वाधीन भारत की शिक्षा माध्यम संबंधी नीति, शिक्षा माध्यम निर्धारण और कार्यान्वयन, हिन्दी माध्यम की पाठ्य सामग्री

का निर्माण, हिन्दी माध्यम सामग्री निर्माण का भाषिक पक्ष, परीक्षा का माध्यम, मूल्यांकनः सीमाएँ और संभावनाएँ।

शैक्षिक सामग्री – भाषा शिक्षण सामग्री, भाषा शिक्षण सामग्री के प्रकार, उचित विधि का चयन, भाषा शिक्षण में दृश्य श्रव्य साधन, भाषा उन्मुख पाठ्यक्रम, सामग्री निर्माण के अभिकरण, अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, प्रशिक्षण व्यवस्था।

कार्यक्षेत्र में हिन्दी – कार्यक्षेत्र परिभाषा और क्षेत्र विस्तार सेवाएँ, भाषा सम्बन्धी अन्य क्षेत्र : संभावनाएँ, निजी क्षेत्र में भाषा, स्वीकृति का सवाल और उपाय।

संविधान में हिन्दी

संविधान में हिन्दी सम्बन्धी उपबन्ध- स्वतन्त्रता के समय भारत में भाषा का मसला, संविधान और हिन्दी, शासन के अंग और भाषा राजभाषा बनाम राष्ट्रभाषा, विशेष निर्देश।

संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार कार्रवाई- राजभाषा आयोग, संसदीय समित का गठन, राष्ट्रपति का आदेश, 1960; अधिनियम की ओर।

राजभाषा अधिनियम और आदेश – राजभाषा अधिनियम (राजभाषा अधिनियम 1963 का मूल रूप, उक्त अधिनियम का विवेचन), राजभाषा नियम (राजभाषा नियम 1976 का मूल रूप, उक्त नियम का विवेचन)।

राजभाषा के विकास के विविध आयाम- तीनों अंगों में भाषा (न्यायांग में राजभाषा, कार्यांग में राजभाषा), राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन, हिन्दी के प्रचार-प्रसार का कार्य।

विकास की दिशाएँ

आधुनिक सन्दर्भों के लिए हिन्दी भाषा का विकास – भाषा की नीति का सवाल, भाषा नियोजन, भाषा विकास, (प्रयोजन के क्षेत्र, विकास की दिशाएँ)।

हिन्दी का आधुनिकीकरण – भाषा का प्रयोजन विस्तार (राजभाषा, शिक्षा की भाषा, प्रसार का क्षेत्र) भाषा का कोड विस्तार (ध्वनि और लिपि में कोड विस्तार, शब्दावली, नई अभिव्यक्तियाँ, यांत्रिक सुविधाएँ), आधुनिकीकरण के आवश्यक कारक, आधुनिकीकरण की समस्याएँ।

मानक हिन्दी और मानकीकरण की समस्या – मानक भाषा और मानकीकरण, मानकीकरण का औचित्य, मानकीकरण का स्वरूप, मानकीकरण के उपाय और कार्यान्वयन, निदेशालय द्वारा मानकीकरण के सुझाव (देवनागरी वर्णमाला का मानकीकरण, हिन्दी की वर्तनी का मानकीकरण)।

हिन्दी भाषा में यांत्रिक साधन – यांत्रिकीकरण क्या है?, तार, मुद्रण (टंकण, व्यावसायिक मुद्रण, कक्ष मुद्रण), कम्प्यूटर और हिन्दी।

UGHI-07
हिन्दी संरचना

ध्वनि संरचना

हिन्दी की वर्णमाला और ध्वनि-वर्ण-सामंजस्य– हिन्दी की वर्णमाला (स्वर, व्यंजन, मात्रा चिह्न, अतिरिक्त चिह्न), वर्ण और ध्वनियाँ, ध्वनि और वर्ण का सामंजस्य, आगत ध्वनियाँ तथा उनके वर्ण, हिन्दी की ध्वनियाँ तथा लेखन व्यवस्था (मात्रा युक्त ध्वनियाँ, संयुक्त ध्वनियाँ, अनुस्वार, अ-लोप)।

हिन्दी के स्वर स्वनिम-स्वनिम की संकल्पना, स्वर और व्यंजन स्वन, हिन्दी के स्वर स्वनिम, हिन्दी-शब्दों में स्वर स्वनिमों के उच्चरित रूप।

हिन्दी के व्यंजन स्वनिम- व्यंजन स्वनों की प्रमुख उच्चारणात्मक, विशेषताएँ, (स्पर्शी, संघर्षी, स्पर्श-संघर्षी, अघोष एवं सघोष व्यंजन, अल्पप्राण एवं महाप्राण व्यंजन, नासिक्य एवं मौखिक व्यंजन) हिन्दी के व्यंजन स्वनिम, हिन्दी शब्दों में व्यंजनों के उच्चरित रूप (नासिक्य, मूर्धन्य, महाप्राण, संयुक्त व्यंजन; हिन्दी व्यंजन स्वनिमों के क्षेत्रीय रूप)।

हिन्दी के खंडेतर स्वनिम – खंडीय और खण्डेतर स्वनिम, अक्षर तथा आक्षरिक संरचना, हिन्दी के खण्डेतर स्वनिम (बालघात; सुर, तान, तथा अनुतान, दीर्घता, अनुनासिकता, संगम या संहिता), स्वनिमिक विश्लेषण की उपयोगिता।

रूप रचना

शब्द और रूप – शब्द की संकल्पना (शब्द के तात्पर्य, शब्द तथा पद, शब्द-रूप निर्माण तथा शब्द निर्माण, शब्द वर्ग); रूप, रूपिम संरूप; रूपिमों के भेद-प्रभेद, कुछ विशिष्ट रूपिम (शून्य रूपिम, सर्वादेशी रूपिम, रिक्त रूपिम)।

रूप रचना : रूप सिद्धि- संज्ञा शब्दों की रूप-सिद्धि (व्याकणिक कोटियाँ, बहुवचन रूप, परसर्ग का प्रभाव, रूप-स्वनिमिक परिवर्तन), सर्वनाम शब्दों की रूप सिद्धि (व्याकरणिक कोटियाँ, रूप-रचना, वैकल्पिक रूप, सर्वनामों में 'ही' अव्यय का प्रयोग), विशेषण शब्दों की रूप सिद्धि (संज्ञा-विशेषण अन्विति, विशेषण शब्दों की रूप-रचना), क्रिया शब्दों की रूप-सिद्धि (व्याकरणिक कोटियाँ, रूप-रचना, वैकल्पिक रूप)।

रूप रचना : व्युत्पादक प्रत्यय - रूप-रचना की संकल्पना, उपसर्ग, प्रत्यय, समास–तात्पर्य, वर्गीकरण, शब्द-निर्माण प्रक्रिया आदि।

संयुक्त शब्द तथा समस्त शब्द- संयुक्त शब्दों की संकल्पना, प्रमुख अभिलक्षण, आर्थी संरचना, संयुक्त शब्दों के प्रकार, समस्त वाद की संकल्पना, वर्गीकरण।

अन्य शब्द : ध्वन्यात्मक, अनुकरणात्मक, पुनरुक्त आदि-अन्य शब्द से तात्पर्य, उनका

वर्गीकरण, वर्णनात्मक : अन्य शब्द, अवधारणात्मक : अन्य शब्द (अनुकरणमूलक शब्द, रणन शब्द, पुनरुक्त या द्वित्व शब्द, विस्मयादिबोधक शब्द)।

वाक्य संरचना-।

हिन्दी में पदबंध संरचना – पदबंध का स्वरूप, संरचनात्मक वर्गीकरण, प्रकार्यात्मक वर्गीकरण (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया एवं क्रिया-विशेषण पदबन्ध)।

क्रिया पदबन्धः काल, पक्ष, वृत्ति, वाच्य – वाक्य के घटक (संज्ञा पदबन्ध और क्रिया पदबन्ध), व्याकरणिक कोटियाँ, क्रिया पदबन्ध और उसके घटक (मुख्य क्रिया, सहायक क्रिया), सहायक क्रिया से सम्बन्धित व्याकरणिक कोटियाँ।

वाक्य संरचना : सरल वाक्य- वाक्य का स्वरूप, पूर्णांग तथा अल्पांग वाक्य, वाक्य का अर्थगत वर्गीकरण (कथनात्मक, आज्ञार्थक, मनोवेगात्मक, नकारात्मक, प्रश्नात्मक वाक्य), वाक्य बनाम सरल वाक्य, सरल वाक्य के प्रकार।

संयुक्त वाक्य – संयुक्त वाक्य का स्वरूप (समुच्चय बोधक अव्यय), संयुक्त वाक्यों के प्रकार (संयोजक, विभाजक, विरोधवाची, परिणामवाची), संयुक्त वाक्य की रचना-प्रक्रिया, संयुक्त वाक्य रचना के कुछ नियम।

वाक्य संरचना-।।

मिश्र वाक्य-1 – मिश्र वाक्य की संरचना, मिश्र वाक्य के प्रकार संज्ञा उपवाक्य, (संरचना, संज्ञा उपवाक्य के प्रकार्य, संज्ञा उपवाक्य का संज्ञा पद में रूपान्तरण, क्रिया रूपों पर प्रतिबन्ध)।

मिश्र वाक्य-2 – विशेषण उपवाक्य – विशेषण उपवाक्य की संरचन, संबंधवाचक सर्वनाम, 'जो' । विशेषण उपवाक्य के प्रकार – क्रिया विशेषण उपवाक्य - संरचना और प्रकार।

हिन्दी वाक्य संरचना : कुछ विशिष्ट समस्याएँ – वाक्य संरचना संबंधी कुछ समस्या क्षेत्र (सामान्य भूतकाल और 'ने' प्रयोग, भूतकाल के क्रिया रूपों की रूपरचना; क्रिया के अकर्मक, सकर्मक और द्विकर्मक भेद, अकर्मक क्रिया और भूतकाल की रचना, सकर्मक क्रिया और भूतकाल की रचना), हिन्दी की प्रेरणार्थक क्रियाएँ (रूप रचना,वाक्य संरचना, द्विकार्यात्मक क्रियाएँ), हिन्दी में वाच्य संरचना, हिन्दी के वाक्यों में अन्विति।

प्रोक्ति स्तर – प्रोक्ति की संकल्पना, संलाप की संकल्पना, संलाप के प्रकार, एकालाप की संकल्पना, एकालाप के प्रकार।

शब्द और अर्थ

हिन्दी की शब्दावली : स्त्रोतगत अध्ययन – तत्सम, तद्भव, अर्धतत्सम, देशज, विदेशी,

संकर शब्द; हिन्दी में नव-निर्मित शब्द।

हिन्दी की शब्दावली: अर्थगत अध्ययन – वाचक, लक्षक एवं व्यंजक शब्द और उनके अर्थ, शब्द की अर्थबोधक क्षमता, शब्दों के प्रकार : अर्थ के आधार पर (एकार्थी, अनेकार्थी, समानार्थी, विपरीतार्थक)।

शब्द-निर्माण तथा परिभाषिक शब्दावली – शब्द से तात्पर्य, शब्द रचना, (शब्दों के वर्ग; धातु, उपसर्ग और प्रत्यय, समास, संधि), नए शब्दों का निर्माण, पारिभाषिक शब्द से तात्पर्य, पारिभाषिक शब्द के अभिलक्षण, हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं से पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की आवश्यकता, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण में योगदान देने वाले विद्वान तथा संस्थाएँ, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धान्त, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया (अंगीकरण, अनुकूलन, नवनिर्माण, अनुवाद), पारिभाषिक शब्दावली की जटिलता का प्रश्न, भाषा की प्रवृत्ति के अनुरूप पारिभाषिक शब्दावली का विकास।

मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ – 'मुहावरा' शब्द से तात्पर्य, प्रमुख अभिलक्षण, मुहावरों के प्रकार, हिन्दी मुहावरों के स्रोत, 'लोकोक्ति' शब्द से तात्पर्य, प्रमुख अभिलक्षण, लोकोक्तियों के प्रकार, हिन्दी लोकोक्तियों के स्रोत, मुहावरे और लोकोक्तियों में अंतर।

हिन्दी का सामाजिक सन्दर्भ

भाषा का सामाजिक सन्दर्भ- भाषा और समाज का सह-संबंध, सामाजिक स्तर भेद और भाषिक विविधता, औपचारिक-अनौपचारिक भाषा प्रयोग, शिष्टाचार एवं विनम्रता का सामाजिक संदर्भ।

रिश्ते-नाते की शब्दावली – परिवार और समाज की संकल्पना, हिन्दी की रिश्ते-नाते की शब्दावली, हिन्दी की रिश्ते-नाते की शब्दावली की सांस्कृतिक संरचना, रिश्ते-नाते के शब्दों का संबोधन रूप में प्रयोग।

सर्वनाम और संबोधन रूप- सर्वनाम : संरचना और प्रयोग, हिन्दी सर्वनामों का सामाजिक सन्दर्भ, सामाजिक आचरण और सर्वनाम प्रयोग, संबोधन शब्दावली : संरचना और प्रयोग, सम्बोधन शब्दावली का सामाजिक सन्दर्भ, सामाजिक आचरण और सम्बोधन प्रयोग।

कोड मिश्रण एवं कोड परिवर्तन – कोड मिश्रण, कोड परिवर्तन, दोनों मे अन्तर।

हिन्दी भाषा की शैलियाँ – शैली, समाज और भाषा (शैलियों के प्रकार), प्रमुख शैली भेद और हिन्दी भाषा (क्षेत्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक शैली), हिन्दी की साहित्यिक शैलियाँ (हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी), हिन्दी की प्रयोजनमूलक शैलियाँ।

लिपि और वर्तनी

लिपि का विकास और देवनागरी लिपि- भाषा और लिपि का संबंध, लिपि का उद्‌भव और विकास, भारतीय लिपियों का ऐतिहासिक विकास (सैंधव, ब्राह्मी, खरोष्ठी लिपि), ब्राह्मी लिपि से विकसित भारतीय लिपियाँ, देवनागरी लिपि (उद्‌भव एवं विकास)।

देवनागरी लिपि और उसकी विशेषताएँ – देवनागरी का नामकरण वैज्ञानिक लिपि और देवनागरी, देवनागरी लिपि : गुण-दोष, भारतीय संविधान में देवनागरी की स्थिति, देवनागरी लिपि में सुधार, देवनागरी लिपि की सार्थकता।

देवनागरी का मानकीकरण : अन्य भाषाओं के लिए लिपि-चिह्न- देवनागरी-लिपि का मानकीकरण (मानकीकरण से तात्पर्य, मानकीकरण की आवश्यकता), वर्णों का मानकीकरण, परिवर्धित देवनागरी।

हिन्दी वर्तनी की समस्याएँ- हिन्दी वर्तनी का मूल आधार (उच्चारण), लेखन-वाचन के नियम, वर्तनी सम्बन्धी भूलों के सामान्य कारण।

UGHI-08

हिन्दी में आधार पाठ्यक्रम

UGHI-08 (प्रथम खण्ड)

भाषा तत्व और बोधन

हिन्दी की लिपि और वर्तनी का परिचय – भाषा और लिपि, देवनागरी लिपि, वर्तनी के कुछ नियम।

हिन्दी की ध्वनियाँ – ध्वनियाँ और शब्द, ध्वनियाँ और उच्चारण की विशेषताएँ, लहजा या अनुतान, ध्वनि और लेखन के विविध सम्बन्ध, उच्चारण, भिन्नता भिन्नता के कारण वर्तनी की समस्याएँ, उच्चारण में अन्तर, लिपि में अन्तर, ध्वनि और लिपि में असामंजस्य।

विज्ञान के विषय का बोधन – मानव की उत्पत्ति और विकास, भाषा की सरल अभिव्यक्ति, उर्दू के शब्द, व्याकरणिक विवेचन (संभावनार्थक वाक्य, संदेहार्थक वाक्य)।

संस्कृति विषय का बोधन और शब्दकोश का उपयोग – भारत के त्योहार, शब्दकोश का उपयोग।

समाज विज्ञान विषो का बोधन और निबन्धन रचना का परिचय- परिवार, निबन्धन रचना, व्याकरणिक विवेचन (प्रत्यय 'त्व' 'ता', 'य', 'इक', 'करण'।

भाषण शैली – भाषण का उदाहरण, उसकी शैलीगत विशेषताएँ, संबोधन कारक।

वाचन और विविध विषय

सामाजिक विज्ञानों की भाषा (इतिहास के सन्दर्भ में) तथा वर्तनी के कुछ नियम – पृष्ठभूमि, (ईस्ट इंडिया कम्पनी, अंतिम मुगल बादशाह, राजनीति पर अंग्रेजी का अधिकार एवं शोषण नीति, 1857 की क्रान्ति, सांस्कृतिक जागरण), कांग्रेस की स्थापना, गाँधी जी का आगमन, भारत छोड़ो आन्दोलन, वर्तनी सम्बन्धी कुछ नियम (प्रत्ययों से शब्द-रचना वर्तनी के दो रूप (जैसे-नये,नए), पाठ में प्रयुक्त शब्द शब्दों की वर्तनी की विशेषताएँ), शब्दावली।

सामाजिक विज्ञानों की भाषा (राजनीति विज्ञान) तथा शब्द रचना- रचना लोकतन्त्र (राजनीतिक, आर्थिक समानता, धर्म निरपेक्षता), परिभाषिक शब्दावली का प्रयोग, व्याकरणिक विवेचन ('वि' उपसर्ग, विलोम शब्द, उपसर्ग लगाकर विलोम शब्द बनाना, संधि, समास)।

मानविकी की भाषा (ललित कला) तथा विशेषण – भारत की ललित कलाएँ, व्याकरणिक विवेचन (विशेषण (विशेषण को संज्ञा में बदलना, प्रविशेषण), वाक्य-रचना)।

विज्ञान की भाषा तथा परिभाषिक शब्द – पैट्रोलियम, (पृथ्वी का जन्म, प्रथम जीवों का सृष्टि, चट्टानोंम के भेद, पैट्रोलियम के मूल स्रोत, निस्यंदन तेल, तेलकुण्डों की खोज, तेलकूपों का खनन, तेल का शोधन, भारतीय स्थिति), पारिभाषिक शब्द।

विज्ञान की भाषा का स्वरूप – मानव प्रगति और पर्यावरण, पारिभाषिक शब्द, भाषिक विवेचन।

विधि एवं प्रशासन की भाषा तथा पारिभाषिक शब्द और अर्थ - राजभाषा हिन्दी, हिन्दी का सांविधानिक स्थिति, संविधान की व्यवस्था के आधार पर की गई कार्रवाई, राजभाषा अधिनियम (यथा संशोधित) 1967, राजभाषा नियम 1976, भाषा विवेचन (राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा, राजभाषा हिन्दी का स्वरूप), शब्दावली, भाषिक विवेचन।

साहित्य का आस्वादन

कहानी : पूस की रात – कहानी का सार, सन्दर्भ सहित व्याख्या, कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, परिवेश, संरचना शिल्प, प्रतिपाद्य।

उपन्यास : मानस का हंस (अमृत लाल नागर) – कथासार, कथावस्तु चरित्र-चित्रण, परिवेश, संरचना शिल्प, प्रतिपाद्य।

नाटक : चन्द्रगुप्त (जयशंकर प्रसाद) – कथासार, कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, परिवेश, संरचना शिल्प, प्रतिपाद्य।

निबन्ध : क्रोध (रामचन्द्र शुक्ल) – निबन्ध का सार, अंतर्वस्तु (विचारपक्ष, भावपक्ष), लेखकीय व्यक्तितत्व की अभिव्यक्ति संरचना शिल्प (शैली, भाषा) प्रतिपाद्य।

आत्मकथा : गाँधी की आत्मकथा – अंतर्वस्तु, चरित्र, विश्लेषण, परिवेश, संरचना शिल्प, प्रतिपाद्य।

कविताएँ – सूरदास – काव्यवाचन (बालवर्णन, विनय और वियोग – भ्रमरगीत), भावपक्ष, संरचना शिल्प, प्रतिपाद्य, सन्दर्भ सहित व्याख्या (शोभित कर नवनीत, चरन कमल बन्दौ हरि राई, निरगुन कौन देस को बासी)।

तुलसीदास – काव्य वाचन (रामचरित मानस, विनय पत्रिका, गीतावली), भावपक्ष, संरचना शिल्प, प्रतिपाद्य, सन्दर्भ सहित व्याख्या (मनि मानिक मुकुता छवि जैसी, कबहुँक हौं यहि रहनि रहौगो, मेरी सब पुरुषारथ थाको)।

मैथिलीशरण गुप्त- काव्यवाचन (महाकाव्य साकेत), भावपक्ष, संरचना, शिल्प, प्रतिपाद्य, सन्दर्भ सहित व्याख्या (सखि, पतंग भी जलता है हा! दीपक भी जलता है।; सखि, नील नभस्सर में उतरा)।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' – काव्य वाचन, भाव पक्ष, संरचना शिल्प, प्रतिपाद्य, संदर्भ सहित व्याख्या (तोड़ती पत्थर)।

महादेवी वर्मा - काव्य वाचन, (गीत), भावपक्ष, संरचना शिल्प, प्रतिपाद्य, संदर्भ सहित व्याख्या (मैं नील भरी दुख की बदली),

व्यावहारिक हिन्दी और लेखन

शब्द और मुहावरे – शब्दों का महत्व, भाषा के सामाजिक स्तर भेद, शब्दों के विभिन्न स्रोत (तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी शब्द), शब्दों का अर्थ पक्ष (समरूपी शब्द, पर्याय विलोम, अनेकार्थी, सहप्रयोग), शब्द निर्माण शब्द रचना (मूल शब्द, व्युत्पन्न शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, भाववाचक प्रत्यय, लघुतासूचक प्रत्यय, लिंग सूचक प्रत्यय, समास, पुनरुक्त शब्द, प्रतिबिंबित शब्द, अनुकरणात्मक शब्द) मुहावरे और लोकोक्तियाँ (अर्थ और वाक्य-प्रयोग)।

संवाद शैली – वाक्य वार्तालाप की विशेषताएँ वाक्य (वाक्य में पदक्रम, अनुतान, सम्प्रेषण का उद्देश्य वाक्य से ऊपर का स्तर (प्रोक्ति), विराम चिह्नों का प्रयोग) वार्तालाप – एक उदाहरण, उदाहरण पर चर्चा (अनुतान, बलाघात कोड मिक्सिंग; प्रान्तीय विशेषताएँ, हिन्दी शैली, उर्दू शैली, मिलीजुली शैली)।

सरकारी पत्राचार तथा टिप्पण और प्रारूपण – पत्र-लेखन के प्रकार (अनौपचारिक (व्यक्तिगत) पत्र, औपचारिक पत्र) सरकारी पत्राचार की प्रक्रिया (टिप्पण, प्रारूपण) सरकारी पत्राचार के विभिन्न प्रकार व उनके नमूने (सरकारी पत्र, अर्ध सरकारी पत्र; कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय आदेश, आदेश,

पृष्ठांकन, अधिसूचना, संकल्प, प्रेस विज्ञप्ति, प्रेस नेट, अंतर्विभागीय टिप्पणी, तार, टेलेक्स संदेश, तुरन्त पत्र, सेविंग्राम, परिपत्र), शब्दावली।

समाचार लेखन और सम्पादकीय – समाचार क्या है? समाचार लेखन और संपादन, समाचार की भाषा, सम्पादकीय लेखन।

अनुवाद – 'अनुवाद' शब्द का अर्थ और व्याख्या, अनुवाद की प्रक्रिया (अर्थग्रहण, संप्रेषण), अनुवाद करने का व्यावहारिक ज्ञान।

संक्षेपण, भाव-पल्लवन और निबन्ध – लेखन – महत्व, स्वरूप, प्रक्रिया।